ज्ञानामृत

स्मृति दिवस विशेषांक

जनवरी, 1982
वर्ष 17 ❋ अंक 7

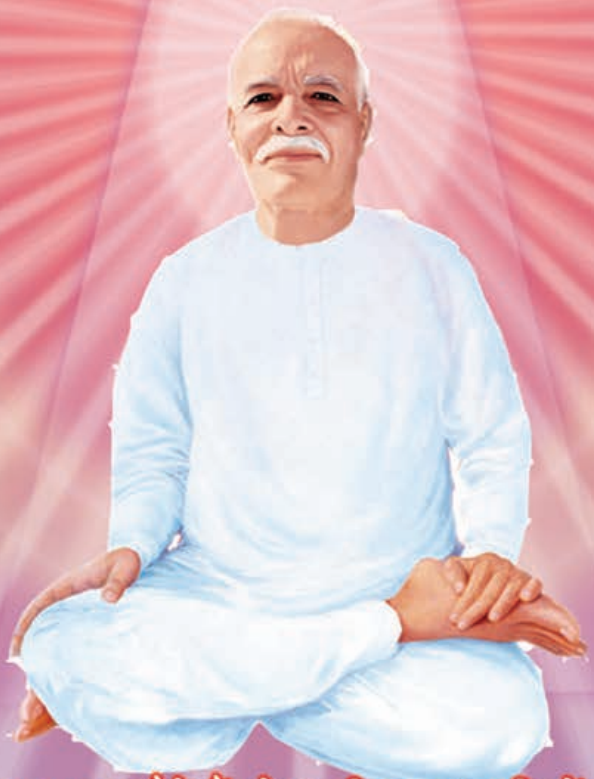

ब्रह्मा बाबा बैठे हैं योग की मधुर स्मृति में
सबसे ऊपर हैं – ज्योति स्वरूप परमपिता शिव

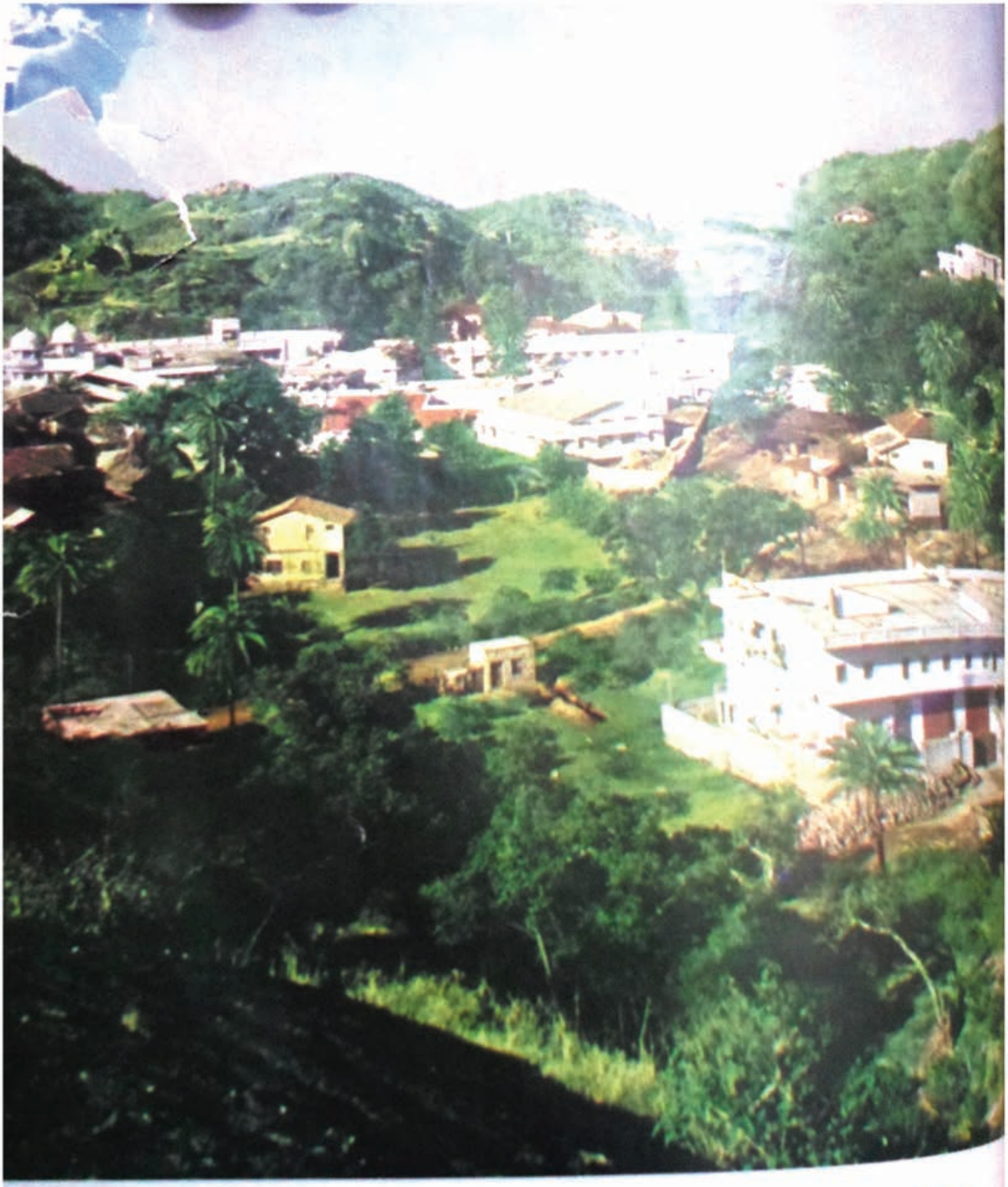

यह है पाण्डव भवन, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, माउन्ट आबू
का मुख्यालय

यह है वह पवित्र कुटिया जहां बाबा रूहानी बच्चों की उन्नति के लिए मार्ग प्रदर्शन देते
और उन को प्रेरणादायक पत्र लिखते

PEACE

वर्ष १७ अंक ७ जनवरी १९८२ मूल्य २.५०

——अमृत-सूची——

१. अद्भुत पिताश्री (सम्पादकीय) ... २
२. आदि-देव ब्रह्मा बाबा ... ६
३. प्रजापिता ब्रह्मा ... ९
४. गीत ... १४
५. जो पाना था सो पा लिया अब बाकी क्या रहा ? ... १५
६. पिताश्री निद्राजीत थे ... १७
७. तेरे बिनु बाप-दाता, लागे न जिया ... १८
८. भोला नाथ के भण्डारे की 'भोली भण्डारी' का अलौकिक अनुभव ... १९
९. पिताश्री—एक अलौकिक चुम्बकीय व्यक्तित्व ... २२
१०. नई उमंगें लेकर आया है नव वर्ष ... २३
११. बात दादा ने हमको बताई (कविता) ... २४
१२. शिव बाबा ! ब्रह्मा बाबा ! (कविता) ... २५
१३. पिताश्री जी से सीखी कई अनुभव की बातें ... २६
१४. आध्यात्मिक सेवा समाचार(चित्रों में) ... २९
१५. शिव परमात्मा द्वारा ब्रह्मा श्रीमुख से शाश्वत सत्यों का पुनः उद्घाटन ... ३३
१६. प्रजापिता ब्रह्मा: परपितामह ... ३६
१७. मौन और एकान्त का रहस्य ... ४०
१८. ब्रह्मा की जीवन कहानी (कविता) ... ४२
१९. आते हैं मुझको याद वे सुहावने दिन ... ४५
२०. नैतिकता और नैतिक पतन ... ४७
२१. शास्त्रवादिता और ब्रह्मचर्य ... ५०
२२. नये वर्ष प्रति बाप-दादा की शिक्षाएं ... ५३
२३. आध्यात्मिक सेवा समाचार ... ५६

दादीजी—दीदीजी का सन्देश

पिता श्री जी के द्वारा यह बात प्रत्यक्ष अनुभव हुई कि परमात्मा ही सत्य हैं (गाड इज ट्रुथ)। उनके जीवन व धारणाओं से सदा यह प्रेरणा मिली कि परमात्मा ही सत्य ज्ञान सुनाते हैं जिस ज्ञान में वह शक्ति है जो हम आत्माओं को भी सत्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा व बल देता है। परमपिता परमात्मा ही सत्य ज्ञान की शक्ति से सच्च खण्ड स्थापन करते हैं। उनकी श्रीमत से ही नर श्री नारायण बनता है और नारी श्री लक्ष्मी पद प्राप्त करती है। पिताश्री जी के हर कर्म से हमें अपने जीवन के लिए सत्यता और पवित्रता का वरदान मिला और सदा बेहद बाप के साथ सच्चाई और सफाई से चलने की प्रेरणा मिलती रही। ब्रह्मा बाबा सच्चाई और सफाई के प्रतीक थे। उनका यह स्मृति दिवस यही सन्देश देता है—"बहुत गई थोड़ी रही"—अब सच्चे दिल से सत्य बाप की श्रीमत पर चलो; निरन्तर सत्य बाप को याद कर स्वयं में सत्यता, पवित्रता व पावनता का गुण धारण कर हर संकल्प, बोल व कर्म में वह समर्थी भरो जो भविष्य सतयुगी सचखण्ड में सत्य श्रीनारायण पद प्राप्त करो।

ओम शान्ति

अद्भुत पिता-श्री

अठारह जनवरी का दिन हमारे मन में कई प्रकार की संस्मृतियाँ उभार देता है और कई प्रकार की भाव तरंगें पैदा करता है। इस दिन के निकट आने पर ब्रह्मा बाबा के साकार जीवन रूपी गुण-सागर का जब हम मंथन करते हैं तो हमें नये-नये हीरे और रत्न प्राप्त होते हैं। बाबा के जीवन-वृत्त की रील जब मन के सामने से गुज़रती है तब किसी दृश्य को देखकर मन हर्ष में हिलोरें लेने लगता है, तो किसी दूसरे दृश्य से ऐसा प्रेम-प्लावित हो उठता है कि नैन भीग जाते हैं। बाबा के जीवन में अनेकानेक विशेषताओं और महानताओं को देख कर मुख से स्वतः ही यह शब्द विनिसृत होते हैं—'वाह, प्यारे बाबा, वाह!'

शिव बाबा से ऐसी घनिष्ठता का आधार

परन्तु सोचने की बात है कि बाबा के जीवन में वह कौन-सी अद्भुत महानता थी कि उन्हें शिव बाबा का ऐसा निकट्य प्राप्त हुआ? जब वे साकार रूप में थे तब भी शिव बाबा उनके तन रूपी कुटिया में उनके संग रहते रहे और जब से वे अव्यक्त हुए हैं तबसे भी वे प्रकाशपुरी में उनके संग रहते हैं। शिव बाबा से ऐसी घनिष्टता प्राप्त कराने वाली भी तो विशेषताएँ ब्रह्मा बाबा में रही होंगी। शिव बाबा ने उन्हें ऐसा अपना लिया, उनसे ऐसी मित्रता जोड़ ली, ऐसा नाता बना लिया कि दोनों सदा अंग संग ही रहते रहे और अब भी एक-साथ ही हैं। जिस परमपिता की एक झलक के लिए भी द्वापर युग के भक्तिकाल में भक्तराज तरसते थे अथवा जिससे मानसिक रूप से सम्पर्क मात्र स्थापित करने के लिए विविध प्रकार के 'योगी' एकाग्रता का घोर अभ्यास करते रहे, उस शिव बाबा ने ब्रह्मा बाबा को ऐसा तो अपना लिया कि हम लगभग आधी शताब्दी से दोनों का अटूट और घुला-मिला सम्बन्ध देखते हैं। प्रभु-प्रेम के कई आकांक्षी तो मुक्ति प्राप्त करने के बाद आत्मा के परमात्मा में लीन होने की असम्भव बात कहते आये परन्तु साकार में भी प्रभु की ऐसी मैत्री, ऐसा पारस-संग, ऐसी निकटता और अव्यक्त होने पर भी ऐसा मेल-मिलन तो किसी ने सोचा ही नहीं होगा। अतः विचार करने की बात है कि बाबा के जीवन की अनेक अनमोल विशेषताओं में से ऐसी कौन-सी विशेषता थी जिससे उन्हें यह परम सौभाग्य प्राप्त हुआ।

इसका उत्तर पाना कठिन नहीं है क्योंकि बाबा की वह विशेषता प्रत्यक्ष ही थी। वह यह कि **बाबा के मन का अटूट नाता एक शिव बाबा ही से था। बाबा को और किसी चीज की चाह थी ही नहीं। न उन्हें मान की इच्छा थी न शान की, न धन की न सत्ता की, न गुरुडम की न भभके की। वे तो सदा शिव बाबा ही के गुण गाते थे।** उन्होंने बम्बई के हैंगिंग गार्डन के बूट को देख कर यहाँ तक जो कह दिया कि यह तन तो शिव बाबा का 'लांग बूट' (Long Boot) है, "यह शिव बाबा की कुटिया है सो भी ऐसी कि मुरम्मत माँगती रहती है!" उन्होंने अपने सभी नाते शिव बाबा से जोड़े हुए थे। उनके प्रारम्भिक वाक्यों में से एक यह था कि—"पाना था जो पा लिया और क्या बाकी रहा?" उनके पास पहले जो भी सम्पत्ति थी वह सब भी उन्होंने शिव बाबा को सर्मपित कर दी थी। उन्होंने उसके बाद एक पैसा भी अपना नहीं समझा। कई वर्षों तक वे अपने पत्रों के अन्त में भी हस्ताक्षर से पहले लिखते थे—'आज आकिंचन कल विश्व-महाराजन (Beggar to Prince)'। वे भोजन

करते तो भी शिव बाबा की याद में अथवा शिव बाबा के साथ ही। मधुबन में तब प्रायः नित्य प्रति ही भोग लगा करता। ब्रह्मा बाबा कहते कि शिव बाबा के साथ मनाने के यही तो दिन हैं। जब वे शिव बाबा से मनोमिलन और सूक्ष्म वार्तालाप की बात समझाते, तब शिव बाबा के प्यार में उनके हाव-भाव देखने योग्य होते। उनके अपने व्यक्तित्व या व्यवहार से यदि कोई प्रभावित होता और महिमा करता तो भी वे यही कहते कि 'महिमा एक शिव बाबा ही की करो जिसने हम सभी को उच्च बनाया है; हम तो कुछ भी जानते नहीं थे।' शिव बाबा के बनाये हुए जो भी नियम थे और जो भी निर्देश थे, उनमें से किसी एक की भी, रंच मात्र भी अवहेलना नहीं की। उनकी बातचीत से तथा दिन-चर्या से, बस, यही महसूस होता कि जैसे भक्तिमार्ग में वे श्रीनारायण के चित्र को सदा अपने साथ रखते थे, अब परमपिता शिव का परिचय होने पर वे अपार प्रेम से शिव बाबा को ही अपना सर्वस्व मान कर उनको अपने साथ ही रखते हैं। गोया उनकी अटूट प्रीति थी। जो ज्ञान यज्ञ उन्होंने स्थापित किया उसमें उनके लौकिक, नज़दीकी सम्बन्धी भी थे परन्तु अब बाबा के सभी घनिष्ठ सम्बन्ध प्रथमतः शिव बाबा ही से थे; अन्य सभी को वे शिव बाबा के वत्स समझ कर संभालते थे। वे कहा भी करते कि जब प्राण तन से निकले तो केवल एक शिव बाबा ही की याद हो और उससे पहले, जीवन काल में, उन्हीं के संग खायें, उन्हीं के संग बैठें, उन्हीं के साथ ही हमारे सभी नाते हों। यही उनकी ऐसी प्रीति थी जिस कारण से उन्हें शिव बाबा के इतने निकट होने का परम सौभाग्य प्राप्त कराया।

पिता-तुल्य संरक्षण, स्नेह और सहायता देने में निपुण

शिव बाबा से ऐसी घनिष्ठता के कारण उनमें उत्तम गुण थे। एक मानवी आत्मा होते हुए भी वे अन्य सभी मनुष्यों से भिन्न थे। उनमें पिता-पन का प्रेम था। जैसे पिता अपने सभी बच्चों को अच्छा पद प्राप्त करते देख हर्षित होता है, वैसा ही हर्ष उन्हें होता था। संसार में हम देखते हैं कि यदि किसी व्यक्ति के बच्चे जीवन में उच्च स्थान प्राप्त कर लेते हैं तो वह सभी से यह कहते हुए खुश होता है कि उसका एक बच्चा डाक्टर है, दूसरा प्रोफ़ेसर है और तीसरा इंजीनियर। बच्चों में से तो कोई ऐसा भी होता है जो दूसरे भाई को अधिक पैत्रिक सम्पत्ति मिलते देख कर ईर्षा भी करता हो या सांसारिक दृष्टि से कम सम्पन्न होने पर अपने दूसरे भाइयों से द्वेष भाव रखता हो। परन्तु एक योग्य पिता की तो सदा यही इच्छा बनी रहती है कि उसके सभी बच्चे सुयोग्य हों और सदा सुखी हों। ऐसी ही भावना बाबा की अन्य सभी मानवी आत्माओं के प्रति रहती थी। वे सदा यही कहते कि "अमुक वत्स विवाहित होने पर भी पवित्र है, अतः वह संन्यासियों से भी आगे है; अमुक बच्चा ऐसी उच्च और इतनी अधिक ईश्वरीय सेवा करता है कि वह बाबा का दिल-तख़्त-नशीन है; अमुक इतना चरित्रवान है और गुणवान है कि बाबा भी उसकी महिमा करते हैं।" वह वत्सों की महिमा करते हुए यह भी कह देते कि "ये बाबा से भी अधिक सेवा करते हैं अथवा यह अन्य आत्माओं को ज्ञान समझाने में बाबा से भी अधिक होशियार हैं।" इस प्रकार, दूसरी आत्माओं को तीव्र पुरुषार्थ करते देखकर अथवा जीवन में सफल होते देख कर वे खुश ही होते थे।

फिर जैसे पिता अपने बच्चों का संरक्षक भी होता है, वे भी वैसे ही स्नेह एवं संरक्षणपूर्वक व्यवहार करते। वे प्रायः वत्सों को पत्र लिख कर उनको हर्ष, उल्लास, उत्साह और उमंग बढ़ाते रहते और उन्हें मार्ग-प्रदर्शना देकर माया के कण्टकों से उनका संरक्षण करते। यदि किसी का कई दिन तक पत्र न आता तो वे उसे विशेष रूप से स्नेह-युक्त शब्दों में लिखते कि—"बच्चे, पत्र न आने से 'बाप'

को बच्चों की अवस्था के बारे में ख्याल चलता है; अतः जल्दी-जल्दी पत्र लिखा करो।" कितने ही लोग ऐसे हैं जो पहले अपने लौकिक सम्बन्ध तथा व्यापार में भी शायद ही कभी किसी को पत्र लिखते होंगे परन्तु अब बाबा के पत्र जब सेवा-केन्द्र पर आते और उनमें इनके लिये भी याद, प्यार, सन्देश और निर्देश होते तो अब वे भी बाबा को स्नेह से पत्र लिखते। एक सांसारिक मनुष्य के पास तो तार कभी-कभार ही आता है और वह भी तभी जब कोई निकटवर्ती सम्बन्धी सख्त बीमार होता है या किसी की मृत्यु हो जाती है परन्तु बाबा तो बच्चों को ईश्वरीय सेवार्थ सन्देश देने के लिए तार कर दिया करते। इससे कितने ही बच्चों में नया उत्साह भर जाता। इस प्रकार प्रेक्टीकल में पितृ-तुल्य स्नेह, सहयोग और संरक्षण देकर बाबा ने आत्माओं का परमपिता शिव के साथ मन का स्नेह जोड़ा और उन्हें पुत्र-तुल्य व्यवहार करना सिखाया। अलौकिक पिता का कर्त्तव्य निभाते हुए उन्होंने अलौकिक अर्थात् आध्यात्मिक वत्स का नाता निभाने का पाठ पढ़ाया।

अभय और शक्ति रूपा बनने का वरदान

बाबा के गुणों का जितना वर्णन करें उतना थोड़ा है। उन्होंने हर वर्ग में अलौकिकता का संचार किया। माताओं-बहिनों को ईश्वरीय सेवा के निमित्त मुख्य स्थान देते हुए उन्होंने उनमें शक्ति रूप धारण करने की भी प्रबल प्रेरणा दी। उन्होंने कहा—"देखो, आप सभी आत्माओं का आदि स्वरूप चतुर्भुज है। चतुर्भुज की चार भुजाओं में से दो स्त्री की और दो पुरुष की, अर्थात् दो श्री लक्ष्मी की और दो श्रीनारायण की प्रतीक हैं। अतः आप स्वयं को एक 'अबला नारी' न मानकर चतुर्भुज समझो। गोया आप में नारी और नर दोनों रूपों के संस्कार हैं। अतः स्त्री रूपी चोले को देखकर डरने का कोई कारण नहीं है क्योंकि वास्तव में तो आप अलंकृत हैं—शंख, चक्र, गदा और पदम आपके अलंकार हैं। इस प्रकार 'शक्ति रूप' और चतुर्भुज रूप की स्मृति दिला-दिलाकर कन्याओं-माताओं को, जिन्हें लोग 'अबला' मानते हैं और जो स्वयं भी स्वयं को नारी मानते हुए हीन भाव लिए रहती हैं, उन्हें ज्ञान-शक्ति, योग-शक्ति और पवित्रता-शक्ति देकर विश्व के कल्याण के निमित्त अभय बनाया। जो कभी किसी से बात करने में भी पहले संकोच करती थीं, अब वे मंच से निर्भीक होकर 'आत्मा' और 'परमात्मा' के गहन विषयों पर सुगमता और सरसता से प्रभावशाली भाषण करतीं, जो पहले हर समस्या के समाधान के लिए पुरुषों पर निर्भर करती थीं, अब वे पुरुषों को भी परामर्श देकर उनकी समस्याओं का भी हल देती हैं। इस प्रकार ब्रह्मा बाबा ने हर वत्स को कुछ-न-कुछ वरदान देकर उसे ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बना लिया। इसी कारण ही तो चित्रकार प्रजापिता ब्रह्मा की हज़ारों भुजाएँ दिखाते हैं।

सभी में योग्यता भरने की कला में निष्णात

वरदान देकर योग्य बनाना और ईश्वरीय सेवा में जुटाना तो ब्रह्मा बाबा की विशेष कला थी। किसी को उन्होंने भवन कला में निष्णात और निपुण बना दिया कि उसने इतना बड़ा पाण्डव भवन, योग भवन आदि का निर्माण करा डाला तो किसी अन्य को हिसाब-किताब की कला सिखाकर अथवा शीघ्र नोट लेने का वरदान दे कर लेखाधिकारी अथवा शीघ्र लिपिक बना दिया। जो पहले किसी स्कूल या कालेज में भी उस विद्या को नहीं पढ़े थे, उन्हें पढ़े-लिखों से भी अधिक कुशल और अनुभवी बना डाला—यह बाबा की कमाल थी। आज वे वत्स इतने अलौकिक रूप से इतनी विशाल सेवा करने में तत्पर हैं कि उनके कार्य-कौशल, कला-कृत्य को देकर लोग आश्चर्यान्वित होते हैं कि किसी कलह-क्लेश और रगड़े-झगड़े के बिना वे इतना विशाल कार्य करा रहे हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वे योगियों में शिरोमणि तो थे और स्वयं गुणों से भरपूर भी थे। परन्तु विशेष बात यह कि वे दूसरों में गुण भरने,

उन्हें वरदान देने, उनमें योग्यता लाने, उनकी उन्नति में खुश होने, उनको संरक्षण, स्नेह एवं सहयोग देने में भी कलावान थे। उनकी सदा-स्थायी मुस्कान, उनके नेत्रों में शिव बाबा की याद की झलक, उनके महावाक्यों में माधुर्य और रूहानियत उनके हर कदम में लोक-संग्रह, इतना महान होने पर भी उनकी नम्रता, विकट परिस्थितियाँ सामने आने पर भी उनकी निर्भीकता एवं निश्चन्तिता, उनकी सात्त्विकता, उनका सन्तोष और उनका झर-झर करता हुआ प्रेम का शाश्वत झरना, उनकी अमिटप्रभु-प्रीति और अटल निश्चय, उनका बहुमुखी व्यक्तित्व अद्वितीय ही था जिससे कि वे मानव मात्र के पिता-श्री बनने के पूर्णतः योग्य थे।

—जगदीश

मोदी नगर में मोदी भवन में योग कक्ष की स्थापना

ब्र० कु० दीदी मनमोहिनी जी मुजफ्फरनगर में आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन करने के पश्चात् बहन गायत्री मोदी के उत्साह और उमंग को देखते हुए मोदी भवन, मोदी नगर में पधारीं जहां उनका शानदार स्वागत किया गया। वहां पर सर्व मोदी परिवार दीदी जी से मिला तथा दीदी जी ने बाबा के कमरे (अव्यक्तधाम) का अनावरण किया

ऊपर चित्र में आदरणीय दीदी जी भ्राता मदन लाल मोदी जी को शिव बाबा का चित्र भेंट कर रही हैं। ब्र० कु० देवता जी, ब्र० कु० हृदय मोहिनी जी, गायत्री मोदी जी तथा ब्र० कु० रुक्मणी जी साथ में खड़ी हैं। सामने चित्र में ब्र० कु० हृदय मोहिनी जी गायत्री मोदी को पुष्पहार पहनाते हुए

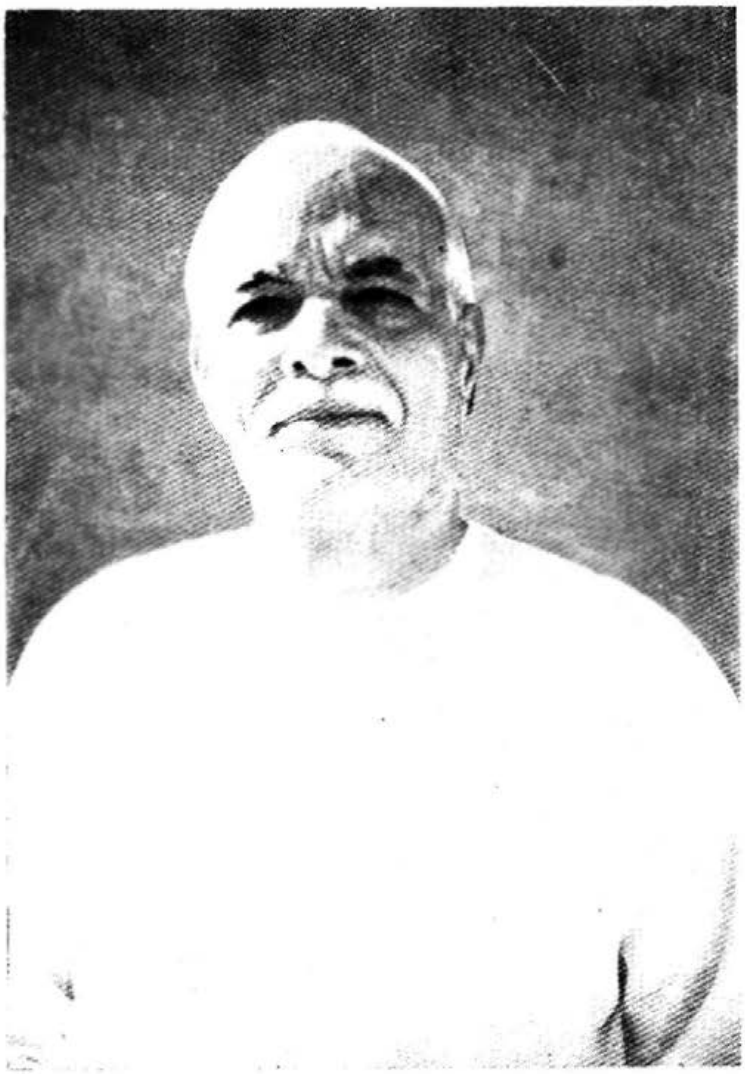

"आदि-देव ब्रह्मा बाबा"

ब्र० कु० निर्वैर, आबु पर्वत

धार्मिक ग्रंथों व मन्दिरों में त्रिमूर्ति व त्रिदेवों में से ब्रह्मा को ही एक बुजुर्ग मनुष्य का स्वरूप दिया है और उसे प्रजापिता बताया है। माऊन्ट आबू के मशहूर देलवाड़ा मन्दिर के मुख्य मण्डप में भी ऊपर छत में चार कोनों में से एक कोने में दाढ़ी-मूछ वाले बुजुर्ग ब्रह्मा की मूर्ति तथा तीन कोनों में शंकर, विष्णु और अम्बा की मूर्तियाँ हैं। सतयुगी दैवी सृष्टि में सभी देवी-देवता थे व पुनः होंगे, परन्तु गीता प्रसिद्ध वह योग उन देवताओं ने कब, कैसे और किस से सीखा जिससे वे देव-पद को प्राप्त हुए ? हर आत्मा अविनाशी है तो अवश्य ही सतयुग के पूर्व कलियुग के अन्त में देवताओं की आत्माएँ जब मनुष्य चोले में थीं तभी उस सर्वोच्च योग, राजयोग व ईश्वरीय योग का अभ्यास उन आत्माओं ने किया होगा। और वह योग सिखाने वाला भी अवश्य परमपिता परमात्मा स्वयं होंगे

जिन्होंने राजयोग सिखा कर पुनः मानव को देव, दिव्य गुणों से सम्पन्न अपने ही स्वरूप में नव-सृष्टि व सतयुगी दैवी सृष्टि को रचा। परन्तु निराकार पिता परमात्मा ने इतना श्रेष्ठ, इतना महान विश्व-परिवर्तन का कार्य कैसे किया? उनका साकार माध्यम कौन बना? इस रहस्य को कोई नहीं जानता।

परमपिता परमात्मा ने स्वयं इस रहस्य की जानकारी वर्तमान पुरुषोत्तम संगम युग पर नव-सृष्टि की पुनः स्थापना के निमित्त अपने साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ही दी है। ब्रह्मा ही फिर से ज्ञान बल, पवित्रता बल और योग बल से नई सृष्टि की स्थापना के निमित्त बना है। उन्हीं के द्वारा परमपिता परमात्मा फिर से सर्व-शास्त्रों का सार व सत्य गीता ज्ञान और राज योग सिखा रहे हैं। (जिस की निशानी ब्रह्मा के हाथ में सर्व शास्त्र दिखाते हैं) ब्रह्मा कौन? आदि देव कौन? ब्रह्मा बाबा कौन? ब्रह्मा बाबा का व्यक्तित्व एक अद्भूत था जो विश्व-माननीय पिता का ही हो सकता है। उनकी वाणी की मिठास हृदय को सुख के झूले में झूलाने वाली थी। उनका संग उच्च जीवन बनाने की प्रेरणा व उमंग उल्लास सम्पन्न था। परमपिता परमात्मा तथा मानवता के प्रति उनका स्नेह अद्वितीय था। सत्यता, पवित्रता, ईमानदारी, त्याग, तपस्या एवं सेवा में सदा तत्पर उनका जीवन हर मानव के लिए आध्यात्मिकता की चरम सीमा पर पहुँचाने वाला एक खुली पुस्तक के समान था।

हर व्यक्ति के प्रति उनका ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न विश्वपिता का व्यवहार, जिसमें जात-पात, रंग व भाषा, आयु व प्रान्त व राष्ट्रीयता के कारण भेद-भाव का अंशमात्र भी न होने के कारण, उनके सम्बन्ध व सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति को वह अपने ही प्रिय पिता स्वतः ही अनुभव होते थे। उनके यह मधुर बोल, "आओ बच्चे, आओ मीठे बच्चे", हर व्यक्ति के हृदय को एक चुम्बक की तरह अपनी ओर आकर्षित कर लेते और अक्समात वह व्यक्ति उनको "हाँ बाबा" "जी बाबा" कहकर अपने अलौकिकपितापुत्र के सम्बन्ध का सुखद अनुभव करने लगता। वे लोग धन्य हैं जिन्हें पिताश्री ब्रह्मा से सम्मुख मिलने तथा उनके मुखारबिन्द द्वारा परमपिता परमात्मा शिव की श्रीमत संपन्न ज्ञान वाणी सुनकर स्वअनुभूति करने का परमभाग्य प्राप्त हुआ।

मुझे जुलाई १९६० का वह दिन याद आता है जब मैं पहली बार ब्रह्मा बाबा से सन्मुख मिला था, मेरा मन ईश्वरीय नशे व खुशी में झूमने लगता है। ८४ जन्मों के चक्र काल में मेरे लिए वह क्षण सर्वोत्तम सिद्ध हुए जब मुझे पवित्रता, सुख-शान्ति के सागर, परमपिता, परमशिक्षक, परम-सद्गुरु पिता परमात्मा शिव का अनुभव व दिव्य साक्षात्कार इस धरा पर चुने हुए साकार माध्यम पिताश्री ब्रह्मा के समक्ष बैठने पर प्राप्त हुआ। ओहो! सर्व आत्माओं के परमपिता और मानव सृष्टि के आदि पिता शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा—विश्व की सबसे महान दोनों हस्तियाँ और वह भी दोनों मेरे पारलौकिक और अलौकिक पिता के रूप में इतने समीप बैठे हों, मुझ आत्मा को पवित्रता, शान्ति, शक्ति और अतीन्द्रिय सुख की किरणों से धन्य-धन्य बना रहे हों! क्या लाइट थी क्या माइट थी उन नैनों में उस समय जो मुझे लाइट मय बनाती इतने स्नेह से आनन्दित करती अपनी ओर आकर्षित कर रही थी। और इसके पश्चात् मैं बाप दादा से जाकर यूँ गले मिला जैसे चिरकाल से बिछड़ा कोई बालक अपने माता-पिता से मिलता है—और है भी ऐसे—५००० वर्ष तो बीत गए थे बाप-दादा से बिछड़े हुए।

ब्रह्मा बाबा के जीवन को नज़दीक से देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। हर क्षण शिव बाबा की स्नेह भरी याद से उन्होंने अपने जीवन में ईश्वरीयपन इस कदर भर लिया था कि उनके हर कर्म से, बोल से व दृष्टि से परमपिता परमात्मा शिव के गुणों व कर्त्तव्यों की प्रत्यक्षता स्वतः ही होती थी और उनके सम्पर्क में आने से स्वतः ही हर आत्मा निर्णय कर

लेती कि अब ब्रह्मा बाबा के नकशे-कदम पर चल कर श्रीमत का पालन करना है, आजीवन पवित्र और योगी बनकर अपने जीवन को सदा सुखी बनाना है तथा विश्व कल्याण के सर्वोत्तम कार्य में तन, मन, धन, से अपना जीवन समर्पण करना है। ऐसा निश्चय मैंने भी बाबा से हुई पहली बार की भेंट में मन ही मन में कर लिया था। बाप-दादा (बाप-शिव बाबा, दादा-ब्रह्मा बाबा) के असीम प्यार, पवित्रता एवं दिव्यता की शक्ति दिन प्रति दिन विश्व में चारों ओर फैल रही है। **अनेकाअनेक ब्रह्माकुमारियों एवं ब्रह्माकुमारों के सदा मुस्कराते चेहरे दिव्य शक्ति व सन्तुष्ट जीवन को स्वतः ही प्रत्यक्ष करते रहते हैं और भविष्य सतयुगी पावन सृष्टि का साक्षात्कार कराते रहते हैं।**

ब्रह्मा बाबा मानव-विश्व के आदि पिता, आदि देव, आदम हैं। इस बात की पुष्टि आज भी देश-विदेश में रहने वाले सभी धर्मों की विभिन्न आत्माओं के दिव्य अनुभवों से होती रहती है कि कैसे दिव्य दृष्टि व दिव्य स्वप्नों द्वारा ब्रह्मा बाबा अपने फ़रिश्ता स्वरूप से उन्हें दिव्यता, पवित्रता व ईश्वरीयपन का अनुभव कराते रहते हैं और भविष्य सतयुगी सृष्टि के दृश्य दिखा कर देव-पद प्राप्त करने के लिए पवित्र और योगी जीवन बनाने का ईशारा देते रहते हैं।

पौराणिक कहानियों में ब्रह्मा को सर्व में से बुद्धिवान, ज्ञानवान व अनुभवी दिखाया हुआ है जो वर्तमान पुरुषोत्तम संगम युग में यह बात बिल्कुल सत्य सिद्ध हुई है—क्यों? क्योंकि ब्रह्मा बाबा स्वयं भी ज्ञान मार्ग पर चले और अन्य को भी उस पर चलने की मत देते रहे क्योंकि उन्हें अन्धश्रद्धा, कर्मकाण्ड की बजाए ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग सर्वश्रेष्ठ अनुभव हुआ था—वह न तो स्वयं को गुरु कहलाते न किसी से पूजा कराते न किसी को चरण स्पर्श करने देते, न किसी से फूलों के हार स्वीकार करते और न ही हाथ जोड़ने देते, वे सदा कहते थे मैं तुम बच्चों का सेवक हूँ। सेवक बच्चों (मालिकों) को नमस्ते (सलाम) करता है। बाबा एक अद्भुत शिक्षक थे। जो हर बात एक मिसाल बनाकर हम बच्चों को सिखाते थे, जिनकी कथनी और करनी एक थी, जो अपकारियों पर भी उपकार की भावना सदा रखते थे, और वर्तमान पुरुषोत्तम संगम युग का हर क्षण बेहद आत्माओं के आध्यात्मिक उत्थान की सच्ची सेवा में लगाते थे। निद्राजीत बन अपने आराम का समय भी दधीची की तरह विश्व के सभी बच्चों (मनुष्यात्माओं) की सेवा में ही लगाते थे। इसलिए सभी के वे स्वतः ही प्यारे बने।

परमप्रिय परमपिता शिव और अति प्रिय पिता-श्री ब्रह्मा बाबा की प्रिय सन्तानो, मेरे अति प्रिय बहिनो व भाइयो, आपके प्रति भी मेरी यही शुभ कामना व शुभभावना है कि अपने पारलौकिक व अलौकिक पिता को पहचान कर अपना ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त करो। सम्पूर्ण पवित्रता, सुख और शान्ति सम्पन्न वर्तमान जीवन तथा श्रीमत के आधार पर किये श्रेष्ठ कर्मों के फल-स्वरूप भविष्य फ़रिश्ता समान तथा सतयुगी देवता समान जीवन मुक्ति ही हमारा ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार है। जैसे आदि देव-ब्रह्मा बाबा ने अपने अलौकिक पुरुषार्थ से इसी जीवन में मानव मूल्यों एवं दिव्यता की सम्पन्नता को प्राप्त किया, आओ हम भी अपने आदि देव, आदि पिता के नकशे-कदम पर चलकर इस ही जीवन में सम्पन्न बनें और जीवन को धन्य बनाएं—यही सन्देश हमें १८ जनवरी —पिता श्री ब्रह्मा बाबा का अव्यक्त सम्पन्नता दिवस प्रदान करता है। □

प्रजापिता ब्रह्मा

लेखिका ब्र० कु० सुधा, शक्ति नगर, दिल्ली

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय अब एक विश्व-व्यापी संस्था है। इसके केवल भारत में ही ७०० से अधिक सेवा केन्द्र व उप-सेवा केन्द्र हैं। जो भाई-बहन प्रतिदिन क्लास करते हैं और इस आध्यात्मिक विश्व-विद्यालय के नियमों का पालन करते हैं, वे ब्रह्माकुमारी और ब्रह्माकुमारियाँ कहलाते हैं। यहाँ आने वाला हर विद्यार्थी अपने को परमपिता परमात्मा शिव की प्रजापिता ब्रह्मा के मुख कमल द्वारा रची गई सन्तान समझता है। काफ़ी गहन अध्ययन के पश्चात् उनको यह निश्चय होता है और इसी निश्चय के आधार पर वे अपना जीवन व्यतीत करते हैं। लेकिन, जब पहले-पहले लोग इस संस्था के सम्पर्क में आते हैं और प्रजापिता ब्रह्मा, जो इस आध्यात्मिक परिवर्तन से पहले दादा लेखराज के नाम से जाने जाते थे, के चित्र पर उनकी दृष्टि पड़ती है, तो उनके मन में स्वतः ही यह प्रश्न उठता है कि इन्हें प्रजापिता ब्रह्मा क्यों कहा जाता है। यह प्रश्न पूछने का मूल कारण यह होता है कि हिन्दु धर्म के अनुसार जो ब्रह्मा का चित्र मिलता है जिसे वे कई धार्मिक पुस्तकों, पुराणों, मूर्तियों, तीर्थ स्थानों और बाज़ार में बिकने वाले केलेन्डरों में देखते हैं, वह चित्र ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में दिखाए गए चित्र से बिल्कुल अलग किस्म का होता है। यद्यपि पुराणों अथवा तीर्थ स्थलों पर बनाये गए ब्रह्मा के चित्र में कोई १००% समन्वय नहीं है तथापि ये चित्र कई बातों में आपस में समान हैं। इसलिए वे लोग पूछते हैं कि इस संस्था के सेवा-केन्द्रों पर जो ब्रह्मा का चित्र मिलता है, उसकी चार भुजायें अथवा हाथ में माला या पुस्तक क्यों नहीं दिखाई जाती जबकि अन्य किसी स्थान पर मिलने वाले चित्र में यह सब दिखाया जाता है।

अलंकार महत्त्वपूर्ण होते हैं पर उन्हें स्थूल रूप में नहीं लिया जाना चाहिए

वास्तव में लोग यह नहीं जानते अथवा जान-बूझ कर यह भूल जाते हैं कि प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों में और पूजा की सामग्री में कई तरह के अलंकारों (symbols) का इस्तेमाल होता रहा है। सूक्ष्म भावों को प्रदर्शित करने वाली कुछ स्थूल वस्तुयें मूर्तियों, तस्वीरों, कला कृत्तियों, साहित्य रचनाओं में प्रयोग की जाती रही हैं। संस्कृत में यह कहा जाता है कि कोई प्रसिद्ध स्थूल वस्तु, जिससे किसी देवता की विशेषता सिद्ध होती है, उसके साथ सूचक के रूप में दिखाई जाती है।[1] उदाहरण के तौर पर श्वेत कमल पवित्रता और विकारों की दलदल से निर्लिप्त रहने का सूचक है, इसीलिए किसी देवी या देवता के निर्विकारी जीवन को दिखाने के लिए उसे कमल पुष्पासीन दिखाया जाता है। इसाई मत के लोग हज़रत ईसा मसीह के लिए क्रॉस (+) चिह्न का इस्तेमाल करते हैं। मुसलमान लोग चाँद तारा बनाते हैं। सिक्ख लोग भी अपने मत के अनुसार कुछ चिह्न सूचक के रूप में अपने पास रखते हैं। लगभग हर व्यक्ति किसी दूसरे से चर्चा के दौरान 'शेर' को शक्ति का, 'कबूतर' को शान्ति का और 'मेमने' को त्याग व निर्माणता का सूचक

१. प्रसिद्ध साधर्म्यम साध्य-साधनम।
उपनाम तदेव प्रतीक-भावः।

मानता है। आज के इस आधुनिक युग में भी लगभग सभी संस्थाओं के अपने चिह्न होते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ बहुत-से देशों व सम्पदा का प्रतीक ग्लोब और गेहूं की बालों का चिह्न बनाता है। ये चिह्न (Symbols) केवल चित्र या किसी स्थूल वस्तु के रूप में नहीं होते लेकिन इनमें कहावतें, दृष्टान्त, रूपक, उपाख्यान, कथायें आदि भी शामिल हैं। अतः हिन्दु त्रिमूर्ति को समझने के लिए सबसे पहले इन चिह्नों को समझना होगा और इसके अलावा इन देवताओं के नामों के अर्थ को भी जानना होगा क्योंकि उसके ये नाम गुणवाचक नाम हैं। ये नाम उस देवता विशेष की किसी महत्त्वपूर्ण विशेषता अथवा महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य को सिद्ध करते हैं।

ब्रह्मा के विभिन्न नाम

संस्कृत व्याकरण[२] और भाषा विज्ञान[३] के अनुसार 'ब्रह्मा' शब्द का मूल 'बृह' है और इसका अर्थ है : जो अपने मुख से रचना करता है।[४]

वेदों और पुराणों में ब्रह्मा को **विश्व-कर्मा** (विश्व का रचयिता अथवा वह जिसके कर्मों का विश्व-भर में प्रभाव फैलता है), **प्रजापति** (अपनी प्रजा अथवा रचना का कल्याण करने वाला), **बृहस्पति** (एक महान शिक्षक), ब्रह्मा (एक महान व्यक्ति), **हिरण्यगर्भा** (सर्व का मात-पिता) आदि कई नाम दिये गए हैं। ये सभी नाम इस तथ्य की ओर, इशारा करते हैं कि ब्रह्मा जी अवश्य ही एक महान शिक्षक (**बृहस्पति**) होंगे जिन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान के आधार से मुखवंशावली रचना रची होगी जिसके कारण वे **प्रजापति** कहलाते हैं और इस तरह इस उच्च कोटि के कल्याणकारी कर्त्तव्य करने के कारण उन्हें ब्रह्मा की उपाधि दी जाती है। इससे सिद्ध है कि मनुष्यात्मायें अवश्य ही अज्ञानता तथा गिरावट की स्थिति में होंगी तभी तो उन्हें उनका उत्थान करने के लिए दिव्य शिक्षायें देनी पड़ी होंगी।

आइये, अब हम यह देखें कि परम्परा से ब्रह्मा का कैसा चित्र बनाया जाता रहा है और चित्रकार तथा मूर्तिकार उनकी मुख्य विशेषताओं तथा कर्त्तव्यों को दर्शाने के लिए उनके चित्रों को किन अलंकारों से सुशोभित करते हैं तथा इन अलंकारों का वास्तविक आध्यात्मिक रहस्य क्या है?

ब्रह्मा को चार मुख वाला क्यों दिखाया जाता है?

आमतौर पर ब्रह्मा को चार मुख वाला दिखाया जाता है। चार मुख चार वेदों के सूचक हैं।[५] 'वेद' का अर्थ है 'दिव्य ज्ञान' क्योंकि वेद' शब्द 'विद' से 'निकला है जिसका अर्थ है जानना। वास्तव में चार मुख ब्रह्मा द्वारा दिये गए दिव्य ज्ञान के चार विषयों के सूचक हैं। ये चार विषय हैं : (1) ईश्वरीय ज्ञान, (2) सहज राजयोग अथवा आत्मानुभूति, परमात्मानुभूति और आत्म शुद्धि की कला, (3) दिव्य गुणों और पवित्रता की धारणा, (4) ईश्वरीय सेवा अर्थात् समाज-कल्याण के कर्त्तव्य। अब इन विषयों को चाहें तो आप वेद की संज्ञा दे सकते हैं। इनसे मनुष्यात्मा को धर्म (शान्ति), अर्थ (सम्पदा), काम (कामनाओं की पूर्ति) मोक्ष (मुक्ति) की प्राप्ति होती है। धार्मिक पुस्तकों के अनुसार चार मुख इन चार प्राप्तियों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) के भी प्रतीक हैं या आप ऐसा भी कह सकते हैं कि उनके द्वारा दिया गया ज्ञान चारों

---

२. पाणिनी।

३. निरुक्त।

४. ब्रह्मा-बृह वृहि वृद्धौ-वृह वृद्धौ।

५. कालीविलास तन्त्रम्, जो एक उच्च कोटि की धार्मिक पुस्तक है, में कहा है कि ब्रह्मा के चार मुख चार वेदों के प्रतीक हैं।

अरुणादित्य संकाशं चतुर्वक्त्रं चतुर्मुखम् चतुर्वेदमयं देवं धर्मकामार्थ मोक्षदम् इसका अर्थ है कि नवोदय सूर्य की तरह वह (ब्रह्मा) लाल हैं, उनके चार मुख और चार शीश हैं जो चार वेदों के प्रतीक हैं। वह धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के दाता हैं अर्थात् वह सत्धर्म की पुर्नस्थापना करते हैं और सर्व कामनाओं की पूर्ति करते हैं तथा मुक्ति प्रदान करते हैं।

दिशाओं में फैला, इसलिए उन्हें जगद्गुरु भी कहा जाता है।

दाढ़ी किसका प्रतीक है?

ब्रह्मा को दाढ़ी भी दिखाई जाती है और उन्हें वृद्ध मानव के रूप में दिखाया जाता है। यह इस सत्य की ओर इशारा करता है कि वह एक वृद्ध पुरुष थे, देवता नहीं क्योंकि न तो देवताओं को कभी वृद्ध दिखाया जाता है और न ही उनकी दाढ़ी बनाई जाती है। इसका अर्थ यह नहीं कि उनकी सचमुच में दाढ़ी थी बल्कि दाढ़ी अनुभवी होने का तथा परिपक्व अवस्था का प्रतीक है और उससे उनकी आकृति पिता-तुल्य होती है। (भारत में जो व्यक्ति उम्र में परिपक्व और अनुभवी होता है, कहता है कि मैंने दाढ़ी के बाल धूप में सफेद नहीं किये हैं लेकिन मैंने जीवन में बहुत अनुभव किया है)

यद्यपि ब्रह्मा पृथ्वी पर वास करने वाला एक मनुष्य था, तथापि वह कोई साधारण मानव नहीं था। इसीलिए मण्डकोपनिषद में कहा है 'ब्रह्मा आदि देव हैं और विश्व के रचयिता हैं।'[६] उन्हें ऐसा इसलिए कहा गया है क्योंकि उपरोक्त वर्णित चारों विषयों से उन्होंने अपने को दिव्य बनाया और वे मानव से देव पद को प्राप्त हो गये।

चार भुजायें और उनमें चार अलंकार

(१,२) उनके एक हाथ में पुस्तक और दूसरे में एक माला दिखाई जाती है। पुस्तक ज्ञान का प्रतीक है और माला अजपाजाप तथा परमात्मा पर मन को एकाग्र करने का प्रतीक है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि वे आध्यात्मिक विचारों वाले व्यक्ति थे और परमात्मा का सुमिरण किया करते थे। १०८ मणकों की माला यह दर्शाती है कि उन्होंने १०८ मनुष्यात्माओं को विकारों अथवा माया पर विजय प्राप्त करने के लायक बनाया और वे अक्सर इन १०८ विजयी वत्सों को याद किया करते थे। इसी कारण ही जगद्गुरु विशेषण के पहले १०८ अंक लगाया जाता है और कहा जाता है—श्री १०८ जगद्गुरु।

(३) तीसरे हाथ में कमण्डल दिखाया जाता है। यह पावन जल अर्थात् अमृत का सूचक है। उन्होंने दिव्य ज्ञान रूपी अमृत परमात्मा से प्राप्त करके अन्य आत्माओं को बाँटा था। इससे यह प्रदर्शित होता है कि ब्रह्मा के पास वह अमृत-रस था जिससे आध्यात्मिक रूप से निर्जीव हुओं को पुनर्जीवित किया जा सकता था। इससे यह भी सिद्ध होता है कि उन्होंने इस पवित्र ज्ञान के आधार पर नव-निर्माण का कार्य भी किया। भारतवर्ष में ज्ञान की तुलना जल से की जाती है और यह कहा जाता है कि जैसे धूप में झुलसते हुए मनुष्य के लिए जल आवश्यक है, ऐसे ही ज्ञान की प्यासी आत्मा के लिए यह ईश्वरीय ज्ञान अमृत तुल्य है।

(४) ब्रह्मा का चौथा हाथ अभय मुद्रा अथवा वरदानी मुद्रा में दिखाया जाता है जिससे यह सिद्ध होता है कि वे निर्भय थे तथा उन्होंने सिद्धि स्वरूप की स्थिति को प्राप्त कर लिया था जिससे वे दूसरों को वरदान दे सकते थे।

सुनहरी चेहरा

उनके सुनहरी चेहरे में आने वाली सुनहरी दुनिया की झलक मिलती है अथवा ऐसा भी कह सकते हैं कि लोग उनके चेहरे में आने वाली स्वर्णिम दुनिया तथा परमात्मा की दिव्य चमक का अनुभव करते थे।

अन्य अलंकार

(१) ब्रह्मा को श्वेत वस्त्र पहने हुए दिखाया जाता है। श्वेत वस्त्र पवित्रता के प्रतीक हैं।

(२) उनके सिर पर रखा गया मुकुट उनके राजकुलीन वैभव, शिष्ट व्यवहार तथा उनकी दिव्यता का प्रतीक है। जबकि वे कोई राजा नहीं थे लेकिन आध्यात्मिक भाषा में वे साधारण मनुष्यों के बीच अवश्य ही राजा-तुल्य थे। वह राजर्षि थे, राजयोगी थे,

६. ब्रह्मा देवानाम प्रथमः समवभूत् विश्वस्यकर्ता भुवनस्य गोप्ता।

इसीलिए उनके सिर के पीछे प्रभामण्डल भी दिखाया जाता है।

(३) चित्रकार उन्हें श्वेत और लाल कमल पर आसीन दिखाते हैं। कमल निर्लिप्तता का सूचक है। श्वेत रंग पवित्रता का तथा लाल रंग प्रेम (परमात्मा के प्रति) का सूचक है। ब्रह्मा अपने ब्रह्मचर्य, सम्पूर्ण अहिंसा तथा सत्य का नियम पालन करने में दृढ़ थे और उनके मन में परमात्मा के प्रति अगाध प्रेम था। लाल रंग शक्ति और परिश्रम का भी प्रतीक है। ब्रह्मा ने विश्व की रचना का कार्य किया जो बिना शक्ति व परिश्रम के नहीं हो सकता था।

(४) **उनकी असाधारण मुद्रा**—ब्रह्मा जी को सदैव बैठक की मुद्रा में दिखाया जाता है जिसमें उनका दायाँ पाँव कमल पर स्थित होता है और बायाँ पाँव दूसरी टाँग पर। यह मुद्रा दर्शाती है कि ब्रह्मा के संसार से विवेक युक्त सम्पर्क थे और वे सुस्ती या मानवी भावनाओं से प्रभावित नहीं होते थे।

(५) **यज्ञोपवीत**—यह पवित्र धागा पवित्रता तथा आध्यात्मिक अनुशासन का प्रतीक है।

(६) **हंस**—हिन्दु संस्कृति में हंस को तीव्र परख शक्ति का प्रतीक माना गया है। भारतीय पौराणिक कथाओं के अनुसार हंस हीरे, रत्न, मोती चुगता है व कंकर छोड़ता जाता है। इसका अर्थ है कि उनकी बुद्धि में दिव्य ज्ञान की इतनी स्पष्ट तस्वीर थी कि वे फौरन यह परख सकते थे कि क्या सही है और क्या ग़लत है, पाप क्या है और पुण्य क्या है आदि-आदि। हंस का श्वेत रंग पवित्रता का प्रतीक है। भारतीय परम्परा में जब कोई ऋषि अपनी पवित्रता तथा आध्यात्मिक स्थिति के उच्च शिखर पर पहुँच जाता है तो उसे परमहंस की उपाधि दी जाती है। कुछ शास्त्रों में ब्रह्मा को ७ हंसों द्वारा खींचे जा रहे एक रथ में विराजमान दिखाया जाता है। अंक ७ भी पवित्र माना गया है और ७ हंसों द्वारा खींचे जा रहे रथ में सवार ब्रह्मा का चित्र यह दर्शाता है उनकी कि स्थिति माने गये ७ महान राजर्षियों में सर्वश्रेष्ठ थी।

(७) **खुले नेत्र**—ब्रह्मा के नेत्र सदैव खुले हुए दिखाए जाते है जो उनकी पूर्ण जागृति तथा तीसरे नेत्र के खुलने के प्रतीक हैं। ये योग की स्वाभाविक और निरन्तर स्थिति के भी सूचक हैं जिसमें मनुष्य को अपने मन को एकाग्र करने के लिए नेत्रों को बन्द करने की आवश्यकता महसूस नहीं होती।

ब्रह्मा के बारे में सत्य

अलंकारों के उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि यदि कोई इनके वास्तविक अर्थ व महत्त्व को जानने की कोशिश न करे तो वह प्रजापिता ब्रह्मा के बारे में सत्य को नहीं जान सकता। यदि कोई कमल अथवा हंस को केवल प्रतीक-मात्र न मानकर यह मान ले कि ब्रह्मा जी पदमासीन हैं और हंसों द्वारा खींचे जा रहे रथ पर विराजमान हैं तो वह सचमुच गलती पर है। ऐसा ही चार मुख और चार भुजाओं के बारे में भी कहा जा सकता है। लेकिन बहुत अफ़सोस की बात है कि कुछ अनजान लोग अथवा जो जान कर भी अनजान बनते हैं, वे पूछते हैं, "अन्य सभी स्थानों पर तो ब्रह्मा को चार मुख वाला दिखाया जाता है तो यहाँ एक मुख वाला क्यों दिखाया गया है? उनके हाथों में तो वेद आदि दिखाए जाते हैं, यहाँ उनका चित्र बिना पुस्तक के क्यों बनाया गया है?" जो लोग यह प्रश्न पूछते हैं, उन्हें यह समझने की कोशिश करनी चाहिए कि जब एक जीवित प्राणी हमारे सामने है और हम उसे जानते हैं, उससे मिलते हैं तो उनको अलंकार देने की क्या आवश्यकता है, वास्तव में ब्रह्मा की २ भुजायें हैं और वे हमारे साथ हैं तो उनके ४ मुख या ४ भुजायें क्यों दिखाई जानी चाहियें? ये अलंकार तो चित्रकारों ने तब चित्रित करने आरम्भ किए जब ब्रह्मा अपना कर्त्तव्य कर चुके थे और फिर उन्हें चित्रों या मूर्तियों के द्वारा स्मरण किया जाना था।

धर्म-विश्वासी लोग यह उत्तर सुनकर नाराज हो जाते हैं और कहते हैं: "तो आपका मतलब है कि

ब्रह्मा जो अनादि नहीं हैं और वे इस सृष्टि चक्र में जन्म लेते हैं और अपनी दिव्य रचना का अलौकिक कार्य करते हैं और कि अब पुनः उन्होंने जन्म लिया है और यह दादा लेखराज ही अब ब्रह्मा हैं ? आप यह कैसे कह सकते हैं ?

इस प्रश्न का उत्तर समझने के लिए कई पुराणों में ब्रह्मा जी की जन्म गाथा के दृष्टान्त का उल्लेख करना उचित होगा। उस दृष्टान्त का सार यह है कि ब्रह्मा ने विष्णु के नाभि-कमल से जन्म लिया। वे कमल पर बैठक मुद्रा में आसीन थे। उस कथा में यह भी कहा गया है कि परमात्मा, जो शेष नाग पर लेटे हुए थे, के मन में रचना रचने की इच्छा उत्पन्न हुई।

अब तक इस कथा अथवा दृष्टान्त के बहुत-से अर्थ किए जा चुके हैं। यह भी कहा गया है कि सर्प 'समय' का प्रतीक है। शेषनाग (शेष का अर्थ है बचा हुआ और नाग अर्थात् समय) का अर्थ है कि सृष्टि चक्र का लगभग हिस्सा बीत चुका था, केवल थोड़ा ही बचा था। दूसरे शब्दों में ऐसा भी कह सकते हैं कि वह सृष्टि चक्र की अन्तिम बेला थी। इसी कारण ब्रह्मा के जन्म से सम्बन्धित सभी पौराणिक कथाओं में समय का ऐसा ही वर्णन आया है कि एक चक्र के अन्त और दूसरे चक्र के आदि का वह संगम समय था जब विश्व समस्याओं से घिरा हुआ था और चारों ओर तमोप्रधानता तथा अज्ञानता का बोलबाला था। नई दुनिया रचने के कार्य की इच्छा उत्पन्न होने से भी यह स्पष्ट है कि तब पुराना विश्व खत्म होने को था और नये विश्व का पुनर्निर्माण होना था ; न तब १००% असत् था न सत्, बस सब कुछ जैसे उलझा हुआ-सा था। ऐसी परिस्थितियों में ब्रह्मा ने विष्णु की नाभि से निकले हुए कमल से जन्म लिया। उपरोक्त वर्णन से सिद्ध होता है कि यह अलंकृत भाषा में कहा गया है वरना इस वर्णन को, कि विष्णु की नाभि से कमल निकला और उस पर ब्रह्मा आसीन थे, शाब्दिक अर्थों में लेना निरर्थक ही होगा। हम सब जानते हैं कि नाभि वह स्थान है जिससे गर्भ में बच्चा एक नाल के द्वारा जुड़ा हुआ होता है। अतः यह इस बात का सूचक है कि ब्रह्मा का जन्म विष्णु द्वारा हुआ। चूंकि उन्हें कमल पर आसीन दिखाया जाता है, इससे यह सिद्ध होता है कि यह दृष्टान्त कोई शारीरिक जन्म के लिए नहीं बल्कि आध्यात्मिक अथवा नैतिक जन्म के लिए है क्योंकि कमल पवित्रता का सूचक है और बैठक मुद्रा उनकी शान्ति व योगयुक्त स्थिति की प्रतीक है। ब्रह्मा को स्वयंभू भी कहा जाता है अर्थात् कि जो खुद ही जन्मा हो। अतः उनका जन्म कोई दैहिक जन्म नहीं माना जा सकता। यदि इन सब बातों को इकट्ठा कर उनकी एक जीवनी बना दी जाय तो हम कह सकते हैं कि ब्रह्मा, (चाहे देह के जन्म के हिसाब से उन्हें कुछ भी नाम दिया गया हो) शान्त मुद्रा में बैठे हुए थे, तब उन्होंने विष्णु का साक्षात्कार किया और उससे उन्हें एक ऐसी दिव्य प्रेरणा मिली जिसने उनको मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक रूप से पूर्ण परिवर्तित कर दिया जिससे वे एक दिव्य व्यक्ति बन गये या ऐसा कहें कि उनका अलौकिक जन्म हो गया।

अब यदि कोई धीरज से दादा लेखराज की जीवन-कहानी सुने तो वह हमारे मन्तव्य से अवश्य सहमत होगा। यदि कोई दुराग्रही है या बिना मतलब के वाद-विवाद करने का शौकीन है तो वह इस सत्य को नहीं समझ सकेगा। सत्य की खोज करने वाले को शान्त चित्त व धैर्यवान होना चाहिए, उसमें पक्षपात, दुराग्रह की भावना न हो तभी वह सत्य को जान सकेगा।

एक दिन दादा लेखराज विचार-मग्न मुद्रा में बैठे थे। तब यकायक उन्हें विष्णु चतुर्भुज साक्षात्कार हुआ और विष्णु ने उन्हें कहा—'अहम् विष्णु चतुर्भुजं तत् त्वम्'। फिर एक अलौकिक आवाज़ ने उन्हें योगाभ्यास करने तथा पूर्ण पवित्र विश्व का निर्माण कार्य आरम्भ करने की प्रेरणा दी। पौराणिक कथाओं में इसका वर्णन इस प्रकार आता है :

"एक दिव्य आवाज़ ने कहा, तुम्हें नई दुनिया बनानी है।' लेकिन ब्रह्मा को यह नहीं मालूम था कि उसे नई दुनिया की स्थापना कैसे करनी है। आवाज़ आई कि तुम्हें योग की उच्चतम स्थिति तक पहुँचने के लिए तपस्या करनी होगी।

दादा लेखराज के साथ बिल्कुल ऐसा ही हुआ। वे नहीं जानते थे कि सतयुगी पावन दुनिया की स्थापना कैसे की जानी है। उन्होंने योगाभ्यास किया और पूर्ण पवित्रता के व्रत को धारण किया और इस कार्य में परमात्मा उनके मार्ग दर्शक बने।

यदि हम ज्योतिर्लिंगम् शिव तथा सरस्वती से सम्बन्धित आख्यान का अध्ययन करें तो हमें इससे भी अधिक स्पष्ट शब्दों में वह वर्णन मिलेगा जो दादा लेखराज के जीवन में घटी घटनाओं से हूबहू मिलता है। जैसे ज्योतिर्बिंदु परमात्मा शिव ने जब उन्हें विष्णु चतुर्भुज का साक्षात्कार कराया, तब स्वयं उन्होंने ही उन्हें 'ब्रह्मा' अथवा 'प्रजापिता' नाम दिया। और, सचमुच हम यह अनुभव करते हैं कि प्रजापिता ब्रह्मा कितने महान थे और किस तरह उनके द्वारा प्रारम्भ किया गया कार्य पवित्रता, सुख, शान्ति तथा सम्पदा सम्पन्न नये विश्व की रचना का कार्य है और इसी-लिए हम उन्हें ब्रह्मा कहते हैं और अपने को ब्रह्माकुमारी अथवा ब्रह्माकुमार कहते हैं।

□

गीत

— ले० बी० के० मोहन भाई (आबु)

ब्रह्मा तूने धरती पर
भगवान को बुलाया
तेरे माध्यम से जग ने
सतमार्ग को है पाया
तेरे ललाट पर थी
जगी एक आत्म ज्योति
जिस-जिस ने भी था देखा
बना अनमोल मोती
तेरी दिव्य सी नजर में
नूरे इलाही पाया ब्रह्मा तूने ··
तेरे रोम-रोम में था
रूहानियत का तारा
तेरे हर गुण में देखा
एकांत का द्वारा
तपते दिलों में तूने
शीतलता को बरसाया ब्रह्मा तूने···
तेरे हर एक कर्म ने
कमाल कर दिखाई
तेरे एक-एक अंग ने
शिव की वाणी सुनाई
तुझसे जो निकली किरणें
कण-कण को चमकाया ब्रह्मा तूने···

बांदा सैन्ट्रल जेल में सुपरिन्टेन्डेन्ट तथा जेलर जी को ब्र० कु० सरिता प्रदर्शनी के चित्रों पर समझा रही हैं। साथ में ब्र० कु० दुलारी तथा महिला क्लब की अध्यक्षा बहन गायत्री देवी जी खड़ी हैं

जो पाना था सो पा लिया अब बाकी क्या रहा ?

ब्र० कु० मदनलाल शर्मा, एम० काम० एल, एल बी०, जयपुर

१९६५ में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय कलकत्ता के सम्पर्क में प्रदर्शनी के द्वारा आना हुआ। राजयोग सीखने की प्रबल इच्छा थी। प्रथम बार सेवा केन्द्र पर यज्ञ में सम्पूर्ण समर्पित राजयोगिनी बहनों से साक्षात्कार हुआ। उनके जीवन के त्याग तपस्या और सेवा का क्रियात्मिक रूप देखकर ऐसा लगा कि उनको बनाने वाली अवश्यक ही कोई अलौकिक, अदृश्य शक्ति पीछे से कार्य कर रही है। ज्ञान को सुन कर महसूस हुआ कि ऐसा सहज व तर्क संगत ज्ञान और उससे ऊँची से ऊँची प्राप्ति व वास्तविक जीवन से पूर्ण रूप से जुड़ा हुआ अन्यत्र नहीं हो सकता। आश्चर्यवत वह सब कुछ अलौकिक लग रहा था। पाँच सात रोज तक लगातार ज्ञान सुनने पर यह निश्चय हो गया कि परमात्मा के अलावा इतना महान कर्त्तव्य कोई भी नहीं कर सकता।

कुछ दिनों बाद ही पिताश्री ब्रह्मा से मिलने माऊंट आबू जाने का सुअवसर मिला। पिताश्री जी के साथ प्रथम मिलन ही चुम्बक की तरह काम कर गया। वे ऐसे लग रहे थे जैसे कोई प्रकाश (Light) का बना हुआ अद्वितीय फ़रिशता हो जो अपनी तरफ अपनी अलौकिक शक्ति से जादू की तरह खींच रहे थे। उनके प्रथम मधुर बोल "आओ बच्चो ! आओ बच्चो !" ने मुझ आत्मा को हमेशा के लिए अपना मीठा बच्चा बना ही लिया। स्नेह के वे सागर थे, उनके साथ मिलकर ऐसा लगा था कि "इतना प्यार करेगा कौन ?"

परिवार सहित व जब भी अकेले में जाना हुआ सभी का प्यार भरा स्वर रहता था "बाबा" "बाबा", "वाह रे बाबा", कमाल कर दिया। शिव बाबा ने साकार प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा अपना ही अनुभव करवाया कि मैं ज्ञान, सुख, शान्ति और आनन्द का सागर इस शरीर के माध्यम से अपना पुनीत कर्त्तव्य इस सृष्टि पर करने आया हूं। साथ-साथ में, पिताश्री ब्रह्मा ने भी परमात्मा के दिव्य गुणों को अपने कर्त्तव्य द्वारा हम बच्चों को अनुभव कराया। ज्ञान का क्रियात्मिक रूप उन्होंने अपने जीवन की धारणाओं के द्वारा हमारे सामने रखा। उनका जीवन सर्व-शास्त्र शिरोमणि श्रीमदभगवद् गीता में सच्चा प्रैक्टीकल जीवन था।

अपने अनुभव के आधार पर पिताश्री ब्रह्मा ने हमेशा ही उद्योग व व्यापार में भी मुझ आत्मा के पथ प्रदर्शन का कार्य किया। उद्योग व व्यापार में रहते हुए भी अपनी तनाव से परे आत्मिक स्थिति में रह कर न्यारे या साक्षीपन की स्टेज से व्यापार संचालन करने का सफल पुरुषार्थ करवाया। जिस स्टेज से, चाहे व्यापारिक बन्धु हो या श्रमिक वर्ग हो सभी के साथ मैत्रीपूर्ण वातावरण में रहकर आसानी से अधिक सफलता अर्जित करने में कामयाबी मिली।

गृहस्थी को तो बाबा गृहस्थ आश्रम बनाना ही चाहते थे। बाबा तो सभी को स्नेह के सूत्र में पिरोने में अव्वल नम्बर थे ही। परिवार के सभी सदस्य बाबा के स्नेह में आने से परिवार ही बाबा का बन जाता है। पवित्रता इन सबका आधार स्तम्भ है। जब बाबा व पवित्रता है तो गृहस्थ आश्रम (पवित्र स्थान) बन ही जाता है। बाबा ने अपने प्यार से सहज ही गृहस्थ को आश्रम बना दिया। सारा संसार ही हमारा परिवार है, ऐसा अनुभव करा दिया।

इन धारणाओं का आधार था बाबा से बार-बार मास दो मास बाद मुलाकात करना। वह बार-बार का मिलन ही हर बार जीवन में लिफ़्ट का काम करता था। मिलन एक जादू का काम करता था। नई-नई प्रेरणाओं के द्वारा जीवन में आगे बढ़ने का उमंग व उल्लास भर देते थे। जीवन की किसी भी जटिल पहेली को एक क्षण में ही हल कर दिया करते थे। समस्या, उनके सामने जाते ही समस्या नहीं रहती थी। जीवन में आगे बढ़ने का साधन बन जाती थी।

पिताश्री ब्रह्मा व उनके माध्यम से परमपिता परमात्मा शिव से मिल कर और जीवन में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा सिखाये गए सहज राजयोग द्वारा **"जो पाना था सो पा लिया, अब बाकी क्या रहा"** यह कहावत जीवन में चरितार्थ हो रही है। □

मुज़फ्फरनगर में आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन

मुजफ्फ़रनगर में आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन समारोह में (दाएं से) दीदी मनमोहिनी जी (सम्बोधित करते हुए) ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी, भ्राता फ्रांसवा जी, गायत्री मोदी जी तथा ब्र० कु० आशा जी

ब्र० कु० कलावती जी, बहन गायत्री मोदी को लक्ष्मीनारायण का चित्र भेंट करते हुए, कवि जी बाबा की याद में खड़े हैं

पिताश्री निद्राजीत थे

ब्र०कु० मनमोहिनी, आबू पर्वत

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की सहप्रशासिका ब्रह्माकुमारी मनमोहिनी जी ने इस विद्यालय के आरम्भ से ही अपना जीवन पिताश्री जी के साथ व्यतीत किया। ब्रह्माकुमारी मनमोहिनी जी अपने अनुभव के आधार पर लिखती हैं :—

सम्पादक

पिताश्री जी निद्राजीत

कहावत है कि सच्चा योगी वह है जो निद्राजीत हो। उनके व्यस्त जीवन में मैंने सदा उनको निद्राजीत स्थिति में देखा। पिताश्री शत-शत विश्व कल्याण की सेवा में लगे रहते थे। वैसे तो हम सभी की प्रतिदिन की दिनचर्या ऐसे है जो दिन में २ से ४ विश्राम का समय है परन्तु पिताश्री जी केवल एक घण्टा विश्राम के लिए जाया करते थे। उसमें से भी बहुत कम समय आराम करते थे। उदाहरण के तौर पर जब भाई बहनें यहाँ मुख्यालय से प्रस्थान करते समय पिताश्री जी से छुट्टी लेकर आते थे तो मैं हमेशा पिताश्री जी को यही कहती कि आप विश्राम से पहले उन्हें छुट्टी दें। लेकिन नहीं, उनका कहना था कि वह अपने बच्चों को उसी समय छुट्टी देंगे जब उनके जाने का समय होगा चाहे वह विश्राम का समय क्यों न हो। यह सदा हरेक बच्चे की सेवा के लिए सदा तैयार रहते थे।

बाबा की निद्राजीत स्थिति व सर्व आत्माओं के स्नेह का ज्वलंत उदाहरण यह है कि वे हमेशा कहा करते थे कि बच्ची चाहे मैं सोया हूँ, परन्तु अगर कोई बच्चा मुझसे मिलने आये तो मुझे तुरन्त जगाना। ऐसा न हो कि कोई बच्चा बाबा से मिलने से वंचित रह जाए।

उनका सदा यही उद्देश्य रहता कि मानव हृदय की गहराइयों को छू कर उसके अन्दर छिपी हुई सोई शक्तियों को जाग्रत करें। हरेक बच्चा हीनता और छोटेपन के विचारों से ऊपर उठ प्रगति की मन्जिल की ओर बढ़े। मैंने देखा कि पिताश्री के व्यवहार को देख हरेक बच्चा अपने सच्चे परमपिता शिव परमात्मा से अपना अटूट सम्बन्ध जोड़ता था।

मैंने देखा कि जब कभी कोई ऐसा थका हुआ व्यक्ति उनके पास आता तो वह उनकी परेशानी को एक सेकण्ड में समाप्त कर देते थे। वह हमेशा कहा करते कि परेशान क्यों होते हैं? जब अपनी वास्तविक शान अर्थात "हम किसकी सन्तान हैं" उसको भूल जाते हैं" तो परेशान हो जाते हैं। वो हमेशा कहते कि जब आप देह से न्यारे रहेंगे तो थकावट नहीं होगी। सदा अपने को आत्मा समझ उस पिता परमात्मा की स्मृति की शान में रहेंगे तो कभी भी परेशान नहीं होंगे।

मैंने देखा कि पिताश्री जी सदा इसी खुदाई नशे में रहते थे। सर्व प्रकार के कार्य करते हुए भी उनसे निर्लिप्त रहते। यही है उनकी महानता। पिताश्री जी के जीवन को देख कर अनेकों ने प्रेरणा ली।

हर समय हम बच्चों को भी शिक्षा देते हुए सदा न्यारा और प्यारा रहते थे। मेरा वह प्रैक्टीकल अनुभव है कि पिताश्री जी "सदा एक बल एक भरोसा रहते थे"। सदा एक बल एक भरोसा रहने से ही सफलता ही सफलता है।

हम बच्चों के गुणों को देखकर सदा हम सभी को आगे बढ़ाते थे। पिताश्री हमेशा कहते थे कि आप के भीतर जो गुण है वह एक मूल्यवान पूँजी है। यह सभी पूँजियों से अधिक मूल्यवान है। गुणों का उपयोग ही महान उपयोग है। जबकि आपके गुण रूपी इतना खजाना है तो उसका क्यों नहीं सदुपयोग करते हो? आप उस पिता शिव बाबा के बच्चे हो जो कि सर्व खजानों का दाता है।

बाबा अपने अन्तिम वर्ष में, जबकि वे अपनी कर्मातीत अवस्था के बहुत नज़दीक थे, बहुत ही उपराम रहने लगे थे। हमने देखा बाबा बहुत अधिक समय एकान्त मग्न अवस्था का अभ्यास करते थे।

कोई भी बात उनके मन को विचलित नहीं करती थी। योग अभ्यास के द्वारा बाबा का शरीर भी सूक्ष्म हो गया था। वे इस धरती पर फरिश्ते नजर आने लगे थे। उनका अंग-अंग शीतल रूप में देखा। "अंग-अंग शीतल होना सम्पूर्णता की निशानी है" यह उनके जीवन से प्रत्यक्ष हो गया था। मन की सम्पूर्ण शीतलता और सम्पूर्ण योग की स्थिति पर जा चुके थे—ऐसा मुझे आभास होता था। जब भी मैं बाबा के सन्मुख जाती थी तो मैं स्वयं भी अशरीरी हो जाती थी। जब भी मैं उन्हें देखती थी, ऐसा लगता था कि वे यहाँ नहीं हैं। उन्होंने हमें अपने जिम्मेदारी वाले जीवन में करके दिखाया जो अनुकरणीय है।

□

तेरे बिनु बापदादा लागे न जिया हमार !

लेखक—ब्र०कु० रमणीक मोहन, रांची

तेरे बिनु बापदादा, लागे ना जिया हमार
कल्प-कल्प में आता है, संगम युग एक बार
तेरे बिनु बापदादा, लागे ना जिया हमार

आज अठारह जनवरी आई,
चारों दिशाओं में वरदानों की लाली छाई
गोप-गोपियाँ पुकारें, गोपी-वल्लभ को बारम्बार
तेरे बिनु बापदादा, लागे ना जिया हमार

ना बीते ये संगम, सदा चलता ही रहे
बापदादा की गोद में, ब्राह्मण खेलता ही रहे
कौन कहेगा मुझे ?
"बच्चे मीठे बच्चे" बारम्बार
तेरे बिनु बापदादा, लागे ना जिया हमार

सूक्ष्म वतन में बैठे बाबा,
कर रहे बच्चों का इन्तजार
आजा रूहानी मेरे बच्चे-२ उड़कर मेरे पास
तेरे बिनु बापदादा, लागे ना जिया हमार

एक बात कहता हूँ बाबा, ना करना इन्कार
क्या ? आना मेरे बाबा-२,
सतयुग में एक बार
तेरे बिनु बापदादा, लागे ना जिया हमार

□

सूचना : (१) जिन्होंने अभी तक ज्ञानामृत का शुल्क नहीं भेजा वे कृपया शीघ्र भेजें
(२) ज्ञानामृत के लिए लेख, समाचार, फोटो कृपया बी ९/१९
कृष्णानगर में भेजें ताकि देर होने की असुविधा से बचा जा सके।

भोलानाथ के भण्डारे की 'भोली भण्डारी'

का

अलौकिक अनुभव

उनकी ज़बानी — भोली दादी

यूं तो भगवान के सभी बच्चे अति महान हैं और कई उनमें पूर्णिमा के चन्द्र सी छटा बिखेर रहे हैं, परन्तु त्याग की साक्षात् देवी भोली दादी की दिव्यता भी कम शोभनीक नहीं है। उनकी गहन समर्पणता और सरल जीवन की मुस्कुराहट आत्माओं पर अमिट छाप छोड़ देती है। जिनके मन को मान-शान की कामना छू नहीं पाती, उन्हीं के भावों में उनका अनुभव इस प्रकार है— —सम्पादक

जब मैं १३ वर्ष की थी तो कराची में 'ओम मण्डली' तूफ़ान की तरह बहु चर्चित थी। कोई उसे शान्ति का स्थान कह कर उससे चिपक जाना चाहता था और कोई 'घर बिगाड़ने वाली मण्डली' कह कर कुप्रचार में रत रहता था।

इस कम आयु में ही मेरी शादी एक सम्पन्न परिवार में हो चुकी थी। परन्तु मेरे ससुराल वाले दहेज की कमी के कारण मुझे बहुत तंग करते थे। मुझसे बहुत काम कराते थे और प्रथम वर्ष में ही मेरा जीवन अशान्ति की चरम सीमा पर पहुँच चुका था। मैं शान्ति के लिए रोज़ लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में जाती थी।

उसी समय मेरी भेंट मन्दिर में ही मेरी चचेरी बहन से हुई और उसने मेरी दुखभरी कहानी सुन-कर मुझे ओम मण्डली से परिचित कराया। उन्होंने कहा कि वहाँ 'ओम राधा' इतना सुन्दर भजन गाती है जो मन शान्ति की तरंगों से ओत प्रोत हो जाता है।

मैं मम्मा का भजन सुनने वहाँ गई। सुन्दर स्वरों से निकलती गीत की लाइनों—"मैं ओम मण्डली में क्या देखा" ने मेरे मन को वैराग्य से पोत डाला और मेरा मन शान्ति के सागर में डूब गया। तब ओम मण्डली का सत्संग ओम राधा (मम्मा) ही कराती थी। मुझे ध्यानी बहन के योग कराने से बहुत चैन मिला और मैंने निर्णय कर लिया कि मेरी शेष जीवन की घड़ियाँ अब यहीं बीतेंगी।

परन्तु जैसे ही मेरे ससुराल वालों को मेरे इस ईश्वरीय आकर्षण का पता लगा तो उन्होंने कटु वचन प्रहार बाबा के चरित्र पर करना प्रारम्भ किया और वे मुझे वहाँ जाने से रोकने लगे और अनेक सुख-सुविधाओं का प्रलोभन देने लगे। परन्तु मेरा मन तो प्रभु-प्रेम में रम चुका था। यह देखकर वे मुझे कराची से हैदराबाद ले गये ताकि मेरा सम्पर्क टूट सके और तब मैं तीन वर्ष वहीं पर रही।

हैदराबाद में ही मेरे माँ-बाप रहते थे। वहाँ पर मेरा मन बाबा से मिलने के लिए बहुत ही चिन्तित रहता था। तो एक दिन जबकि सभी मन्दिर में गये हुए थे, मैं वहाँ से निकलकर अपने माँ-बाप के पास पहुँची। मैंने अपनी दुखभरी गाथा अपनी माँ को सुनाई। मेरी करुण कहानी पर मेरी माँ के नयन भर आये और उन्होंने मुझे धैर्य दिलाते, दोबारा वहाँ न भेजने का आश्वासन दिलाया।

परन्तु तब हो मेरी सास पांच माताओं के साथ वहाँ आ पहुँची और उन्होंने मुझसे अच्छा व्यवहार करने का वचन दिया और मेरी माँ के आगे हाथ जोड़कर मुझे वापिस ले गई। परन्तु मेरा मन वहाँ न लगा। मैं फिर माँ के पास आ गई और फिर कभी ससुराल नहीं गई।

मुझे याद है, तब मैं हैदराबाद से तड़पन भरे पत्र बाबा को लिखती थी कि बाबा आप मुझे कब बुलाओगे, मेरी इस नैया के खिवैया तो आप ही हैं। अगर आप मुझे शरण न देंगे तो मैं मीन बिनु नीर की तरह मर जाऊँगी। और बाबा के बहुत ही धैर्य व सान्त्वना देने वाले पत्र मुझे मिलते थे। तब वे पत्र ही मेरे सहारे थे।

फिर तो एक रात १२ बजे की गाड़ी से मैं अपने माता-पिता सहित बाबा के पास आ गई और रोती-रोती बाबा से मिली। मैंने कहा था—बाबा, मैं कहाँ जाऊँ···आप मेरी रक्षा करो···। मेरे आलाप सुनकर उस दया के सागर का कंठ करुणा से भर गया था और देखने वालों ने उनके नयनों में चमकते दो मोती देखे थे जिससे मेरे भविष्य की तस्वीर घड़ी गई थी।

बाबा ने मेरे लिए एक अलग मकान लिया और मैं अपने मां बाप के साथ वहाँ रहने लगी। मैं रोज़ सिलाई सीखने व ज्ञान श्रवण करने ओम मण्डली में जाती थी। अब मेरे जीवन की कलियाँ खिलने लगी थी·· तब मुझे एक छोटी सी बच्ची भी थी, जो अभी मधुबन में ही मीरा के नाम से जानी जाती है।

परन्तु अभी मेरा कर्म खाता समाप्त नहीं हुआ था। एक दिन प्रातः ४ बजे मेरा पति ४ व्यक्तियों सहित मकान में घुस आया। मेरी गोद में मीरा थी, उन्होंने मीरा को दूर फेंका, मेरे माँ-बाप को पीटा और मुझे ८० सीढ़ियों से घसीटते हुए नीचे ले आये और कार में डालकर अपने घर ले गये। तब मेरे कपड़े फट चुके थे, सिर से खून बह रहा था और मैं बाबा-बाबा कह कर चिल्ला रही थी। तब सुबह के ६ बजे थे।

वहाँ मेरे पति ने मुझे बहुत प्रलोभन दिये। उधर मेरी माँ पुलिस में खबर कर आई थी। तो लगभग १० बजे वहाँ का सूबेदार वहाँ आ पहुंचा। वे सभी जाँच करने के बाद घोड़े गाड़ी में बैठाकर मुझे कोर्ट में ले गये और मुझसे सारी बातें पूछी। फिर तो केस चला और पति ने कई उल्टी सुल्टी बातें की। केस ३ वर्ष तक चलकर मेरे ही हक में समाप्त हुआ। तब मैंने अनुभव किया कि शिव बाबा मेरे द्वारा ऐसी-२ बातें जज को कहलवाता था, जिनका मुझे ज्ञान नहीं था।

इस प्रकार मेरे गम के बादल हट गये और जीवन में सुख-शान्ति का सूर्य उदित हुआ। मुझे सेवा में बहुत रुची थी। बाबा ने मुझे ३५ छोटे बच्चे सम्भालने को दिये। उनकी पालना मैं कई वर्षों तक माँ की तरह करती रही।

मुझे बाबा का स्नेह व मस्तक का तेज बहुत आकर्षित करता था। मुझे बाबा में पूर्ण निश्चय था। मैं सोचती थी कि कितनी सौभाग्यशाली हूं मैं जो भगवान के साथ रहती हूं, कानों से उनके मधुर बोल सुनती हूं। और नयनों से उनका हर चरित्र देखती हूँ।

फिर मुझे मम्मा की सेवा का अवसर मिला और फिर कुछ समय बाद भण्डारे में भोजन बनाने की सेवा। तब मैं ३५० भाई-बहनों का भोजन बनाया करती थी और कुछ समय बाद पूरे भण्डारे की ज़िम्मेदारी ही बाबा ने मुझे दे दी। और साथ ही साथ 'अथक भव' का वरदान भी दिया।

भोली दादी ने अति भाव-विभोर होकर बताया

कि जब मैं अकेली होती हूं तो सोचती हूं कि कैसे हमारे जीवन के ४५ वर्ष बीत गये। जीवन में सब कुछ देखा। भगवान का असीम प्यार भी देखा और शिक्षाओं का शृंगार भी देखा। बाबा की अनूठी मस्ती भी देखी और राजाई शान भी ··

बाबा रोज़ किचन (रसोई) में दो बार आते थे। मैंने बाबा को कहा हुआ था कि आप किचन में रोज़ चक्कर लगाने जरूर आओ। बाबा रोज आकर मेरी पीठ थपथपाते थे, तो मेरे नयन भर आते थे। और सारी थकान बाबा उन हस्तों से सोख लेते थे। बाबा मुझे वरदान के दो बोल भी रोज़ बोलते थे।

कभी बाबा आकर कहते थे – बच्ची बहुत सेवा करती है—'अमर रहो बच्चो'। कभी कहते थे—"तुम तो अखण्ड ज्योति हो"—क्योंकि मैं बहुत कम सोती थी। कभी कहते थे—"तुम अथक हो, आल राउण्डर हो"। मेरा बाबा से असीम प्यार हो चुका था। मैं इन्तजार किया करती थी कि बाबा कब आये। बाबा मुझे कहा करते थे, बच्ची जब भी आवश्यकता हो, तो इसी किचन के वस्त्रों में मेरे पास आ जाया करो। जब कोई मददगार नहीं होता था तो बाबा कहते थे कि बच्ची मैं मदद करूँ···बाबा कहते थे कि बच्ची अगर बाबा सोया भी हो तो तुम आकर उठा दिया करो। ऐसे थे हमारे जान से भी प्यारे बाबा···

साकार में अन्तिम दिन १८ जनवरी को भी बाबा किचन में आये थे और कहा था, "बच्ची मैं आया हूं ऐसे नहीं कहना कि बाबा आया नहीं।" मुझे क्या पता था कि ये बाबा के आखिरी बोल होंगे और दोबारा वो मन को मोह लेने वाली आवाज़ सुनाई नहीं देगी। परन्तु आज भी अव्यक्त रूप में बाबा रोज़ वैसे ही किचन में चक्कर लगाते नज़र आते हैं।

बाबा के अव्यक्त होने पर मैंने अपने को अकेला महसूस अवश्य किया था और मुझे काफ़ी शोक हुआ था। मेरा मन रोता था कि बाबा के बिना मेरा जीवन अब कैसे चलेगा। एक दिन की बात है—मेरी तबियत इसी चिन्ता में बहुत खराब हो चुकी थी और मुझे अहमदाबाद भेजा जा रहा था। उस दिन अव्यक्त बाबा आये थे। बाबा ने मुझे बुलाकर अपने पास बिठाकर मेरे सारे शरीर पर हाथ फेरा था और कहा था, बच्ची तुम मायानगरी में नहीं जाना, बाबा तुम्हारे लिए वतन से दवाई भेजेंगे। बाबा ने तब मुझे बहुत प्यार किया। देखने वालों के मन पर पुराणों की गाथा उभर आई थी और मैं बाबा की दृष्टि पाकर ही स्वस्थ हो गई थी। और मैं अहमदाबाद नहीं गई थी।

कर्मयोगिनी भोली दादी भण्डारे में

कुछ प्रश्नों का उत्तर भोली दादी ने इस प्रकार दिया।

प्रश्न—आप पुरुषार्थ में किन किन बातों पर ध्यान रखती हो ?

उत्तर—१. मेरे द्वारा किसी को दुख न हो।

२. बाबा के भण्डारे से सभी सन्तुष्ट होकर जाएँ।

३. मेरे मुख से कभी 'ना' न निकले।

४. यज्ञ का थोड़ा भी नुकसान न हो।

प्रश्न—योग के लिए आप क्या करती हो ?

उत्तर—बाबा से तो मेरा अथाह प्यार है और मैं बाबा के कमरे में भी जाती हूँ और ध्यान रखती हूँ कि बाबा को याद करती रहूँ।

प्रश्न—आजकल आपका कोई विशेष पुरुषार्थ ?

उत्तर—हाँ, उपराम वृत्ति। स्वत: ही मन उपराम होता जा रहा है। मैं किसी भी बात को जल्दी ही समाप्त कर देती हूँ। □

पिताश्री–एक अलौकिक चुम्बकीय व्यक्तित्व

ब्र०कु० ओमप्रकाश, इन्दौर

पिताश्री जी के साथ ब्र०कु० ओमप्रकाशजी

उस समय मैं इंजीनीयरिंग कालेज का विद्यार्थी था। कुछ समय पूर्व ब्र०कु० बहनों द्वारा ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग का अच्छा अनुभव हो चुका था। ज्ञान में यह बात विशेष रूप से बड़ी विचित्र थी कि स्वयं शिव प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा यह ज्ञान दे रहे हैं। जब यह ज्ञान सुना था, इस बात की तीव्र उत्कण्ठा थी कि कब पिताश्री जी से रूबरू भेंट हो। मैं पटियाला में था जहाँ संस्था का कोई केन्द्र उस समय नहीं था। मुझे अम्बाला से पत्र प्राप्त हुआ कि एक पार्टी मुख्यालय माऊँटआबूजा रही है। यह समाचार मिलते ही मैंने भी जाने की तैयारी करनी शुरू कर दी। बहुत प्रकार की रुकावटें सामने आईं। परन्तु लगन और ही अधिक बढ़ती गई आबू पहुंचे १९५० की शरद ऋतु थी। मुख्यालय पहुंचने पर ऐसा महसूस हुआ जैसे अपने घर आए हैं। स्नान कर सारी पार्टी कमरे में बैठी। उस समय मुख्यालय कोटा हाऊस में था जोकि वर्तमान समय राजस्थान राज्य का सर्किट हाऊस है। थोड़ी देर में पिताश्री मातेश्वरी दोनों आकर सामने बैठे। कुछ क्षणों के लिए अंदर द्वंद चलने लगा कि इनका अभिवादन कैसे करें क्योंकि हमें यह बहनों ने नहीं बताया था कि यहाँ अभिवादन की पद्धति क्या है। देखते-देखते कुछ क्षणों में सारे संकल्प शान्त होगए एवं अनुभव होने लगा हमारे सामने एक बहुत बड़ा चुम्बक हमें खींच रहा है। लगने लगा मैं तो एक छोटा-सा बच्चा हूं, एवं मेरे सामने असली माता-पिता बैठे हैं जिससे मैं कई जन्मों से बिछड़ा हुआ हूं। नेत्रों से गंगा-यमुना बह निकली। कुछ ही क्षणों में मैं पिताश्री जी की गोद में बैठा हूं एवं उनसे लिपट गया हूं जैसे एक बच्चा अपने बाप से बिछुड़कर मिलता है। पिताश्री अपने रूमाल से बड़े स्नेह से आँसू पोंछ रहे हैं। उनके मुख से मेरे कानों में कुछ शब्द सुनाई दिये "यह मेरा बहुत निजी प्यारा (स्नेही) बच्चा है, रूहानी सेना में यह कैप्टन बनेगा आदि २" बहुत छोटी आयु थी, कुछ अनुभव नहीं था। ब्रह्मा के मुख द्वारा निकले ये शब्द ब्रह्म वाक्य अकाट्य सत्य बन गए। वरदान बन गए। भविष्य में जब भी मैं पिताश्रीजी से मिलता वह चुम्बकीय आकर्षण सदैव मुझे मेरी अन्तरआत्मा को खींचता रहा। यूं तो जीवन में कई महात्माओं अथवा महापुरुषों से मिलना होता है परन्तु इस प्रकार का मिलन का आकर्षण ही एक अद्भुत बात थी। सच में अलौकिक था चुम्बकीय व्यक्तित्व पिता श्री जी का।

□

"नई उमंगें लेकर आया है नव वर्ष"

ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश, मधुबन, आबू

पुरुषार्थी जीवन में उमंग की महती आवश्यकता है। हर लौकिक कार्य या पढ़ाई उमंग से ही सफ़ल होती है। उमंग होने पर थकान और निराशा नहीं होती तथा खुशियों का खज़ाना भरता जाता है। उमंग विघ्नविनाशक बनने का सुन्दर हथियार है।

जैसे लौकिक कार्यों में सफ़लता और उन्नति उमंग को बढ़ा देती है वैसे ही अलौकिक मार्ग में जीवन की सरलता और अनुभूतियाँ प्रतिदिन नई उमंगों को प्रेरक बन जाती हैं।

हम प्रति दिन का अमृतवेला किसी विशेष उमंग के साथ प्रारम्भ करें तो इस ब्रह्ममुहुर्त का हम पूर्ण आनन्द प्राप्त कर सकेंगे। और इस उमंग को कायम रखने का सफल तरीका है कि हम कोई नया लक्ष्य अपने पुरुषार्थ का हर रोज़ निर्धारित करें।

जो कुछ भी पिछला वर्ष हमें सिखाकर गया उसे समाकर हम आगे बढ़ें और अगर कुछ अप्रिय घटनाएं हमारे जीवन में हुई हों तो हम उन्हें भुला कर दौड़ लगायें। बीते वर्ष को निराशाओं को ठुकराकर हम नये वर्ष को ऐसे उमंगों से प्रारम्भ करें जो बीती हार हमें अनुभवी होने का आभास कराये।

मन को हमेशा ही कुछ नया चाहिए। बार-बार वही बात मन स्वीकार नहीं करता। कई पुरुषार्थी बहुत काल ज्ञान मार्ग पर चलने के बाद काफ़ी थके हुए हैं और निराश होकर संगम युग की समाप्ति का इन्तज़ार कर रहे हैं। परन्तु ये ईश्वरीय मिलन का काल अति सुखद है - ये अनुभव अब सबको ही करना होगा।

उसके लिए हम सभी मिलकर आने वाले वर्ष के लिए कुछ नई उमंगें मन में भर दें और उन्हें पूर्ण करने में जुट जायें ताकि एक ही वरदानी वर्ष में हम सर्व प्राप्तियों का अनुभव कर सकें। मेरे ख्याल में कुछ इस प्रकार हम अपनी उमंगें बढ़ाये।

सर्व प्रथम तो हम यह जानते हैं कि पवित्रता इस समय का वरदान है। पवित्रता ही पूरे कल्प का मूल आधार, परम आनन्द का साधन व ईश्वरीय सुख का कारण है। इसके द्वारा ही हम पूरा कल्प प्रकृति का सुख उपभोग करेंगे। अतः इस वर्ष अपनी पवित्रता को सम्पन्न करने का एक दृढ़ संकल्प हम मन में करें। देह रूपी मिट्टी का आकर्षण हम समाप्त करें। इसके लिए हम अपनी एक दृढ़ स्मृति बनायें कि "मैं सम्पूर्ण पवित्र आत्मा हूं"। जब भी कोई अपवित्रता मन में प्रवेश करे, उसे इस शुद्ध संकल्प से समाप्त कर दें। ऐसा पुरुषार्थ करने से हम जीवन में बहुत ही हल्कापन महसूस करेंगे और पवित्रता के बल से समस्याओं को समाप्त होते देखेंगे।

दूसरी बात—हम मन में सभी के प्रति सत्कार धारण करें। सत्कार देना हमारी वृत्ति बन जाए। क्योंकि भगवान के सभी बच्चे महान हैं, अगर हम ऐसी महान और पवित्र आत्माओं का ही सत्कार नहीं करेंगे तो किसका करेंगे। इससे दूसरों के प्रति हमारे बोल व व्यवहार में दिव्यता आ जाएगी और संगठन एक शक्ति के रूप में प्रकट हो सकेगा जिससे हम इस ईश्वरीय कार्य में बहुत सहयोगी होंगे।

तीसरी बात—हम अपने से पूछें कि हम यहाँ क्यों आये हैं? जब हमें ज्ञान मिला, हमने अपना क्या लक्ष्य निर्धारित किया था, उसे हम पुनः दृढ़ करें। हम अपने मूल कर्तव्य को छोड़कर अन्य बातों में न जायें। तेरी-मेरी, मान-अपमान में हम अपने समय को न लगायें। हम रोज़ अपने से यह पूछें—"मेरा लक्ष्य क्या है और मैं क्या कर रहा हूं"।

चौथी बात—इस ईश्वरीय कार्य में जहाँ हम

कई प्रकार से सहयोगी बनते हैं वहीं साथ-साथ हम मन के भी सहयोगी बनें। सर्व प्रथम तो हम अपने ही मन से व्यर्थ के इतने वाइब्रेशन न फैलायें जो उन्हें शुद्ध करने के लिए अन्यात्माओं को मेहनत करनी पड़े और दूसरे हम अपने व्यर्थ बोल व मनसा के द्वारा उन पवित्र आत्माओं के मार्ग में बाधक न बनें जो इस स्थापना के कार्य में या स्व उन्नति के कार्य में पूर्ण रूप से तत्पर हैं। अर्थात् मन की शुभ-भावनाओं का पूर्ण सहयोग हम सभी आत्माओं को दें।

पाँचवीं बात—दृष्टि कोण को विशाल बनाने के लिए मनन शक्ति को बढ़ाना आवश्यक है। क्यों कि यह देखा गया है कि अनेक व्यर्थ तूफ़ानों का कारण सीमित विचार धारा है। मनन करने से आत्मिक शक्ति भी बढ़ती है और ईर्ष्या-द्वेष, घृणा आदि बातों से हम सहज ही किनारा कर सकते हैं। इसके लिए प्रति दिन १० मिनिट एकान्त का समय निश्चित कर ज्ञान, धारणा की किसी बात पर मनन करना चाहिए।

इसी प्रकार अगर हम अपनी श्रेष्ठ धारणाओं की योजना स्वतः ही बनायें और उमंग उत्साह के साथ आगे बढ़ें तो हमें सर्व ईश्वरीय अनुभूति करने से धरती की कोई भी ताकत रोक न सकेगी और हमारी उमंगें अनेकों को उमंग दिलायेंगी। □

बात दादा ने हमको बताई ?

ब्र० कु० अमरचन्द सहपऊ (मथुरा)

याद बाबा को तुम बच्चे कर लो, बात दादा ने हमको बताई।
माया जोड़े ये बन्धन तुम्हारा, मुक्ति युक्ति से हमने भी पाई!
याद बाबा को तुम·····

संगम जैसा समय ये सुहाना, कल्प में एक ही बार आना
भाग्य जितना भी चाहो बना लो, वरसा सतयुग का संम्पूर्ण पा लो
जन्म इक्कीस भोगो राजाई !
याद बाबा को तुम·····

छोड़ो गफ़लत ये बाबा बताते, ज्ञान गीता का सच्चा सुनाते
योग तुमको सिखाते हैं आकर, योगी बन जाओ यह ज्ञान पाकर
योग से ही कटेगी बुराई !
याद बाबा को तुम·····

बाबा का ये तो ला है पुराना, हर कल्प में है संगम पे आना
जन्म अन्तिम है सोचो यहाँ पर, शान्ति सुख तो मिलेंगे वहाँ पर
याद में ही सभी की भलाई !
याद बाबा को तुम·····

याद बाबा को तुम बच्चे करलो, बात, दादा ने सबको बताई
जिससे कट जायें बन्धन तुम्हारे, मुक्ति युक्ति से हमने भी पाई
याद बाबा को तुम बच्चे करलो, !·····

शिव बाबा ! ब्रह्मा बाबा !

ब्र० कु० राम ऋषि शुक्ल, लखनऊ

वेद-पुराण-शास्त्र ने जिनका यशोगान है गाया ।
उन ब्रह्मा बाबा को हमने इस जीवन में पाया ।
काल-जर्जरित सृष्टि पुरानी हुई महा दुःखदायी
नयी सृष्टि की नव-रचना की मंगल-बेला आयी;
परमपिता शिव ने तब अपना शुभ-संकल्प चलाया
ब्रह्मा के साधारण तन को निज आधार बनाया ।
हमने प्यारे शिव बाबा को ब्रह्मा तन में पाया ।

निराकार शिव हुए अवतरित इस जग के जीवन में
कल्प-कल्पवत् वृद्ध मनुज के साधारण-से तन में;
जिनको निराकार ने अपना रथ साकार बनाया
जिनके तन से मानवता का सुख-सौभाग्य जगाया ।
हमने उन ब्रह्मा के तन में शिव बाबा को पाया ।

शिव बाबा ने ब्रह्मा-मुख से पावन वचन उचारे
वेद-पुराण-शास्त्र-गीता के भेद खुल गए सारे;
क्या परमात्मा क्या हम आत्मा क्या यह जग क्या माया !
कैसे आत्मा धारण करती 'लख चौरासी' काया ?
शिव बाबा ने ब्रह्मा-मुख से सकल रहस्य सुनाया ।

शिव बाबा ने हमें सुनाई सच्ची भगवद् गीता
योग सिखाया जिससे जाता काम-शत्रु को जीता;
आदि-मध्य का और अन्त का ज्ञान सुनाया सारा
दिव्य ज्ञान वह, जिससे आत्मा बनती ज्ञान-सितारा ।
शिव बाबा ने ब्रह्मा-तन से फिर सौभाग्य जगाया ।

ज्ञान-सूर्य शिव, ज्ञान-चन्द्रमा प्यारे ब्रह्मा बाबा
हम सब ज्ञान-सितारे, प्यारी माँ अपनी जगदम्बा;
पुनः मिले हम कल्प पूर्ववत् युग परिवर्तन लाने
कलियुग से जर्जर पृथिवी को सतयुग स्वर्ग बनाने ।
शिव बाबा ने ब्रह्मा द्वारा अपना हमें बनाया ।

वेद-पुराण-शास्त्र ने जिनका यशोगान है गाया ।
उन ब्रह्मा बाबा को हमने इस जीवन में पाया ।।

पिताश्री के जीवन से सीखी कई अनुभव की बातें

ब्र० कु० रमेश गामदेवी, बम्बई

एक छोटी सी बात है। सन् १९६५ में देहली में पहली बार प्रदर्शनी हो रही थी। उसी निमित्त पिताश्री जी देहली जा रहे थे. मैंने भी उनके साथ देहली जाने का प्रोग्राम बना लिया और इस तरह मैं साकार बाबा के साथ आबू से देहली पहुंचा। देहली पहुंचते ही पिताश्री जी क्लास में गए और मुरली चलाने लगे। इतने में ही मुझे वहां पर एक भाई मिला और उसने मुझे बतलाया कि वह आज ही बंगलोर जा रहा है। उन दिनों में मातेश्वरी का निवास बंगलोर में था। मैंने तुरन्त ही बाबा की उस दिन की मुरली के कुछ नोटस तथा एक पत्र मातेश्वरी के नाम से लिखकर उस भाई के सुपुर्द किया।

थोड़े समय के पश्चात वह भाई पिताश्री जी से मिलने के लिए आया और उसने कहा कि 'मैं आज बंगलोर जा रहा हूँ, कुछ काम हो तो बताइये।' तब पिताश्री जी ने कहा मातेश्वरी तो वहाँ ही हैं और उनके लिए पत्र लिखना चाहिए था लेकिन अब तो समय नहीं है। ऐसा सुनते ही मैंने कहा 'बाबा मैंने आज की मुरली के नोट्स तथा एक पत्र मातेश्वरी को लिखकर उनके साथ दिया है।' तब बाबा ने मुस्कराते हुए कहा कि देखा बाबा और बच्चा दोनों इकट्ठे ही देहली में आए परन्तु बच्चे ने पहले मम्मा को याद करके पत्र लिख दिया। इस तरह बच्चा पत्र लिखने में बाबा से भी आगे चला गया। इस पर मैंने हंसते-हंसते कहा कि बाबा, मुझे इस भाई के जाने का प्रोग्राम पहले मालूम हो गया था इसलिए मैं पत्र लिख सका आपको भी यदि यही बात पहले मालूम होती तो आप भी पत्र लिखते। बाबा ने कहा 'नहीं, वह बात तो और है लेकिन अभी तो बच्चे ने पत्र लिख दिया था इसलिए बच्चा तीखा चला गया।'

मीठे बाबा के इन महावाक्यों से मुझे एक बात की अनुभूति हुई कि मैंने एक छोटा सा काम पत्र लिखने का किया परन्तु बाबा ने मेरी इस छोटी बात को उठाकर इतनी अच्छी प्रशंसा की कि जिससे मुझे वह कला अपने जीवन में अधिक बढ़ाने की प्रेरणा मिली। इस तरह से पिताश्री जी के पास औरों के गुण या विशेषताओं को परखने की विशेष शक्ति थी। सिर्फ परखने की शक्ति नहीं परन्तु परखने के बाद उस शक्ति को प्रोत्साहन देने योग्य शब्द कहने की भी शक्ति थी। इस प्रकार का व्यवहार करके बाबा ने मेरे में उस गुण की वृद्धि करने का उत्साह बढ़ाया।

दूसरों के गुणों को पहचानना और उन गुणों की उसमें वृद्धि हो इसलिये विशेष शब्दों का उच्चारण करना यह कोई खुशामद नहीं है परन्तु यह एक आवश्यक व्यवहारिक कर्म है जो करना बहुत ज़रूरी है और उसी प्रशंसा के समय पर किसी की ग्लानि करना जरूरी नहीं है। अन्य को ग्लानि न करते हुए प्रशंसा व उत्साहवर्धक शब्दों का उच्चारण करना अति आवश्यक है। इसका मतलब यह नहीं है कि हमें अन्य के अहम् को प्रोत्साहन देना है। शिव बाबा और शास्त्रों के ज्ञान में यही अन्तर है कि शास्त्रकार सभी प्रकार के अहम् को दोषारोपण (Condemn) करता है परन्तु शिव बाबा कहते हैं कि 'मैं आत्मा हूँ', यह भी एक अहम् है, 'मुझे लक्ष्मी-नारायण बनना है'—यह भी एक अहम् है परन्तु यह अहम् एक लक्ष्य और लक्षण के रूप में है। सतोप्रधान अहम् है या तो कहें उन्नति के पथ पर प्रेरणा देने वाला अहम् है, जबकि रजोप्रधान और सतोप्रधान अहम् भी हो सकते हैं। तमोप्रधान अहम् दुखदायक है परन्तु सतोप्रधान अहम् दुखदायी नहीं। इसीलिये बाबा ने योग में, हम बच्चों को कहा है कि आत्म-अभिमानी और परमात्मा-अभिमानी बनो और देह का अभिमान छोड़ो।

इस तरह से बाबा ने हम बच्चों के गुणों को

परख करके गुणों की वृद्धि के अर्थ अनेक प्रकार के प्रोत्साहन युक्त शब्द उच्चारण किये जिससे हम आत्मायें उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकीं। यही शिक्षा हमें पिताश्री जी के जीवन से सीखनी है।

दूसरी एक और बात मैंने पिताश्री जी से सीखी। शिव बाबा ने योग के द्वारा जो आठ शक्तियाँ प्रदान की हैं उसमें समेटने की शक्ति एक शक्ति है। समेटने की शक्ति दुनिया के हर एक व्यक्ति को अपने व्यावहारिक और आध्यात्मिक जीवन में अपनानी पड़ती हैं। जैसे लौकिक दुनिया में हर एक व्यक्ति को शरीर तो छोड़ना ही है परन्तु उसके पहिले अपने कारोबार को समेटना जरूरी है। कानूनी दृष्टिकोण से समेटने की बात कैसे प्रश्न उत्पन्न कर सकती है उसके मैंने कई उदाहरण अपने व्यावसायिक जीवन में देखे हैं। चाहते हुए भी एक व्यक्ति, देह छोड़ने के पूर्व, अपना कारोबार संपूर्ण रूप से समेट नहीं सकता। चाहे वह व्यक्ति एक छोटे से परिवार का कर्त्ता-धर्ता हो, या कोई छोटे-बड़े व्यापार का मालिक हो या कोई छोटे-बड़े मंदिर अथवा आश्रम का मुखिया हो। परन्तु सभी जगह पर समेटने की शक्ति का यथार्थ उपयोग न होने के कारण व्यक्ति अपने पीछे अनेक प्रकार की समस्याएँ औरों के लिए छोड़ जाता है। और इसीलिये देखा गया है कि कई बड़े-बड़े घरों में इसी के कारण कई समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं।

परन्तु ब्रह्मा बाबा के व्यक्तिगत जीवन में मैंने देखा कि बाबा ने अपने व्यक्तिगत जीवन की हर एक बात इतनी सुन्दर रीति से समेटी हुई थी कि उनके पश्चात किसी को, कोई भी प्रकार की समस्या उत्पन्न नहीं हुई। इसी तरह से इतने बड़े ईश्वरीय विश्वविद्यालय का भविष्य में संचालन कैसे हो, उसके बारे में हर प्रकार का स्थूल एवम् सूक्ष्म मार्गदर्शन बाबा ने दिया था। जिस कारण बाद में उस रास्ते पर चलने वाले अनुयायियों को कोई समस्या नहीं आई, इतना ही नहीं बल्कि कोई कानूनी, आर्थिक, व्यावहारिक व आध्यात्मिक प्रश्न उत्पन्न न हुए। यह एक समेटने की शक्ति का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण साकार बाबा के जीवन से हमें मिलता है।

हमें भी यह देह, देह के सम्बन्ध, व्यवहार तथा कारोबार छोड़ना ही है। अतः क्यों नहीं हम ऐसा अपना कारोबार समेट लें कि पीछे हम अन्य किसी के लिए समस्या न बनें तथा और कोई हिसाब न रह जाए जिसको चुकतू करने के लिए नया जन्म लेना पड़े या धर्मराजपुरी में जाकर सजा खानी पड़े। जिस तरह से ब्रह्मा बाबा ने अपना सारा ही कारोबार समेटा, ऐसे ही हमें भी अपना सभी प्रकार का कारोबार समेटने में पूर्ण रूप से सफलता मिले---यही शिक्षा लेकर सबसे बड़ी श्रद्धान्जली हम ब्रह्मा बाबा को दे सकेंगे।

उसी तरह बाबा के जीवन में मैंने एक बात देखी कि वह कर्मकांड या झूठी भावनाओं की बात को नहीं मानते थे। वे वास्तववादी ज्यादा थे। वास्तविक और व्यावहारिक यथार्थता के आधार पर वह अपना जीवन व्यवहार तथा सेवा का व्यवहार करते थे। जिससे क्या होता था कि सामने वाले व्यक्ति को आत्मसंतोष मिलता था। भक्तिमार्ग के कर्मकांड तथा अंधश्रद्धा की बातों से वह हमेशा दूर रहते थे। उसी बारे में दो बातें या प्रसंग मेरे अनुभव में आए। एक था १९६५ की जून मास का। मातेश्वरी जी ने अपना पार्थिव शरीर छोड़ दिया था। कई बहिन-भाई उसी समय मधुबन में आ पहुँचे। मेरी अपनी इच्छा थी कि हमारी टीचर्स बहिनों की ट्रेनिंग अर्थ भट्ठी के कार्यक्रम का आयोजन हो। दो बार अपनी मुरली में उसी के लिए सूचना छप चुकी थी। परन्तु कई कारणों से वह हो नहीं पाई। अब उस समय फिर यह ट्रेनिंग की बात निकली। करीब १३ टीचर्स बहनें थीं मधुबन में। मैंने यह ट्रेनिंग की बात सब से निकाली। सब ने कहा कि अब तो सारा पांडवभवन आए हुए भाई-बहिनों से भर गया है। तो फिर हम सब पिताश्री के पास गए। तो पिताश्री जी ने फौरन हमारी बात मान ली और लच्छू बहिन

को कहा कि भट्टी के लिए हवाई महल-मकान खाली कर दो। बाकी सबके लिए रहने का अलग प्रबंध हो गया, किन्तु मैं रह गया। तो जब पिताश्री जी के साथ बात निकाली, तो बाबा ने कहा—"अरे बच्चे तुम तो मालिक हो, बाबा के कमरे में सो सकते हो। अरे, बाबा की खटिया पर भी सो सकते हो, क्योंकि बाबा तो बहुत समय नींद नहीं करते।" मैंने आभार के साथ उस बात को अस्वीकार किया। आखिर में ४ रोज दोपहर में मैं बाबा की झोंपड़ी में सोया और रात को मिलने के लिए आने-जाने वालों के लिए जो कमरा है वहाँ पर सोने का प्रबन्ध किया। अर्थात् इस तरह से दोनों बाबा का कमरा है या बाबा की झोंपड़ी है उसी में कोई कैसे सो सकता है, ऐसी भावना-प्रधान बात को बाबा नहीं मानते थे। क्योंकि वे हमें अपने बच्चों की दृष्टि से देखते थे, न कि कोई भक्त या शिष्य आदि की दृष्टि से।

उसी तरह बम्बई में जब पिताश्री आए थे तो एक समस्या बहिनों के सामने आई। गुरुवार के दिन भोग करीब प्रातः के ८ बजे लगता था। कई भाइयों को दफ्तर आदि जाना था। उसी कारण तब तक बैठ नहीं पाते थे। तो समस्या थी कि उन्हें कैसे भोग पहले दिया जाए? अर्थात् पहले शिव बाबा को भोग स्वीकार कराए बिना कैसे बच्चों को भोग बाँटा जाए? तो बहिनों ने पूर्ण श्रद्धा के साथ निर्णय किया कि शिव बाबा को भोग लगाए बिना भोग कैसे क्लास के भाई-बहिनों को दिया जा सकता है। परन्तु परिणाम यह हुआ कि ऐसे जल्दी जाने वाले बहिन-भाइयों को भोग-प्रसाद नहीं मिलता था। बात फिर बाबा के पास गई। बहनों ने अपने विचार सुनाए। तब बाबा ने कहा—"बच्ची, तुम्हारी बात बिल्कुल सही है कि पहले बाबा को भोग स्वीकार कराया जाए। परन्तु उसी कारण देखो बच्चों को भोग न मिले, यह कैसे कोई बाप सहन कर सकता है? लौकिक में ऐसा नहीं होता कि बाप ने भोजन नहीं किया तब तक बच्चों को भोजन न मिले। लौकिक बाप भी सोचेगा कि पहले बच्चे भोजन करें फिर मैं भोजन करूँगा। तो ये तो सबका रूहानी बाप है, अपने कारण बच्चों को भोजन-भोग न मिले, वो यह कैसे सोच सकता है? तुम बच्ची ऐसा करो—बाबा के भोग के लिए सब सामग्री अलग कर दो, बाद में बच्चों को भले भोग बांटो।" इस तरह से पिता श्री जी ने एक वास्तववादी पिता की दृष्टि से समस्या का मीठा समाधान दिया। बाबा की दृष्टि हमारी ओर बाप-बच्चों की थी, और है। आज भी जब हमारे सामने ऐसी कोई समस्या आवे तो अगर हम भक्तिभाव की दृष्टि से उसका मूल्यांकन न करें परन्तु बाबा की दृष्टि से अर्थात् दूसरों के प्रति बच्चे या भाई भाई की दृष्टि से सोचें तो ये जो समाधान (Solution) हम नक्की करेंगे यह सोने पर सुहागे जैसा मीठा और प्रिय होगा।

इस प्रकार विशेष दृष्टिकोण से हरेक व्यवहार दैवी परिवार में हो तो यह परिवार की खुशबू या मिठास हमारे हरेक कार्य में आएगी तथा इससे सबको परिवार का स्नेह और एकता का सच्चा दर्शन होगा। यह विशेष दृष्टिकोण तब आएगा जब हम अंधश्रद्धा या पुराने संस्कारों के मापदंड के आधार से नहीं, परन्तु पिताश्री जी का जो कार्य व्यवहार का मापदंड था उसी के आधार पर हर बात का समाधान करेंगे। रचना का रचना के प्रति जो दृष्टिकोण होगा, वह हमेशा रचयिता का रचना के प्रति जो दृष्टिकोण होगा उसी से न्यारा होगा। पिताश्री जी ने हमें मास्टर रचयिता का टाइटल दिया है तो हम भी मास्टर रचयिता बन विश्व के प्रति उसी दृष्टि से देखें तो यह विश्व हमें कुछ नया दिखाई पड़ेगा। अब चाहिए यह नया दृष्टिकोण, नया पुरुषार्थ और नया मोड़। १८ जनवरी को हम यह नया तरीका अपनाने का प्रयोग करें तो···!

□□

रायचूर में ब्र० कु० डॉ० गिरिश जी डाक्टरों के समक्ष "मैडीटेशन और मैडीसन" पर प्रवचन करते हुए

ब्र० कु० सुषमा रेडक्रास मेले में लगाई गई प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर डी.सी. भ्राता सिका जी को गुलदस्ता भेंट करते हुए। साथ में ब्र० कु० शुक्ला खड़ी हैं

नेपाल की महारानी एश्वर्य राज्य लक्ष्मी देवी शाह के जन्म दिन पर शीला बहन श्रीकृष्ण का चित्र उपहार दे रही हैं

अकोला सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित मुर्तिजापुर में विश्व नव-निम प्रदर्शनी का उद्घाटन वहाँ के सिविल जज भ्राता पांगारकर कर हैं। साथ में ब्र० कु० रुकमणी खड़ी हैं

हिम्मत नगर सेवा केन्द्र द्वारा साबरकांठा ज़िला के सभी डॉक्टरों के लिए राजयोग शिविर का उद्घाटन ब्र० कु० सरला तथा इन्डीयन मैडीकल एसोसिएशन के प्रमुख डॉ० गोपयानी दीपक जलाकर कर रहे हैं

कोलार में आध्यात्मिक मेले में समारोह में (बाएं से) ब्र० कृष्णामूर्ति जी, न्यायाधीश भ्राता नटराजमूर्ति जी, ब्र० हृदयपुष्पा जी, तथा ब्र० कु० अम्बिका जी मंच पर बैठे

चिन्मयानंद मिशन के प्रमुख स्वामी चिन्मया नंद जी को ब्र० कु० हंसाजी ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए

बोरिंग कैनाल रोड, पटना में जिला एवं सत्र न्यायधीश भ्राता मदन मोहन प्रसाद चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं

↓

ाबाद में युवराज कलचरल एसोसिए- द्वारा आयोजित सांस्कृत कार्यक्रम का ाटन करती हुई ब्र० कु० प्रीतम जी

मांगशेल शहर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर कोकिला बहनराजयोग का अभ्यास कर रही हैं। मंचपर (दाएं से) ब्र० कु० वनिता, ब्र० कु० दमयन्ती, भ्राता के. एस. मुहम्मद बदरकीया, भ्राता केशरीसिंह बापु, भ्राता छोटा भाई मेहता' भ्राता एम. एस बोरा साहब, भ्राता भरत भाई वसाववडा बैठे हैं

मण्डी डब्वाली में हुई आध्यात्मिक प्रदर्शनी में ब्र० कु० लाज चित्रों की व्याख्या कर रही हैं

ब्रह्मपुर (उड़ीसा) सेवा केन्द्र पर संग्रहालय का उद्घा ब्र० कु० निर्मल शान्ता जी, तथा रमेश भाई कर रहे

गडिंगलजा में संकेश्वर की प्रभा बहन तथा बैलगाम से ब्र० महादेव जी प्रवचन करते हुए

मोगा में गीता जयन्ती के अवसर पर विश्व हिन्दु परिषद के निमन्त्रण पर ब्र० कु० संजी वन प्रवचन कर रहीं हैं साथ में विश्व हिन्दु परिषद के प्रधान भ्राता गुरु सेवक सिंह जी बैठें हैं

उत्तरदायित्व और लक्ष्य

ब्र०कु० सुमित्रा, लखनऊ

प्रत्येक मनुष्यात्मा की सफ़लता का रहस्य उसके जीवन में आने वाले उत्तरदायित्वों को निभाना ही है। जो व्यक्ति उत्तरदायित्वों को बोझ समझकर उसकी उपेक्षा करता है उसे जीवन में आने वाले अच्छे परिणामों से वंचित रह जाना पड़ता है। "सफ़लता का सबसे पहला रहस्य है, हर परिस्थिति के लिए तैयार करना।"

प्रत्येक मनुष्यात्मा को आजीविका कमाने में शर्म व संकोच का भाव नहीं रखना चाहिए। आत्म-निर्भरता ही मानव को जीवनोत्कर्ष के पथ पर अग्रसर करने में सहायक होती है। आत्मविश्वास और परिश्रम के बल पर जीवन में सार्थकता प्रदान की जा सकती है। परिस्थितियों के सामन्जस्य बिठाने का अद्‌भुत गुण मानव में ही पाया जाता है। इसलिए उसे चाहिए कि जीवन में आने वाले प्रत्येक कार्य को पूरी शक्ति के साथ निभाकर अपने उत्तरदायित्व को सफ़ल बनाए। प्रत्येक कार्य ईश्वर का ही समझकर उसे आत्मसमर्पित भाव से करना चाहिए। कार्य में सद्‌भावना का भाव उज्ज्वल चरित्र निर्माण के विकास में सहायक होता है। कार्य करने का सौन्दर्य रुचिकर ढंग, सफलता की निशानी है। कर्म की श्रेष्ठता में जीवन की श्रेष्ठता निहित है। महानता के गुण जब मानव के अन्तःकरण में समावेश हो जाते हैं, तभी सफलताएं कदम चूमती हैं।

भाग्य का निर्णायक मनुष्य स्वयं ही है। ईश्वर तो निर्णयकर्त्ता और नियामक है। प्रत्येक मनुष्यात्मा अपने श्रम से स्वर्ग को भी प्राप्त कर सकती है। जिसे मनुष्य भाग्य की कृपा समझकर चलता है, वह और कुछ नहीं, वास्तव में वह हमारी सूझबूझ और कठिन परिश्रम का ही फल है। आत्म-विश्वास और परिश्रम एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। उनमें आत्मा और शरीर जैसा सम्बन्ध है। दोनों मिल कर ही हमें लक्ष्य की प्राप्ति कराते हैं। इसलिए हमें यह संकल्प करके जीवन पथ पर अग्रसर होना है कि बाधाओं को हमेशा हंस-हंस कर स्वीकार करना है। किसी भी प्रकार के भय से हमें अपने मार्ग को नहीं छोड़ना है। जीवन में लक्ष्य-विहीन नहीं होना है। हमेशा गतिमान रहना है।

परिश्रम और सफ़लता की आशा करते हुए हमें लक्ष्य प्राप्ति के बीच आने वाले दुष्परिणामों को भी सरल करने का साहस रखना चाहिए। सर्वश्रेष्ठ के लिए प्रयास करें परन्तु निकृष्टतम के लिए भी तैयार रहें। जीवन को प्रतिद्वन्द्वी न बनाएं और न ही किसी से घृणा करें, प्रेमपूर्वक व्यवहार रखकर ही जीवन सफल बनाएं। किसी को भी दोषी ठहराकर अपने को निराश नहीं करना चाहिए, बल्कि परिस्थितियों से समझौता करके उन्हें अनुकूल बना लेना चाहिए। परिस्थितियों के आने पर सभी रास्ते बन्द नहीं हो जाते, कुछ खुले भी रहते हैं। जब हम नयापन खोजेंगे तो अवश्य ही आशा की नई किरन फूटेगी। जीवन को आवश्यक कार्यों में व्यस्त रखते हुए उसे अनावश्यक कार्यों में उलझने से बचाएँ। इस प्रकार प्रत्येक मनुष्यात्मा को आशावादी बनकर अपने जीवन और जनजीवन के प्रेरणा श्रोत बनना चाहिए। □

शिव परमात्मा द्वारा ब्रह्मा श्रीमुख से शाश्वत सत्यों का पुनः उद्घाटन

ब्रह्माकुमार रामऋषि शुक्ल, लखनऊ

आर्य ग्रंथों में ऐसा आया है कि परमात्मा का यथार्थ परिचय तभी प्राप्त होता है जब कि परमात्मा स्वयं अपने को और अपने रहस्यों को प्रकट करते हैं। हमारे इस विश्व में ऐसी ही परम कल्याणमयी घटना आज से ४५-४६ वर्ष पूर्व वाराणसी नगर के पश्चिमी अंचल में स्थित एक उद्यान में उस समय घटी जब एक परम पावन प्रभात में विश्व-पिता शिव परमात्मा ने स्वयं को नारायण के अनन्य उपासक और अनुपम भक्त पिताश्री (पूर्वकालीन लौकिक जीवन में कलकत्ता के सुप्रसिद्ध जौहरी दादा श्री लेखराज) के समक्ष स्वयं को प्रत्यक्ष कर दिया।

परमात्मा के परिचय का और यथार्थ ईश्वरीय ज्ञान का उद्घाटन जिन पुण्य पुरुषों और सत्पुरुषों को होता है उन्हें हमारे यहां ऋषि-महर्षि की संज्ञा दी गयी है। 'ऋषियो मंत्र द्रष्टमः' के अनुसार, ऋषि वह है जिसको स्वयं परमात्मा द्वारा सम्पूर्ण सत्य ज्ञान का दर्शन हो गया हो। पुराकाल के इन ऋषियों में प्रजापिता ब्रह्मा को सर्वप्रधानत्व प्राप्त है। समस्त भारतीय वाङ्मय और इतर सत्साहित्य ब्रह्मा के विवरणों और महिमाओं से भरा पड़ा है। अन्य धार्मिक विश्वासों के बाइबिल तथा कुरान जैसे सद्ग्रंथ 'एडम', 'आदम' आदि नामों से इन्हीं मानवता के आदिपिता ब्रह्मा को अपना जनक मानते हैं। यही ब्रह्मा अथच एडम अथवा आदम किंवा आदिपिता मानवीय एकता के सर्वोत्तम तथा सबसे सबल सूत्रधार हैं। अस्तु।

ब्रह्मा को परमात्मा ने क्या मूल ज्ञान बताया और क्या राजयोग सिखाया, इसका भी कुछ-न-कुछ परिचय हमें वेद-शास्त्र-पुराणादि से प्राप्त होता है। सद्ग्रंथों से जो कुछ ज्ञात होता है उसका सार-तत्व यह है कि कल्पारम्भ और कल्पान्त के क्रम में परमात्मा ने एक सत्पुरुष को—ब्रह्मा ऋषि को—नये जगत् के नव-सृजन का निमित्त, माध्यम और आधार बनाया। हमारे यहाँ यज्ञ से नव सृजन की बात कही गयी है। ऐसा भी पता चलता है कि प्रारम्भिक यज्ञ वस्तुतः 'तप-यज्ञ' ही रहा है। 'नाना पुराण निगमागम सम्मतं' के वचनों के अनुसार, प्राचीन भारतीय सत्साहित्य का सार-तत्व हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने वाले ग्रंथ श्री रामचरित मानस में इसी तथ्य की पुष्टि इस चौपाई में की गयी है : "तप-बल रचइ प्रपञ्च विधाता। तप-बल विष्णु सकल जग त्राता।।" परमात्मा के दिव्य-अलौकिक सृजन या सृष्टि-संचालन के कर्त्तव्यों का गुणगान मानस में इन चौपाइयों में बड़े प्रभावोत्पादक तथा सार्थक ढंग से किया गया है : "पग बिनु चलइ सुनइ बिनु काना, कर बिनु कर्म करइ विधि नाना।...आनन-रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बकता बड़ जोगी।"

उपर्युक्त चौपाइयों से प्रथम सत्य तो यह स्थापित होता है कि नयी सृष्टि का नव-सृजन-कार्य ब्रह्मा द्वारा ही सम्पन्न होता है—अर्थात्, जब भी नये विश्व और नव-मानवता का सृजन होगा वह ब्रह्मा द्वारा ही सम्पादित होगा। दूसरा सत्य यह स्थापित होता है कि परमात्मा के पग नहीं हैं, किन्तु वे चलते भी हैं। उनके कान नहीं हैं, किन्तु वे सुनते भी हैं। उनके हाथ नहीं हैं, किन्तु वे नाना विधि कर्म करते भी हैं। उनके मुख नहीं हैं, तथापि

वे सर्व रसों के भोक्ता हैं। उनके वाणी (मुख) नहीं है, तथापि अपना समग्र ज्ञान और समग्र योग प्रकट करने में वे सर्वथा समर्थ हैं। ब्रह्मा विषयक पौराणिक विवरणों में ऐसा स्पष्ट रूप से कहा गया है कि प्रारम्भ में परमात्मा ने अपने वत्स रूपी ब्रह्मा को ही वेद-शास्त्रादि का सम्पूर्ण रहस्य प्रकट किया, और पुनः ब्रह्मा ने पर्याप्त विचार-मंथन द्वारा उस सम्पूर्ण ज्ञान एवं विज्ञान (योग) को अपनी प्रजा किंवा संततियों अथच नव-सृजन के संदेशवाहकों को समझाया तथा सिखाया।

ब्रह्मा ऋषि नव-सृजन के प्रतीक हैं तो उस सृजन के निमित्त परमात्मा के योग एवं ज्ञान के उद्-घाटन किंवा प्रकटीकरण के भी माध्यम हैं। अर्थात्, परमात्मा जो स्वरूपतः निराकार ज्योति-बिन्दु हैं और विश्व-कल्याणकारी होने के कारण जिनको शिव नाम से अभिहित किया जाता है, ऐसे परमात्मा अपना ज्ञान ब्रह्मा के मुख-कमल से बोलते हैं। परमात्मा का अपना मुख न होने पर भी वह इस प्रकार ब्रह्मा श्रीमुख से बोलते हैं। पग न होने पर भी इस प्रकार परमात्मा ब्रह्मा के पगों से चलते हैं। कान न होने पर भी इस प्रकार परमात्मा ब्रह्मा के कानों से सुनते हैं। कर या हाथ न होने पर भी इस प्रकार परमात्मा ब्रह्मा के करों द्वारा अपने दिव्य-अलौकिक कर्म सम्पन्न एवं सम्पादित करते हैं। करन करावन हार के रूप में परमात्मा ब्रह्मा के कर्मों द्वारा नव-सृजन का कार्य स्वयं भी करते हैं तथा उनसे भी कराते हैं। ब्रह्मा के माध्यम से ही परमात्मा नव-सृजन के लिए विरचित आत्म-यज्ञ किंवा ज्ञान-यज्ञ में ब्रह्मा की नयी प्रजा या वंशावली की आहुतियाँ तथा भोगादि स्वीकार करते हैं और इनका सुफल देते हैं। सारांशतः, इस प्रकार ब्रह्मा के ही साकार स्वरूप के माध्यम से परमात्मा शिव बिना 'वाणी' के बड़े वक्ता किंवा परम ज्ञानदाता और बड़े योगी किंवा महायोगी एवं योगेश्वर हैं।

हम देखते हैं कि आज संसार में नये विश्व और नयी मानवता की बात बड़े जोरों से उठ चुकी है। प्रकृतिगत तत्व-योजना के भयंकर प्रदूषण के कारण सृष्टि-जगत वस्तुतः पूर्णतः काल-जर्जर हो चुका है। इसी प्रकार, मानवीय मूल्यों के भयावने ह्रास और नैतिक-नियमों के प्रायः लोप होने के कारण समाजमें अराजकता, आपाधापी और प्रलयकारी अवस्था उत्पन्न हो गयी है। प्रतीकात्मक अर्थों में विकारों का 'जलप्लावन' (DELUGE OF VICES) अपने पूरे वेग पर है। स्वभावतः ऐसी परिस्थिति में ही मानवात्माओं के हृदयों से नये विश्व और नयी मानवता के लिए आर्तपुकार निकली है। पृथिवी के गर्भ से खनिजों को निरन्तर रूप से बाहर निकालते रहकर आसुरी स्वभावों से ग्रस्त वर्तमान 'विज्ञानी' मानव ने सारी उष्णता बाहर वायुमंडल में फेंक दी है और समूचे पर्यावरण को विषाक्त बनाने के साथ-साथ परिस्थिति असन्तुलनों(ecological imbalances) को उत्पन्न कर दिया है। संक्षेपतः, ये सभी हमारे वर्तमान सृष्टि-जगत में भारी उलट-पलट या उथल-पथल होने के भयावने अशुभ लक्षण हैं। इनके ही साथ-साथ, संसार में राजनायिकों द्वारा चुप-चाप भीषण 'कूट-चक्र' चलाये जा रहे हैं और पार-माणिक आयुधों या प्रक्षेपणास्त्रों से लैस महा-शक्तियाँ (BIG POWERS) एक-दूसरे को अवसर मिलते ही मिटा देने की तैयारी में संलग्न हैं।

सारांशतः, एक ओर विनाश का महासंकट उपस्थित है और दूसरी ओर, नये विश्व तथा नयी मानवता के समुदाय के लिए मानवात्माओं के हृदयों में तड़पन है तथा करुण पुकार है। विश्वव्यापी विनाश की वर्तमान अभूतपूर्व आशंका और नव-जगत तथा नव-मानव के सृजन की अनुपम अपेक्षा-आवश्यकता का दिव्य साक्षात्कार आज से लगभग ४-५ दशक पूर्व ही परमात्मा शिव ने अपने प्रतीकात्मक विश्व-धाम वाराणसी में पिता श्री जी को एक पावन प्रभात में करा दिया था। परमात्मा शिव भगवान ने प्रथमतः पिताश्री को उस भावी महा-विनाश का साक्षात्कार कराया, जो आज आसन्न है। और, उसके तत्काल बाद ही भगवान शिव ने

पिताश्री जी को नये विश्व किंवा, नये सृष्टि-जगत का साक्षात्कार कराया तथा नव-मानवता की अभिनव रचना के लिए उनको प्रेरित एवं अनुप्राणित कर दिया। उस पावन दिवस से ही नये सृष्टि-जगत किंवा, नये श्रेष्ठतर मानव-समाज के लिए नव मानवता की रचना का श्रीगणेश हुआ और आगे चलकर परमात्मा निराकार शिव के साकार रथ किंवा माध्यम ब्रह्मा के रूप में नव-मानवता के नव सृजन के कार्य को पिताश्री जी ने अग्रसर किया। प्रथमतः इस निमित्त हैदराबाद (सिन्ध) में ओम् मण्डली के रूप में राजसूय अश्वमेध अविनाशी ज्ञान यज्ञ की संस्थापना और पुनः आबू पर्वत पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के रूप में उसका विकास एवं विस्तार इसी नव विश्व किंवा नव सृष्टि-जगत और इसी नव मानवता के भागीरथ प्रयास की एक विशद-व्यापक गाथा है। अस्तु

परमपिता शिव भगवान ने पुराकालीन एवं पौराणिक प्रागैतिहासिक गाथाओं का वास्तविक रहस्य प्रकट करते हुए, अर्थात् गीता के वास्तविक ज्ञान को स्पष्ट करते हुए, ब्रह्मा-स्वरूप पिताश्री के इन ४-५ दशकों के अमृत वचनों और महा वाक्यों में जो कुछ बताया है उससे आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, युग-क्रम, जन्म-क्रम, सतयुग-वैकुण्ठ, कलियुग नरक, परमात्मा के दिव्य अवतरण एवं अलौकिक कर्त्तव्य आदि के समस्त रहस्य अनावृत हो गये हैं—सारे भेद खुल गये हैं। यह कितनी विचित्र बात है कि वेद-पुराण-शास्त्रादि के अध्येता और आचार्यगण भी और विभिन्न मतों तथा सम्प्रदायों के धार्मिक ग्रंथों एवं पौराणिक गाथाओं के अलमबरदार गुरुजन भी अपने-अपने हृदयों में इनमें वर्णित बातों को या तो निरी कल्पना मानते हैं अथवा इनके अनेक प्रकार के मनोमय प्रतीकात्मक अर्थ कर आत्मतोष लाभ कर लिया करते हैं। किन्तु ब्रह्मा के स्वरूप में पिताश्री जी के माध्यम से किंवा कमल मुख से परमात्मा शिव भगवान ने उपर्युक्त सद्ग्रंथादि की गाथाओं के वास्तविक रहस्यों को एकदम, एकबारगी और सर्वथा निर्भ्रान्त रूप से स्पष्ट कर दिया है। जिन बातों को अब तक लोग मात्र मनोमयी कल्पनाएं मानते आ रहे हैं उनकी पूरी-पूरी सत्यता और समग्र सम्पूर्ण यथार्थता शिव भगवान ने ब्रह्मा-स्वरूप में पिताश्री जी के तथा मातेश्वरी जी सरस्वती के माध्यमों से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आश्रमवासियों तथा अनुगामियों को स्पष्ट कर दी है जैसा कि पिताश्री जी ने अपनी एक वाणी में परमात्मा शिव के प्रति अतिशय आभार प्रकट करते हुए कहा था—"हमारी तो आँख ही खुल गयी है।"

एक प्रश्न जो सामान्यतः सभी लोग उठाते हैं, वह यह है कि एक निराकार परमात्मा शिव भगवान के वर्तमान काल में ब्रह्मा-स्वरूप पिताश्री जी के माध्यम से अपने मूल किंवा सहज ज्ञान और मूल योग किंवा राजयोग को प्रकट करने का, समझाने-सिखाने का प्रमाण क्या है, और पुनः पिताश्री जी के ब्रह्मा-स्वरूप होने का प्रमाण क्या है ? यों तो, यह विश्वविद्यालयों में दर्शन के शोध छात्रों द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले शोध-प्रबन्धों (थीसिस) का विषय है। किन्तु सूत्र रूप में कतिपय निवेदन यहां प्रस्तुत हैं : (१) देह-भाव से आत्म-भाव की प्राप्ति के समस्त प्रचलित साधन अयथार्थ रहे हैं और इसीलिए समस्त जप-तप, दान-पुण्य, ज्ञान-ध्यान, अध्यात्म-सत्संग, धर्म-प्रचार, उपदेश-प्रवचन आदि के बावजूद मानव-जाति क्रमशः गिरते-गिरते वर्तमान अधोगति को प्राप्त हो गयी है। इसका ही निराकरण करते हुए शिव भगवान ब्रह्मा-तन से कहते हैं—'हे आत्मा वत्सो ! अपने को आत्म निश्चय कर, आत्म-रूप से मुझ परमात्मा का स्मरण करो और देही अभिमानी बन कर आगामी नये सतयुगी विश्व में शरीरधारी देव पदों की प्राप्ति के लिए सत्य पुरुषार्थ करो।' (२) परमात्मा को सर्वव्यापी मानने और इस प्रकार उनको अन्तःकरण में या फिर कण-कण में व्याप्त देखने के कारण आज मनुष्य मात्र देह-भावी एवं देह-अभिमानी अथवा अनात्मवादी अथच आसुरी प्रवृत्ति

वाले बन गये हैं। इसका ही निराकरण करते हुए शिव भगवान ब्रह्मा-मुख से कहते हैं—'हे आत्मा वत्सो ! मैं परमधाम का निवासी परमात्मा तुम्हारे कल्याणार्थ और सृष्टि-जगत के उद्धारार्थ आज इस विश्व मंच पर पुनः उपस्थित हूं, अवतरित हूं। मुझ परमात्मा से निज आत्मा को जानो, सर्व मानवात्माओं की जन्मों के तथा अधिकतम ८४ जन्मों की कहानी को समझो, मुझ विश्व-रचयिता से इस सृष्टि-रचना के आदि व मध्य-अन्त के और कल्प-कल्प-सृष्टि-जगत तथा मानवात्माओं का उद्धार करने के गूढ़-गुह्य रहस्यों को समझो और कलियुगी पुरानी दुनिया से सभी सम्बन्ध तोड़कर तथा बुद्धि को हटाकर नयी सतयुगी स्वर्गीक संसृति को, पुनः साकार करने के पुरुषार्थ में तत्पर हो जाओ।' (३) सारांशतः, शिव भगवान ब्रह्मा तन से कहते हैं—(क) हे मानवात्माओ ! पवित्रता को धारण करो, क्योंकि देवी-देवताओं की पवित्र नयी सतयुगी दुनिया के संस्थापनार्थ मैं परमात्मा शिव पुनः विश्व मंच पर अवतरित उपस्थित हूं। (ख) हे मानवात्माओ ! मेरे शाश्वत सद्गुण धारण करो, क्योंकि इस प्रकार ही तुम दैवी गुणधारी देवी-देवता बन सकते हो। (ग) हे मानवात्माओ ! सात्विक आहार-विश्राम द्वारा और अन्तरमुखता द्वारा अपनी चाल-चलन को सुधारो, क्योंकि दैवी चलन वाली मानवात्माएँ ही मुझ से देवी-देवता पदों की प्राप्ति कर सकती हैं। (घ) हे मानवात्माओं ! मामेकम् बनो अर्थात् एकमेव मेरी शरण लो और मद्याजी भव बनो अर्थात् कलियुग को मिटाकर सतयुग की स्थापना करने के लिए परम-श्रेष्ठ शुभ कार्य में मेरे सहभागी बनो।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि निराकार परमात्मा शिव भगवान ने कल्प-कल्पवत् एक बार 'धर्म संस्थापनार्थाय' अपने शाश्वत सनातन सत्यों का उद्घाटन कर दिया है। अहो सौभाग्य जो इन सत्यों को पहचाने और जीवन को सफल करे। ☐

मधुवन में राजयोग शिविर में पधारे नीमच के कुछ शिविरार्थी दीदी तथा ब्र० कु०शीलू, ब्र० कु० मनोहर इन्द्रा के साथ

प्रजापिता ब्रह्मा : "परपितामह" (ग्रेट ग्रेट ग्रांड फादर)

ब्र० कु० सूरज कुमार, मधुबन, आबू

सभी धर्मों के अनुयायी प्रजापिता ब्रह्मा को सृष्टि कर्त्ता के रूप में स्वीकार करते हैं। ब्रह्मा ने सृष्टि कैसे रची—इसकी व्याख्या सभी ने भिन्न-भिन्न रूप से की है। और ऋषियों ने ब्रह्मा का जीवन काल अनगिनत वर्ष दिखाया है, परन्तु ब्रह्मा किस काल में थे व कहाँ बैठकर उन्होंने सृष्टि की रचना की—यह बात विद्वानों के अनुभवों से परे की है।

ब्रह्मा के बारे में सभी गुह्य रहस्य, ज्ञान-सागर परमात्मा ने ब्रह्मा के मुख द्वारा ही खोले हैं। उनके आधार पर ही हम यहाँ पाठकों के सम्मुख ब्रह्मा का स्पष्टीकरण करेंगे।

सृष्टि रचना का अर्थ—

सृष्टि रचना के बारे में यह जो एक मत प्रचलित है कि परमात्मा ने संकल्प से सृष्टि रची—इसके भिन्न-भिन्न अर्थ हैं।

सर्व प्रथम तो यह अर्थ है कि परमात्मा को परमधाम में सृष्टि रचने का अर्थात स्वर्ग रचने का संकल्प आया। यह संकल्प कब व क्यों आया?

ऐसा नहीं है कि सृष्टि नहीं थी—वह तो सदा ही है। नहीं तो प्रश्न उठेगा कि प्रथम मनुष्य कहाँ से आया? अवश्य ही उसके माता-पिता होगें, फिर उनके भी होगें, तो सृष्टि अनादि हो ही जाती है। अगर कोई कहे कि परमात्मा ने एक स्त्री पुरुष को अपनी शक्ति से उत्पन्न किया, तो यह मानना भी यथार्थ नहीं। यद्यपि परमात्मा सर्व समर्थ है तो भी वह अपने कर्त्तव्य विधान अनुसार ही करता है और विधान यही है कि मानव शरीर का निर्माण प्रकृति के संयोग से ही होता है।

अतः यह सृष्टि चार युगों के चक्र में अनादि काल से चली आ रही है। जब कलियुग का अन्त आता है, मनुष्य अति दुःखी व अशान्त हो जाते हैं और भगवान को रात-दिन पुकारने लगते हैं, तो भगवान को संकल्प उठता है कि मैं सृष्टि पर पुनः सुख-शान्ति का साम्राज्य स्थापन करूँ। वह समय कलियुग का अन्त अर्थात् पुरुषोत्तम सगंम युग होता है।

कई पूछते हैं कि इससे पहले भगवान को संकल्प क्यों नहीं उठा। इसका उत्तर तो स्पष्ट है···। जब मानव अति पतित होता है व पुकार बढ़ती है तथा सृष्टि चक्र पूरा होता है तब ही उसे कार्य करने का संकल्प उठता है।

संकल्प सृष्टि का दूसरा अर्थ—शास्त्रों में यह बात भी सर्व विदित है कि प्रारम्भ में सृष्टि अमैथुनी थी। परन्तु विद्वान इसका यही अर्थ लेते हैं कि प्रथम मनुष्य को परमात्मा ने अपनी शक्ति से उत्पन्न किया होगा। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है।

सृष्टि के आदि अर्थात सतयुग में मैथुन नहीं होता क्योंकि परमात्मा ने आत्माओं को सम्पूर्ण पवित्र बनाकर सृष्टि की स्थापना को होती है। अर्थात् आदि में सृष्टि पर सम्पूर्ण पवित्र आत्माओं का ही आगमन होता है और सम्पूर्ण पवित्र आत्माएँ भोग-रत नहीं हो सकतीं। उन योग-बल द्वारा सम्पूर्ण पवित्रता को प्राप्त आत्माओं के संकल्प शक्ति द्वारा सन्तति होती है। अतः यह प्रसिद्ध है कि सृष्टि के आदि में संकल्प की सृष्टि थी अर्थात् योग-बल की सृष्टि थी।

सृष्टि-रचना व प्रजापिता ब्रह्मा—

अब यह प्रश्न तो समाप्त हो जाता है कि ब्रह्मा ने कहीं बैठकर योनियों का निर्माण किया। सृष्टि रचना का अर्थ—सृष्टि के पुनर्निर्माण से है; अर्थात् घोर कलियुगी नर्क को पवित्र सतयुग स्वर्ग बनाने से है। और यह कार्य निराकार परमात्मा को करना है। इसलिए मनुष्यों को राह दिखाने के लिए, सत्य ज्ञान देने के लिए परमात्मा को मनुष्य तन में ही दिव्य

प्रवेश करना होता है, और उस परम भाग्यशाली मनुष्य को ही ब्रह्मा कहा जाता है। वह आत्मा सृष्टि की सबसे महान आत्मा होती है जो कि सृष्टि के आदि में श्री कृष्ण के रूप में जग को अलंकृत करती है। वास्तव में सृष्टि रचना का दिव्य कार्य स्वयं निराकार परमात्मा ही करते हैं परन्तु वह ब्रह्मा के माध्यम से ही अपने सर्व श्रेष्ठ कार्य सम्पन्न करते हैं।

ब्रह्मा ही आदि देव—

ब्रह्मा को 'आदम' नाम से भी जाना जाता है। आदम शब्द आदमो का ही पर्याय है। अर्थात ब्रह्मा एक आदमी ही थे, परन्तु एक ऐसे आदमी जिनके द्वारा परमपुरुष ने सर्व आदमियों को देव बनाने का कार्य किया। वास्तव में ब्रह्मा देवता नहीं थे, आदमी थे, परन्तु मनुष्य को देव बनाने का कार्य, क्योंकि उनके द्वारा ही हुआ, और वे ही सर्व प्रथम सम्पूर्ण फ़रिश्ता बने, इसलिए उन्हें देवों का भी आदिपति या आदि देव कहा जाता है। वास्तव में वे सृष्टि के आदि में नहीं, सृष्टि चक्र के अन्त में थे जिन्होंने सृष्टि चक्र को नवरूप दिया। उनके चार मुख उनके चहुँमुखी विकास, व सम्पूर्ण ज्ञान के प्रतीक हैं। वास्तव में वे चार मुखधारी नहीं थे, परन्तु क्योंकि त्रिमूर्ति परमात्मा ने उनके मुख से सत्य ज्ञान दिया, चतुरानन नाम से भी जाना जाता है।

ब्रह्मा प्रजापिता व परमपितामह—

ब्रह्मा को प्रजापिता इसलिए कहा गया क्योंकि उनके मुख द्वारा परमात्मा ने जिन मनुष्यों को ज्ञान दिया, वे ही उनकी मुख सन्तान अर्थात मुख वंशावली ब्राह्मण कहलाये। अर्थात ब्रह्मा उन अनेक ब्राह्मणों के अलौकिक पिता थे।

परन्तु ब्रह्मा यहाँ एक सर्व महान धर्म पिता भी हैं। सृष्टि पर स्थापित सर्व श्रेष्ठ आदि सनातन देवी देवता धर्म के वे ही धर्मपिता थे। उनके द्वारा ही परमात्मा ने इस सम्पूर्ण पवित्र धर्म की स्थापना की।

परन्तु···ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा बनाये गये कल्प वृक्ष के चित्र पर ध्यान दें···

जिसमें स्पष्ट किया गया है कि इस कल्प वृक्ष का तना देवी देवता धर्म है जो सतयुग व त्रेतायुग तक चलता है। उसके मूल में ब्रह्मा को तपस्वी रूप में दिखाया है अर्थात् वे इस धर्म के धर्म पिता थे। इसके बाद अन्य धर्म, शाखाओं के रूप में इसी धर्म से निकलते हैं। धर्म पिताओं के जीवन चरित्र से ये बात स्पष्ट हो जाती है कि सभी धर्मों के धर्मपिता हिन्दू धर्म से ही सम्बन्धित थे जो कि देवी देवता धर्म का ही दूसरा नाम है।

उदाहरणार्थ भारत के महात्मा बुद्ध, गुरु नानक आदि हिन्दू ही थे। अतः वास्तव में सभी धर्मों का मूल देवी देवता धर्म ही है और सभी धर्मपिताओं का भी धर्मपिता प्रजापिता ब्रह्मा ही है।

दूसरी मुख्य बात—धर्म पिताओं के पास ज्ञान कहाँ से आया? क्या वो ज्ञान उनकी खोज थी? कोई भी धर्मपिता पूर्व प्रचलित ग्रन्थों को अपना आधार नहीं बनाता। और मुख्य बात तो यह है कि वास्तव में जीसस या बुद्ध को अपना ज्ञान नहीं था बल्कि उनके तन में पवित्र आत्माओं ने प्रवेश करके ज्ञान दिया था। वे तो केवल माध्यम थे। परन्तु उन पवित्र आत्माओं के पास भी ज्ञान कहाँ से आया?

तो सत्यता यह है कि जब परमात्मा कलियुग के अन्त में ब्रह्मा के मुख से सत्य ज्ञान देते हैं, तब ही वे पवित्र आत्माएँ भी आंशिक रूप से ज्ञान लेती हैं, और वही ज्ञान वे धर्मपिताओं के द्वारा देती हैं। परन्तु वे आत्माएँ सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं करतीं। इसीलिए कोई भी धर्मपिता सम्पूर्ण रहस्य नहीं खोल सका। क्योंकि सभी धर्मपिताओं की आत्माओं ने भी ज्ञान की अचँली प्रजापिता ब्रह्मा के मुख द्वारा ही ली। इसीलिये उन्हें धर्मपिताओं का भी पिता या ग्रेट ग्रेट ग्रान्ड फादर कहा जाता है। और इसी लिए सभी धर्म वाले अपने ज्ञान को परमात्मा द्वारा

दिया हुआ जानकर उसमें पूर्ण श्रद्धा रखते हैं। परन्तु सभी धर्मों में आंशिक रूप से ही सत्यता है। सम्पूर्ण सत्यता तो प्रायः लोप ही है।

भारत में हिन्दू धर्म के विभिन्न सम्प्रदाय भी वेदों को ईश्वर कृत ही मानते हैं। कोई उन्हें ब्रह्मा के मुख से उच्चारा हुआ कहकर ब्रह्मा के हाथ में वेद दिखाते हैं और कोई उन्हें ऋषियों को परमात्मा की प्रेरणा द्वारा कृत मानते हैं।

परन्तु वास्तविकता यही है कि सृष्टि चक्र के अन्त में या नव सृष्टि-चक्र के आदि में निराकार ज्ञान-सागर परमात्मा ने ब्रह्मा के मुख से सम्पूर्ण सत्य ज्ञान व राज योग सिखाया और उसके बाद महाविनाश हो गया था, फिर हजारों वर्ष बाद वही ज्ञान ऋषियों के पवित्र मन में जिस प्रकार जागृत हुआ, उन्होंने शास्त्रों की रचना की। इस प्रकार सम्पूर्ण ज्ञान के दाता तो परमात्मा ही हैं।

ब्रह्मा अब कहाँ ··

वही प्रजापिता ब्रह्मा, इस महान आन्दोलन के निमित्त थे जिनके द्वारा परमात्मा ने ज्ञान कलश पुनः माताओं को प्रदान किया। जिन्हें उनके वत्स ब्रह्मा बाबा कह कर याद करते हैं। उनके जीवन काल में जो भी मनुष्य उनके सम्पर्क में आये, उन्होंने उन्हें ब्रह्मा रूप में अवश्य ही स्वीकार किया।

वे वास्तव में प्रजापिता थे---

जैसे ही परमात्मा ने उन्हें ज्ञान दिया कि तुम ही ब्रह्मा हो और उनके तन में दिव्य प्रवेश किया, उनके मुख से सभी के लिए बच्चे शब्द ही निकलना प्रारम्भ हुआ। यहाँ तक कि अपनी पूर्व की धर्म-पत्नि को भी उन्होंने बच्ची कहा—ऐसा उदाहरण सम्पूर्ण इतिहास में केवल वही है। कई महापुरुषों ने ब्रह्मचर्य पालन के लिए अपनी धर्म पत्नि को माँ अवश्य कहा, परन्तु 'बच्ची' कहने वाले केवल प्रजा-पिता ब्रह्मा ही थे।

सृष्टि के सभी मनुष्य उनके बच्चे समान थे—ये उनकी भावनाओं व प्रेम से स्पष्ट हो जाता था। मन में सभी से पुत्रवत् स्नेह व सभी की उन्नति की स्पष्ट कामना दिखाई देती थी।

धर्मपिता के रूप में उनमें चुनौति देने की शक्ति अवश्य थी, परन्तु वे कभी किसी धर्म की या गुरु की ग्लानि नहीं करते थे। सर्व धर्मों के धर्म-पिता के रूप में हमने उन्हें देखा –उन्होंने सभी धर्मों के मनुष्यों का आवाहन किया, सभो के प्रति समान दृष्टि बनाई व बनाने का ज्ञान दिया। जिनके मन को किसी भी तरह का भेद-भाव छू तक नहीं पाया। जो हरिजनों को भी गले से लगा लिया करते थे व गरीबों को अपने साथ चारपाई पर बैठा लिया करते थे। जो मुसलमानों को भी अपनी रसोई में काम करने का आदेश देते थे। उनके मन में सभी के लिए असीम प्यार था।

ब्रह्मा व शक्तियाँ साथ साथ में –

वास्तव में वे ही प्रथमधर्म पिता थे जिन्होंने हजारों नारियों की एक पवित्र संगठित सेना तैयार की, जिन्होंने माया को ललकारा और संसार में ज्ञान की गंगा बहाई। ये नारियाँ ही शक्तियों के रूप में प्रसिद्ध हुई क्योंकि उन्होंने योग द्वारा शिव से शक्तियाँ प्राप्त कीं। वास्तव में शिव शक्तियाँ ब्रह्मा की बेटियाँ ही थीं जिनके भिन्न २ गुण व कर्त्तव्यों के कारण भिन्न रूप से पूजा हुई। तो सत्यतः ब्रह्मा व शिव शक्तियाँ साथ साथ ही सृष्टि पर थे जिन्होंने पर-मात्मा शिव के आदेश अनुसार मनोविकारों को २५०० वर्षों के लिए संसार से निकाल दिया था।

परन्तु ब्रह्मा बाबा सदा गुप्त ही रहे। उन्होंने अपने वत्सों अर्थात् शिव-शक्तियों को ही प्रख्यात किया। उन्हीं के द्वारा सर्व की मनो-कामनाएँ पूर्ण कराई। इसलिए समस्त भारत में शक्तियों का ही विशेष पूजन होता है। परन्तु अन्त तक सभी धर्मावलम्बी ब्रह्मा बाबा को 'प्रजापिता ब्रह्मा' के रूप में स्वीकार कर लेंगे। □

मौन और एकान्त का महत्व

लेखिका – ब्रह्माकुमारी राधा, अजमेर

ओ मेरे मन मौन रह। कार्य की व्यस्तता में तुम जो अपना आपा भूल जाते हो, उससे थोड़ी देर के लिए दूर हट! घड़ी भर के लिये अकेला रहने से मत डर।

मौन रहने से मनुष्य अपनी आत्मिक आन्तरिक शक्ति के अपव्यय से बच जाता है और मानसिक मनन चिन्तन से उसकी शक्तियों का केन्द्रीकरण होता जाता है जिससे वह साधारण मनुष्य से ऊपर उठकर धीरे-धीरे महानता की ओर अग्रसर होता जाता है। जो व्यक्ति ज्ञान तथा गुणों से अपना जीवन भरपूर करना चाहता है उसे न केवल यह सीखना है कि कब बोलना चाहिए और क्या बोलना चाहिए, बल्कि उसे यह जानना भी जरूरी है कि कब मौन रहना चाहिए और क्या नहीं बोलना चाहिए। वाणी पर उचित नियन्त्रण बुद्धिमता का प्रारम्भ है। मन, बुद्धि पर अर्थात् मस्तिष्क पर सम्यक नियन्त्रण बुद्धिमता की चरम सीमा है। वाणी पर संयम करने से मनुष्य का मन-मस्तिष्क पर अधिकार हो जाता है। इस पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने के लिए मौन का सतत अभ्यास आवश्यक है।

मूर्ख व्यक्ति ऊलजलूल बोलता है, गप्पें हांकता है, कुतर्क करता है और शब्द जाल बुनता है। वह इस बात पर इतराता है कि उसे जो कुछ कहना था, वह सब उसने कह डाला है और इस तरह उसने अपने विरोधी की बोलती बन्द कर दी है। वह अपनी मूर्खताओं पर गर्व करता है, हमेशा अपने पक्ष को सच्चा सिद्ध करने का प्रयत्न करता है और इस प्रकार अपनी पूरी शक्ति इन्हीं बेकार की बातों में गवां देता है। वह ऐसे माली की भाँन्ति है जो बंजर भूमि खोदता और उसमें पौधे लगाता रहता है।

बुद्धिमान व्यक्ति व्यर्थ की बकवास करने, गप्पें मारने, कुतर्क करने और बेमानी बहस करने से कतराता है। वह पराजय मानकर सन्तोष का अनुभव करता है। क्योंकि इससे मन ही मन अपनी गलतियों को सुधारने का और इस तरह अपनी बौद्धिक व मानसिक शक्तियों के संचय करने का अवसर पा लेता है।

उत्तेजित किए जाने पर भी जो व्यक्ति शान्त एवं गम्भीर रहते हैं वे सभ्य एवं सहानुभूतिशील प्राणी हैं। विचारहीन व्यक्ति छोटी छोटी बातों पर ही सन्तुलन खो बैठते हैं। उन पर थोड़ा बहुत व्यक्तिगत आक्षेप किया जाये तो उनका मानसिक सन्तुलन बिगड़ जाता है। ईसा मसीह ने विवाद के शब्द का उत्तर नहीं दिया था; और महात्मा बुद्ध वाद-विवाद करने पर मौन रहते थे। इनसे हमें मौन की असीम शक्ति तथा महानता की शान्त सत्ता का साक्षात्कार होता है।

मौन में सच्ची शक्ति निहित है। कहावत प्रसिद्ध है—"जो कुत्ता भौंकता है वह काटता नहीं।" बुलडाग कुत्ते का मौन प्रसिद्ध है, वह मौन बना रहता है और काम पड़ने पर मौन में एकत्र की हुई शक्ति का उपयोग करता है। यह ठीक है कि उसका यह मौन निम्न श्रेणी का है, किन्तु इसके पीछे सिद्धान्त तो वही काम कर रहा है। अपने विषय में बढ़चढ़कर बात करने वाला व्यक्ति असफल रहता है; उसका मन-मस्तिष्क अपने मुख्य लक्ष्य से विचलित हो जाता है और उसकी शक्तियां अपने-आपकी प्रशंसा करने में ही बिखर जाती हैं। नम्र, शान्त और अध्यवसायी व्यक्ति सफलता प्राप्त करता है वह देहभान से मुक्त होकर, अपनी प्रशंसा करने की प्रकृति से बचकर, अपनी सारी शक्तियों को अपने कार्य के सफल निर्वाह की दिशा में जुटा देता है और समय पर सफलता प्राप्त कर लेता है। यदि आप शक्तिशाली, उप-

योगी और स्वावलम्बी बनना चाहते हैं तो मौन के महत्व को समझिये, दूसरों के काम की आलोचना और नुक्ताचीनी करने में अपनी शक्ति का अपव्यय मत कीजिये; बल्कि अपने काम को अच्छी तरह पूरा करने में जुट जाइये। आप दूसरों के काम में तो मीन-मेख निकालते हैं, पर अपने काम में लापरवाही बरतते हैं। यदि दूसरे कोई काम ठीक से नहीं कर रहे हैं, तो आपको चाहिए कि आप उनकी सहायता करें और स्वयं उसे ठीक करके दूसरों के लिए उदाहरण बनें। न दूसरों की निन्दा करें, न दूसरों के मुँह से निन्दा-वचन सुनकर उसे महत्व दें। और जब दूसरे लोग आपकी टीका टिप्पणी करें तो आपको चाहिए कि मौन रहकर दूसरों को गुपचुप शिक्षा दें।

किन्तु सच्चा मौन केवल जबान बन्द रखना ही नहीं, अपितु मन को शान्त रखना है। केवल जबान को बन्द रखा जाए, और अशान्त हो तो ऐसा संयम निरर्थक हो जाता है, उससे कोई लाभ नहीं होता। मौन उपयोगी तभी हो सकता है जब वह मस्तिष्क और हृदय में पूरी तरह छाया रहता है। यह मौन शांत मन से उद्भूत होना चाहिए। मनुष्य जिस सीमा तक अपने मनोविकार पर विजय प्राप्त करता है उतना ही वह अर्न्तमुखी बनता जाता है। जब तक सांसारिक भौतिक कामनायें, उद्वेग, दुःख मन को क्षुब्ध करते हैं तब तक अर्न्तमुखी बन नहीं सकता है। जब तक दूसरों के कटु वचनों या अवांछित कार्यों से हमारा हृदय दुःखी होता है, तब तक यही समझना चाहिए कि हम अभी कमज़ोर और अव्यवस्थित हैं। सो अभिमान और स्वार्थ-भावना को हृदय से निकाल दीजिये, ताकि ईर्ष्या का लेशमात्र भी आपके मन में न रहे और आप आत्मा निर्मल पवित्र संस्कारों को धारण करते चले जायें। जो व्यक्ति अपनी मानसिक शक्तियों को संचित करता है वह अर्न्तमुखी बनता जाता है।

मौन शक्तिशाली होता है, क्योंकि यह आत्म-नियन्त्रण का परिणाम होता है। मनुष्य अपने-आप पर जितना नियन्त्रण कर लेता है वह उतना ही अधिक सफल जीवन जीता है। उच्चतर जीवन की प्राप्ति की दिशा में मौन एक अति उत्तम साधन है। कर्मयोगी का हृदय शांत शीतल एवं गम्भीर होता है।

एकान्त ही ऐसी स्थिति है जिसमें मनुष्य वास्तविक स्वरूप का साक्षात्कार कर पाता है, तथा वह अपनी शक्ति और प्रकृति को जान पाता है। दुनिया में आपको ऐसे अनेक लोग मिलेंगे जो अपना ठीक ठीक आत्मनिरीक्षण करने से जी चुराते हैं, वे अपने सच्चे स्वरूप पर दृष्टि डालने से घबराते हैं। ऐसे लोग एकान्त से डरते हैं, क्योंकि इसमें वे अपने विचारों में डूबे हुए अकेले रह जाते हैं और उनकी मानसिक दृष्टि के सामने उनकी आसुरी वृत्तियों के पिशाच नाचने लगते हैं। लेकिन इसके विपरीत, जो व्यक्ति सत्य से प्रेम करता है, जो पवित्र बुद्धि प्राप्त करना चाहता है, वह एकान्त में मनन चिन्तन में रहना अधिक पसन्द करता है।

प्रतिभा और महानता एकान्त में पल्लवित, पुष्पित एवं पूर्ण विकसित होती हैं। साधारण से साधारण व्यक्ति भी यदि एकान्त में अपनी शक्तियों को संचित करके अपने देवत्व के उत्थान में लगादे तो वह भी प्रतिभाशाली बन जाता है। जो व्यक्ति सांसारिक अल्पकाल का सुख देने वाली इच्छाओं का त्याग कर देता है, जो झूठी लोकप्रियता और वाहवाही से जी चुराता है, जो मानव-मात्र के कल्याण के लिये एकान्त में विचार एवं कार्य-सम्पन्न करता है, वह भविष्य दृष्टा और विश्व का उद्धारक बन जाता है। जो व्यक्ति शान्ति पूर्वक अपने मन को सर्वशक्तिवान परमप्रभु में लगाकर, घन्टों प्रभु से शक्तियां प्राप्त करता है व एकान्त व मनन में लगाता है वह सिद्ध पुरुष बन जाता है, उसका पूरा व्यक्तित्व दिव्य और अलौकिक शक्तियों से भरपूर हो जाता है। अतः हमें मौन और एकान्त के वास्तविक महत्व को समझकर अपने जीवन में अपनाकर पूर्णरूप से लाभ प्राप्त करना चाहिए।

□

ब्रह्मा की जीवन कहानी

बी०के० विश्वनाथ

होती है जब भी हाजत दुनियां को रहनुमां को,
लेती है पाक रुहे फौरन ही जिस्में खाकी।
आये थे इस तरह से बाबा भी इस जहां में,
उनके गुणों का वर्णन आता नहीं बयां में।
पैदा हुए थे वह तो इक आब व ताब[1] लेकर
रुहानी जिन्दगी का आये थे ख्वाब लेकर।
दुनियावी नाम पहले था लेखराज उनका,
प्रजा पिता ब्रह्मा है नाम आज उनका।
हीरे जवाहरों के ताजिर[2] थे बे मिसाल,
पेशे में उनको अपने था बेश्तर[3] कमाल।
उनको सकूं[4] था दिल में तबियत में खाकसारी[5]
उल्फत खुदा से बेहद भारत में इनकसारी
उनकी उमर हुई जब आखिर को साठ साल
इक म्वाजज़ा[6] सा उभरा जलवा था बेमिसाल
ख्यालों में एक दिन जब डूबे हुए थे बाबा,
आई लहर सी एकदम जैसे हुआ उजाला।
यानी प्रकाश शिव का बाबा के तन में आया
आंखों में नूर उसका, सर पै था उसका साया।
सीने में उनके गोया नूरे खुदा समाया
रुहानियत का उसने दिल में दिया जलाया।
यह नूर था खुदा का खुद ही खुदा था आया
मुक्ति व जीवन मुक्ति का राज भी बताया।
सतयुग का एक नमूना फौरन वही दिखाया
उस युग की नियामतों से वाकिफ़ उन्हें कराया
देखा नजारा इक दिन विष्णु के रूप का तब
बनना है तुमको ऐसा कहकर हुए वो गायब।
शिव ने बनाया जब से ब्रह्मा को अपना माध्यम,
ब्रह्मा की शिव की रुहें रहने लगी थीं वाहम[7]
उनको हुकुम दिया तब भगवान ने वहों पर
दुनिया नई बनाओ फिर से इसी जमीं पर
होगा विनाश सारा जरिये हज़ार होंगे
सतयुग में इस जमीं पर फिर लालाजार होंगे
फरमां खुदा का सुनकर बाबा ने बदला रस्ता,

१. जरूरत २. चमक ३. अधिक ४. शान्ति ५. नम्रता ६. चमत्कार ७. साथ

दुनियां भुलाई दिल से गोया बने फिरश्ता।
दुनिया की वेहतरी[८] का इक यज्ञ सा रचाया,
कहने लगे सभी तब उनको अनादि ब्रह्मा।
हर रोज प्रातः उठकर करते थे ज्ञान वर्षा,
योग और पवित्रता पर चलती थी रोज चर्चा।
कहते हैं योग जिसको ज्ञान यह अनोखा,
ब्रह्मा ने हर किसी को यह राजे हक[९] सिखाया।
इक शोर सा उठा तब आखिर यह कौन आया,
रूहानियत के बल पर हर दिल को है लुभाया।
रहते थे योग में वो शिव का था सर पर साया,
जैसे कि योग खूद ही इन्सान बन कर आया।
रहते थे बेश्तर[१०] वो ख्याले खुदा में गरक[११],
छोटे बड़े का सारा दिल से मिटाया फरक।
चेहरे पर दिव्यता थी, थी खुश गवार फितरत[१२]
हर एक की भलाई करना थी उनकी आदत।
रूहानियत का जलवा[१३] लोगों में भर दिया था,
गोया सभी के ऊपर जादू सा कर दिया था।
हर काम खुद ही बाबा बच्चों के साथ करते,
मुश्किल जिसे समझते अपने ही हाथ करते।
आता था जो भी मिलने संतुष्ट होके जाता,
बाबा से पाके इज्जत फला नहीं समाता।
पुरजोश[१४] हौसला था गमगीं कभीं न होते,
बुद्धि के संतुलन को बाबा कभी न खोते।
हर दिल अजीज थे वह बातों में चाशनी थी,
उल्फत[१५] से भरा था चेहरे पर रोशनी थी।
हर एक को बराबर खुशियों का जाम[१६] देते,
सतयुग के आगमन का सबको पयाम देते।
नव उम्र बच्चियों को था योग में विठाया,
रुहानियत का जजबा[१७] उनमें फिर जगाया।
अपने ही पास रख कर बरसों उन्हें पढ़ाया,
भगवान से मिलन का रस्ता नया बताया।
उनमें से जिसने अपना भगवान को बनाया,
रुहानियत से उनको बाबा ने खुद सजाया।
वह सब ही थीं मुकम्मल[१८]और ज्ञान से भरी थीं
असमत[१९] के मामले में लाखों में वह खरी थी।
गंगायें बन गई सब ज्ञान और पवित्रता की,

८. भलाई ९. ईश्वरीय भेद १०. अधिकतर ११. डूबे हुए १२. आदत १३. जोश १४. जोशीला १५. मुहब्बत १६. प्याला १७. जोश १८. पूर्ण १९. चाल-चलन

उठने लगी तरंगे सेवा की धारणा की।
छोटा-सा एक जत्था, तैयार हो चुका था,
मन में उमंग उनके दिल ज्ञान से भरा था।
एक ट्रस्ट सा बनाया अपनी लगा के दौलत,
फिर शक्तियों को सौंपा उनकी बढ़ाई इज्जत।
ब्रह्माकुमारियों का इस तरह विद्यालय बना,
योग और पवित्रता की मिलती है उसमें शिक्षा।
एक-एक को बुला कर बाबा ने यह बताया,
सर्विस करेगी कैसे यह राज भी सिखाया।
बाहर निकल पड़ी सब सर्विस का काम लेकर,
चलती रही बराबर शिव का पयाम लेकर।
हर इक ने फिर, अपना कदम जमाया,
कोई कहीं पर बैठा कोई कहीं समाया।
गफलत की नींद से अब माताएं जग गई थीं,
स्वमान और दिव्यता को पाने में लग गई थीं।
पांचों विकार सबने मन से भुला दिया था,
भारत की श्रेष्ठता का बीड़ा उठा लिया था।
सतयुग की रहनुमा ये, ये ब्रह्माकुमारियां हैं,
मूरत पवित्रता की भारत की नारियाँ हैं।
सुख शांति दिलाना मकसद है इनका आला[२०],
रहती है पाक दामन[२१] पोशाक है निराला।
हउआ[२२] की बेटियां हैं सीता की हम जिन्स हैं,
रुहानियत के बल पर दुनिया की कशिश हैं।
रखते थे पर बराबर बाबा खबर सभी की,
देते थे प्यार उनको मिलते थे जब कभी भी।
बच्चों की हर चलन पर रखते थे ध्यान बाबा,
देते थे हर किसी को इज्जत व मान बाबा।
गुलशन लगाया उनका बढ़ता ही जा रहा है,
कितने ही गमजदों का यह एक आसरा है।
सब काम करके पूरा दुनिया से तोड़ा रिश्ता,
बैठे वतन में जाकर और बन गये फरिश्ता।
यह वाकया था गुजरा अठारह जनवरी को,
यह दिन हुआ मुकद्दस[२३] तबसे हर किसी को।
बाबा की याद में हम इस दिन को हैं मनाते,
उनके असूल जर्री[२४] दुनिया को हैं बताते।

---

२०. ऊँचा २१. पवित्र २२. सरस्वती (Eve) २३. पवित्र २४. सुनहरे सिद्धान्त

आते हैं मुझको याद वे सुहावने दिन

ब्र० कु० प्रेम प्रकाश, नई दिल्ली

ज्यों-ज्यों १८ जनवरी का दिन समीप आता जाता है त्यों-त्यों पिताश्री ब्रह्मा बाबा के साथ बिताए हुए दिन चित्र पट की भांति मानस पटल पर एक-एक करके आते जाते हैं, वे सुहावने दिन, वह अनोखी खुशी भर देने वाला रूहानी मिलन, वे सब अवसर जब-जब मैं बाबा से मिला, ऐसा लगता है मानो कल की ही बात हो। हज़ारों नर-नारियों के जीवन को नया मोड़ देने वाली वह सचमुच ही एक महान हस्ति थी, जिसका एक निराला एवं आकर्षक व्यक्तित्व था। आज जब उस महान हस्ति की याद ताज़ा हो उठती है तो मन अन्दर ही अन्दर उस आत्मा को कोटि-कोटि धन्यवाद करता है।

जिन्हें भी बाबा के साथ समीप सम्पर्क में आने का अवसर मिला, वे सचमुच ही सौभाग्यशाली आत्माओं की गिनती में हैं। किसी भी महान आत्मा का संग प्राप्त होने से मन को खुशी तो मिलती ही है, परन्तु पिताश्री जी की तो सारे सृष्टि-चक्र में एक अति विशेष भूमिका रही। इसलिए पिताश्री जी जिन्होंने संसार को बदलने के लिए आध्यात्मिक क्रान्ति का बिगुल बजाया, उनका संग जिन्हें प्राप्त हुआ, उन्हें तो अपार एवं अनन्त खुशी मिली होगी। उन सौभाग्यशाली, नहीं-नहीं पदमापदम भाग्यशाली आत्माओं में से मैं भी एक हूँ जिसे ऐसा श्रेष्ठ संग प्राप्त हुआ।

मैंने उस समय बी. एस. सी (B. Sc.) की परीक्षा पास ही की थी जब मैं १९६२ में पिताश्री जी के सम्पर्क में आया। प्रथम मिलन में ही बाबा ने मुझे ईश्वरीय सेवा का ताज पहनाया, ईश्वरीय सेवा की एक नई प्रेरणा दी। बाबा बच्चों में जो योग्यता देखते, उसे क्रियात्मक रूप देने अथवा उसे अनेक आत्माओं की सेवा के प्रति लगाने का प्रयास करते। मुझे बाबा ने कहा, "बच्चे, समाचार-पत्र द्वारा तुम बहुत सेवा कर सकते हो। तुम प्रतिदिन अखबार तो पढ़ते ही हो। जो लोग यह समाचार डलवाते हैं कि हमारा अमुक सम्बन्धी स्वर्ग सिधार गया (Left for heavenly abode) तो तुम उन्हें यह बताओ कि स्वर्ग और नर्क कहाँ हैं। जब यहाँ है ही नर्क, तो पुनर्जन्म नर्क में ही मिलेगा, वह स्वर्ग में कैसे जाएगा। यह बातें बड़े स्नेह भरे शब्दों में पत्र लिखकर समझाओ। प्रतिदिन जितने भी समाचार छपते हैं, उनके सम्बन्धियों को ऐसे पत्र लिखो।" मैंने उसी समय एक ऐसा पत्र तैयार किया और बाबा को दिखाया। बाबा ने अपने हस्त-कमल से लाल पैन्सिल से कुछ संशोधन किया और कहा कि बच्चे दिल्ली जाकर यह सेवा करना। मैं एक नई उमंग लेकर मधुबन से दिल्ली वापिस आया और मुझे याद है कि अनेक वर्षों तक यह सेवा चलती रही।

युवा वर्ग को प्रेरणा

बाबा युवकों में सदा नया उमंग व जोश भरते थे। उन्हें सादा, पवित्र एवं श्रेष्ठ जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देते रहते थे। बाबा ने सभी को मन, वचन, कर्म से ब्रह्मचर्य का पालन करने की प्रेरणा दी। कुमार एवं कुमारियों को यह शिक्षा देते कि फैशन आदि से अपने को बचाकर रखो। लोगों को अपने शरीर पर नहीं बल्कि अपने दिव्य चरित्र पर आकर्षित करने वाले बनो। बाबा ने निराकार परमात्मा शिव का साकार माध्यम बनकर एक नए

विश्व की नींव रखी जिसका आधार केवल 'पवित्रता' है। अतः यह उचित ही था कि बाबा ने युवा पीढ़ी को सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य का पाठ पढ़ाया ताकि उनकी शक्तियों को (जिसमानी एवं मानसिक) मानव की सेवा में लगाया जा सके। उन्होंने पति-पत्नी के सम्बन्ध में भी ब्रह्मचर्य पर जोर दिया, जिसे आज का देह-अभिमानी मानव असम्भव समझता है। परन्तु बाबा ने इस असम्भव बात को सम्भव ही नहीं अपितु सहज करके बताया कि केवल अपने मन को देह-अभिमान से मोड़कर आत्म-स्थिति में ले जाना है तथा अपने को और अपने जीवन साथी को एक ही परमात्मा पिता की सन्तान निश्चय करना है। इससे स्वतः ही विकारी दृष्टि, वृत्ति समाप्त हो जाएगी। तथा मन में पवित्रता का आगमन होगा।

बाबा ने आत्म-विश्वास भरा

एक बार जब मैं मधुबन में था तो एक सुहावनी सुबह को बाबा ने प्रातःकाल की वाणी में बार-बार यह कहा कि जो कार्य युवक कर सकते हैं, वह बड़ी आयु वाले नहीं कर सकते। बाबा ने यह बात इस सन्दर्भ में कही थी कि माउन्ट आबू में उस समय तक आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन नहीं हुआ था जबकि भारत के अनेक नगरों में यह प्रदर्शनी हो चुकी थी। उसका कारण यह था कि माउन्ट आबू में प्रदर्शनी के लिए किसी स्कूल आदि की अनुमति नहीं मिली थी। बाबा का संकेत मेरी ओर था। क्लास के बाद बाबा ने मुझे अपने कमरे में बुलाया और कहा कि, "बच्चे तुम जयपुर में राजस्थान शिक्षा बोर्ड के सचिव को यहाँ के हाई स्कूल की बिल्डिंग की अनुमति के लिए लिखो ताकि यहाँ प्रदर्शनी का आयोजन किया जा सके।" मुझे यह कार्य सौंपे जाने पर मेरी खुशी का पारावार नहीं रहा और मुझे अपने पर गर्व महसूस हुआ कि बाबा ने यह कार्य मेरे ज़िम्मे रखा है। मैंने उसी समय एक पत्र तैयार किया, बाबा से पास कराया और जयपुर के लिए रवाना हो गया। इस घटना ने मेरे मन पर एक गहरी छाप डाली, मेरे अन्दर एक नयी उमंग तथा आत्म-विश्वास पैदा हुआ। तब से लेकर आज तक ईश्वरीय सेवा के क्षेत्र में मुझे कोई भी बड़ी ज़िम्मेदारी संभालने के लिए संकोच नहीं होता क्योंकि बाबा ने जो वरदान दे दिया था।

तुम बुद्धू हो, तुमने शिव बाबा का परिचय नहीं दिया।

जब दिल्ली में प्रथम बार एल-आई-सी (L.I.C.) ग्राउन्ड में औद्योगिक मेले में हमारी ओर से भी प्रदर्शनी लगी थी तो उस समय काफ़ी सेवा हुई थी और अनेक आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश मिला था कनाट प्लेस का क्षेत्र होने के कारण विदेशी लोग भी काफी संख्या में प्रदर्शनी में आते थे। एक दिन उस मेले में जर्मनी का राजदूत एवं अन्य अधिकारी आये। तथा हमारे स्टाल पर भी पधारे। समय तो उनके पास बहुत कम था और वे केवल प्रदर्शनी का चक्कर ही लगा रहे थे। इस अवसर पर उन्हें अंग्रेजी में समझाने के लिए आलराऊन्डर दादी ने मुझे कहा था। समय के अनुसार संक्षेप में मैंने उन्हें प्रदर्शनी का चक्कर लगवाया। जब यह समाचार मैंने मधुबन में बाबा को लिखा तो बाबा का उत्तर पाकर मैं हैरान रह गया। बाबा ने लिखा, "प्रेम प्रकाश बच्चा तो बुद्धू है, उसने उन्हें शिव बाबा का परिचय तो दिया ही नहीं, चूँकि सब धर्म वालों को अपने रूहानी पिता का परिचय तो अवश्य मिलना चाहिए।" कितना ऊँचा दृष्टिकोण था बाबा का। बाबा का यह लक्ष्य रहता था कि शिव बाबा का परिचय आत्माओं को अवश्य मिलना चाहिए, चाहे दूसरे चित्रों पर कम समझाओ। इस प्रकार मीठे बाबा भिन्न-भिन्न प्रकार से हम बच्चों को आगे बढ़ाते रहते थे।

नैतिकता और नैतिक-पतन

—राजेन्द्र कुमार, उज्जैन

समस्याएं.....समस्याएं..... और केवल समस्याएं आज सभी देशों, मनुष्यों अर्थात् सारे ही विश्व के सामने समस्याओं का सागर उपस्थित है। सारा ही विश्व समस्याओं का सागर बन गया है। समस्याओं से जूझना ही आज के मानव की नियति बन गई है। आज सारा ही विश्व अनेक प्रकार की सामाजिक, राजनैतिक, और आर्थिक समस्याओं के दौर से गुजर रहा है। सामाजिक समस्या के अन्तर्गत उससे जुड़ी हुई एक समस्या आज विश्व के सामने, समाज के सामने और मानव के सामने नैतिक पतन अर्थात् अनैतिकता की है। नैतिक पतन की समस्या से आज सारा ही विश्व ग्रसित है और अनैतिकता को समाप्त करने लिए प्रयत्नशील है।

विद्यमान समाज की रचना में नैतिकता का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है। जो महत्व आत्मा का मानव शरीर के लिए है, वही महत्व नैतिकता का मानव समाज के लिए है। नैतिकता मानव समाज की रीढ़ है। नैतिकता केवल मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास के लिए ही आवश्यक नहीं है, बल्कि वह सम्पूर्ण मानव समाज के विकास के लिए आवश्यक है।

नैतिकता विहीन मनुष्य और समाज क्या हो सकता है? यह प्रश्न आज हम सभी के सामने उठता है और कि यह अनैतिकता हमारे समाज को कहाँ ले जाएगी? अनैतिकता का प्रभाव स्वयं पर तथा समाज पर बड़ा ही बुरा पड़ता है। नैतिकता विहीन जीवन न तो जीवन कहलाने लायक रह जाता है और न ही नैतिकता विहीन मनुष्य मानवीय गुण सम्पन्न हो सकता है। नैतिकता के अभाव में कोई भी देश या समाज उन्नति की कल्पना नहीं कर सकता है। यदि हम अपने ही देश का उदाहरण लें, तो हम पायेंगे कि यदि हमारे देश के नागरिकों का नैतिक चरित्र उच्च कोटि का होता, तो आज यह देश न जाने कहां का कहां पहुंच चुका होता। नैतिक पतन के कारण ही आज विश्व और समाज भ्रष्टाचार, व्यभिचार, कालाबाजारी, जमाखोरी जैसी अनेक समस्याओं से ग्रसित है। इन समस्त समस्याओं के मल में अनैतिकता ही है।

यदि वर्तमान मानव समाज व मानव सभ्यता को निकट से समझने का प्रयत्न किया जाए, तो हमें स्वाभाविक रूप से यह बात दृष्टिगोचर होगी कि मनुष्य में एवं सम्पूर्ण मानव समाज में नैतिक पतन शनैः-शनैः बढ़ता ही जा रहा है। सामान्य तौर पर हम और हमारा समाज अनुभव भी करता है कि मानव मात्र और उससे सम्पूर्ण मानव जाति ही अनैतिकता की दलदल की ओर अग्रसर होती जा रही है।

नैतिकता आज के समय में केवल मात्र पुस्तकों में लिखी हुई वस्तु रह गई है और नैतिकता को धारण करना तो दूर रहा, इस सम्बन्ध में विचार करना या इस पर कुछ कहना-सुनना भी आज के आधुनिक कहलाने वाले मानव के लिए अपना समय गंवाना ही रह गया है। आज के मानव ने नैतिकता की परिभाषा और स्वरूप दोनों को अपनी सुविधा और बुद्धि के अनुसार ही परिवर्तित कर लिया है। और रही-सही नैतिकता को मानव ने अपने आधुनिक विचारों के कारण कुचल दिया है। आज का मानव सोचता है कि मैं जो कुछ कर रहा हूं वह ठीक ही कर रहा हूं। अगर वह कुछ ऐसा आभास भी पाता है कि वह कुछ ठीक नहीं कर रहा है, तो वह दूसरों को देखकर या दूसरों के प्रवाह में आकर अपनी आन्तरिक आवाज को दबा देता है। (खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है।)

यदि वर्तमान मानव समाज के बीच हम नैतिकता को देखना चाहें, तो हमें निराशा ही हाथ लगेगी। आज मानव अपनी उस क्षमता को शनैः-शनैः खोता ही जा रहा है, जो नैतिकता को धारण

करने के लिए आवश्यक है ।

हम अपने समाज के बीच यह स्पष्ट अनुभव कर सकते हैं कि वह नैतिक पतन की ओर अग्रसर है। अनैतिकता की ओर उसका झुकाव कुछ ज्यादा ही दिखाई देता है । इसे आज हर विवेकशील व्यक्ति और चिन्तक अनुभव भी करता है और यहाँ तक कि वह समाज में, व्यक्ति में आ रहे इस अनैतिकता के ज्वार के प्रति भयभीत भी है । परन्तु वह चाह कर भी इस दिशा में कुछ उपयोगी व ठोस परिणाम प्राप्त नहीं कर पा रहा है । जबकि हम यह जानते हैं कि अनैतिकता हमारे पतन का मुख्य कारण सिद्ध हो रही है। अनैतिकता वह वस्तु है, जो मानव, समाज और देश को खोखला बना देती है ।

वास्तव में देखा जाए तो महत्त्वपूर्ण समस्या का उचित समाधान तब तक प्राप्त नहीं किया जा सकता, जब तक कि यह न जान लिया जाय कि नैतिकता क्या है ? व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर नैतिकता का क्या महत्व है ? साथ ही साथ यह जाने बगैर कि नैतिक पतन क्यों हो रहा है इस समस्या का हल नहीं निकल सकता । क्या इस समस्या का निवारण सम्भव है और यदि संभव है, तो किस प्रकार ?

नैतिक पतन का कारण

यदि हम गहराई में जाएँ तो नैतिक-पतन का सबसे मुख्य और आन्तरिक कारण अपने आपको न जानना अर्थात् देहअभिमान ही है । आज का मानव अपने आपको भूल, अपने परमपिता को भूल देहभान के वश हो चुका है । इसी कारण उसके अन्दर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष आदि विकारों की प्रवेशता हो चुकी है । इन विकारों के कारण ही उसके अन्दर ही अनेक प्रकार की इच्छाओं और वासनाओं की उत्पत्ति होती जा रही है और इनकी पूर्ति नहीं होने के कारण ही वह अनैतिकता की ओर अग्रसर होता जा रहा है । जब एक बार उसके कदम अनैतिकता के मार्ग पर बढ़ जाते हैं, तो फिर उन्हें रोकना मुश्किल ही नहीं असम्भव भी हो जाता है ।

जब मनुष्य के अन्दर काम विकार की उत्पत्ति होती, तो वह उसकी पूर्ति के लिए अनैतिकता का सहारा लेता है । काम से उसके अन्दर क्रोध की उत्पत्ति होती है, जिसके कारण वह खुद भी जलता है और दूसरों को भी जलाता है । क्रोध के कारण ही उसके अन्दर लोभ की प्रवेशता होती है । लालच भी लोभ का ही रूप है । जिसके लिए कहा जाता है कि लालच बुरी बला है । लोभ के कारण वह अनैतिक कार्य करने लगता है । लोभ की पूर्ति होने के बाद उसमें मोह पैदा होता है । लोभ-मोह की वृत्ति के कारण ही वह पापाचार, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी का सहारा लेता है । जब उसकी एक इच्छा पूर्ण होती है, तो दूसरी तैयार हो जाती है । आवश्यकताएँ या इच्छाएँ मकड़ी के जाले के समान हैं, जो उसे अपने अन्दर फंसाती ही चली जाती हैं । और मानव उन्हें पूरा करने के लिए अपनी नैतिकता को खोता चला जाता है । इन सब विकारों के बाद उसमें अहंकार की प्रवेशता होती है और अहंकार के वश होकर मनुष्य अनैतिकता को भी नैतिकता समझने लगता है ।

इस प्रकार आज का मानव इन काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों के वशीभूत होकर अनैतिकता के गर्त में डूबता ही चला जा रहा है । इसके साथ ही साथ नैतिक पतन के कारणों में सिनेमा, शराब और सिगरेट आदि भी शामिल हैं । आज सिनेमा भी मनुष्य की नैतिकता को समाप्त करने में एक विशिष्ट भूमिका अदा कर रहा है ।

उपचार

आज का मानव स्वयं को भुल चुका है । वह यह नहीं जानता कि वह कौन है, कहाँ से आया है और उसे वापस कहाँ जाना है ? यदि उसे अपना सत्य परिचय हो कि वह आत्मा है, जो इस शरीर में भ्रकुटी में निवास करती है । जब उसे यह ज्ञान हो जाये कि मैं आत्मा हूँ और हम सभी आपस में भाई-भाई हैं, तो वह अनैतिक कार्यों द्वारा किसी को दुख

पहुँचाने की चेष्टा नहीं करेगा। आत्मा के ज्ञान के साथ-साथ परमात्मा का ज्ञान होना भी आवश्यक है। क्योंकि आज का मानव अपना आत्मबल खो चुका है। पुनः उस आत्मबल को प्राप्त करने के लिए उस सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा का परिचय होना आवश्यक है। क्योंकि बगैर परमात्मा को याद किये हमारे अन्दर नैतिकता को प्राप्त करने के लिए आवश्यक आत्मबल नहीं आ सकता। इसलिए परमात्मा के साथ बुद्धियोग जोड़ना आवश्यक है।

यदि मानव यह समझ ले कि वह परमात्मा की सन्तान आपस में भाई-भाई हैं, तो भाई-भाई की वृत्ति के कारण वह नैतिक पतन से बच सकेगा। व हमें स्वयं का व परमात्मा का ज्ञान हो जाने के कारण उस परमात्मा से हमारा बुद्धियोग लगा रहेगा। जब हम अपने आत्मस्वरूप में स्थित हो जाते हैं तो परमपिता परमात्मा की याद सहज ही आने लगती है। जिसके कारण हमारा आत्मबल बढ़ेगा और आत्मिक बल द्वारा ही मानसिक तनाव और सभी प्रकार के भेदभाव एवं अनैतिक कार्य समाप्त हो जायेंगे तथा समाज, देश व विश्व सुधरता चला जावेगा।

इस प्रकार वह दिन दूर नहीं होगा जब सारा विश्व नया, पवित्र, सुखदायी तथा शान्ति सम्पन्न बन जावेगा। जहाँ पर कि नैतिकता पूर्ण चरित्रों से भरपूर देवी-देवताओं का राज्य होगा।

□

(पृष्ठ ५२ का शेष)

तो नहीं किया तथापि यह भी एक पाप ही है। कारण कि स्वप्न ही हमारी पूरी दिनचर्या का परिचायक है। यदि हम पूरे दिन रहे ही देही अभिमानी (आत्मिक स्थिति में) होंगे तो सम्भवतः हमारे सपने भी तदनुरूप ही होंगे। आत्मिक स्थिति केवल निष्पाप ही नहीं अपितु श्रेष्ठ कर्म भी बनाने की अद्वितीय कला है। अतः इसलिये ब्रह्मचर्य की सूक्ष्मता को जानना ही सभी पापों से बचना है। अर्थात् जो प्रस्तुत विधि से ब्रह्मचर्य धारण करता है वही सच्चा-सच्चा वृहन ब्रह्मचारी है। अब प्रश्न है, कि यह स्थिति कैसे बने तथा इसका आधार क्या है। आदि-आदि।

"ब्रह्मचर्य का आधार राजयोग"

देवताओं के ललाट पर चमकती हुई ज्योति और मस्तक पर सुशोभित प्रभामण्डल का ताज उनकी सम्पूर्ण पवित्रता का परिचायक है। वास्तव में उन्हें वह उपलब्धी सहज राजयोग की ही देन है। राजयोग वह अमुल्य निधि है जोकि मानव को सम्पूर्ण निर्विकारी बनाने की अद्वितीय कला है। राजयोग के द्वारा ही मनुष्य स्वयं को अशरीरी आत्मा विचारता है और पतित पावन देहातीत शिव बाबा से अपना पिता-पुत्र का पुनः यथार्थ सम्बन्ध जोड़ लेने के कारण ही उसे ब्रह्मचर्य सहज ही नहीं अति सहज तथा सरल ही नहीं सरस भी हो जाता है, जोकि ईश्वरीय देन है। कमाल है शिव बाबा की जिस काम विकार को लोग सैकड़ों वर्षों से अपराजित मानते आये वह आपने कितना आसान कर दिया हाँ आवश्यकता है केवल निश्चयात्मिक बुद्धि द्वारा शिव बाबा को याद करने की। फलित ब्रह्मचर्य में जो अपार शक्ति और असीम आनन्द निहित है उसका अनुभव करता हुआ राजयोगी का ब्रह्मचर्य एक स्वभाविक गुण हो जाता है।

□

"शास्त्रवादिता और ब्रह्मचर्य"

"ब्र० कु० अवतार सिंह, आबू"

यदि हम आध्यात्मिक सिद्धान्त पक्ष द्वारा मान्य-सिद्धान्तों को महत्ता देते हुए तनिक सी गहराई अथवा निष्पक्ष भाव से शास्त्रों के पृष्ठों से खेलें तो हमें सहज ही ज्ञात होगा कि चार वेद, छः दर्शन, अट्ठारह पुराण, बीस स्मृतियों और एक सौ आठ उपनिषदों में कोई भी ग्रन्थ ऐसा नहीं कि जिसमें ब्रह्मचर्य की महिमा और काम विकार की निन्दा न की गई हो, काम विकार को कहीं नर्क का द्वार बतलाया गया तो कहीं अति विषैले भुजंग से उसकी उपमा की गई, कहीं मानव के नैतिक पतन का कारण माना तो कहीं अनेकानेक सन्तापप्रद समस्याओं की जननी घोषित किया गया, कहीं मृत्यु का निमन्त्रण। किसी स्थान पर कहा गया कि काम विकार के गड्ढे में गोता मारने को उद्यत होना माना किसी भड़कती हुई आग के बीच छलाँग मारने की तैयारी करना तथा कहीं पर काम-विकार से युक्त मनुष्य को बिना सींग एवं बिना पूँछ के कुरूप दुःखदायक पशु से भी नीच की संज्ञा दे दी गई। कहीं दुःखद गृहस्थ रूप काला पाणी का कैदी बतलाया गया। इसी प्रकार कहीं आधि-व्याधि से पीड़ित होने की बूटी तथा कहीं आत्मा की अधोगति का कारण। अन्य कहीं मनुष्य के विकट प्रतिद्वन्द्वी, दुर्जेय शत्रु की संज्ञा दी गई और कहीं दुःखों की खान कहा गया। और इसके विपरीत ब्रह्मचर्य को महिमामय स्वर्ग की प्राप्ति का मूल आधार माना गया। ऐसे ही कहीं इसकी उपमा अमृत से की गई तो कहीं सुख समृद्धि का मार्ग कहा गया, कहीं ब्रह्मचर्य के पालन करने वाले रिष्ट-पुष्ट एवं बलिष्ट तथा उनकी दीर्घायु, महानता एवं मृत्यु शय्या पर भी काल को ललकारने की वीरता का वर्णन करते हुए यही एक संजीवनी बूटी अथवा परम औषधि जिसका यह परिणाम है। इसी प्रकार इसे कहीं परम ज्ञान, परम बल तथा कहीं परम धर्म घोषित किया गया तथा किसी स्थान पर मृत्यु पर विजय पाने का साधन और कहीं पर देव पद पाने का मूलआधार। बात भी सत्य है, कारण कि पवित्रता ही वह अमुल्य निधि है, जोकि सम्पूर्ण सुख, शान्ति, आनन्द और प्रेम की कुँजी है। वास्तव में पवित्रता की ही तो महानता है तथा आज भी पवित्रता को विशेष मान्यता प्राप्त है। और अलौकिक जीवन का तो महत्त्व ही पवित्रता पर आधारित है, पवित्रता के बिना तो जीवन निस्सार है, नीरस है। ब्रह्मचर्य के पालन से ही तो मानव परम पूज्य और गायन योग्य बनता है। वास्तव में जो पवित्र है, वही मानव है। वरना पवित्र नहीं तो दानव ठहरा, कारण कि यही मानवीय श्रेष्ठ धर्म अथवा धारणा है।

वास्तव में पवित्रता के बिना तो जीवन के फ़लने-फूलने की आस लगाना तो वैसे ही है जैसे कि नीचे से किसी पौधे की जड़ें काट कर ऊपर से पानी सींचते हुए उस पर फल-फूल-उगाने की आस में बैठे रहना तथा इसी के ही अभाव में तो आज अनेकानेक हिंसात्मक आन्दोलन, चोरी, डकैती, अपहरण, बलात्कार, दंगे, अपराध हो रहे हैं। इसे अपनाना माना ही सभी पापों का अन्त करना अर्थात् लाख दुःखों की एक दवा "पवित्रता"। कारण कि ईश्वरीय महावाक्यों के अनुसार यही सबसे बड़ा पुण्य है। किसी को पवित्र बनाने में स्वयं का योग देना माना ही उसे पुण्य आत्मा बनाने जैसी श्रेष्ठ सेवा का पात्र बनना है। कारण कि उसे स्वयं तथा अन्य को आत्मघात करने जैसे महापाप से बचाना है। क्योंकि काम-विकार में प्रवृत्त होना ही जीव-घात करना है, तथा पवित्रता ही प्रभु मिलन की

नींव है। जैसे कि चुम्बक और लोहा—लोहे को चुम्बक अपनी तरफ तभी खींचता है जब कि उस पर की कट (जंक) निकल चुकी हो, अथवा वह चुम्बक तुल्य ही स्वच्छ हो, इसी प्रकार परम पिता शिव परमात्मा जोकि सर्वदा ही पावन हैं, से मिलने हेतु उनके जैसा बनना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है।

किन्तु आश्चर्यजनक शोक यह है, कि आज बड़े-बड़े विद्वान पंडित, महाशय अपने प्रवचनों में ब्रह्मचर्य को महिमामय एवं काम विकार को निन्दित घोषित करते हुए बड़े गौरव पूर्वक गीता के श्लोकों का इस प्रकार प्राकथन करते हुए सुने जाते हैं, कि भगवानुवाचः हे महाबाहो! सूक्षम बलवान और अत्यन्त श्रेष्ठ आत्मा को जानकर तू इस काम रूपी दुर्जेय शत्रु को अवश्य ही मार डाल, कारण कि विषयासक्त हुए मानव की विविध कामनायें होती हैं। जिससे क्रोध उत्पन्न होता, क्रोध से मूड़भाव होने से स्मृति विभ्रमित हो जाती है। जिससे विवेक का नाश तथा क्षमता शून्य हो जाता है। उचित अनुचित को जाँचने की शक्ति क्षीण होती कि अमुक कार्य मुझे कैसे करना है और जिसमें प्रवृत्त हूँ क्या कर रहा हूँ आदि-आदि। अतः यही मानव का पतन कारक है, इस लिए इस को जड़ से विनष्ट करना ही श्रेयस्कर होगा। तथा इसी के साथ-साथ ही वह स्वयं को सुशील, स्वावलम्बी तथा श्रेष्ठ-धर्मावलम्बी भी बतलाते हैं। और रात्रि को माँस मदिरावलम्बी एवं काम विकार के गड्ढे में गोता मार कर विर्कमावलम्बी बन जाते हैं। अहो यह कैसी दयनीय दशा है, कैसी विडम्बना है मानव के भाग्य की! अहा! कितना लाभकारी होता कि वह महाशय करनी और कथनी को समानान्तर स्थान देते।

"शास्त्रों में भी देहभाव को गौण माना गया"

इस प्रकार के उदाहरण शास्त्रों में कई पाये जाते हैं जहाँ कि ब्रह्मचर्य को प्राथमिकता और दैहिक आकर्षणों को बिल्कुल ही गौण स्थान दिया गया है। जैसे कि मैत्रायण्युपनिषद ३६७ तृ० प्र० ४, ५ में लिखा है कि यह शरीर विकर्मों द्वारा निर्मित चेतना रहित (आत्मा विहीन) मानो नर्क ही है। मूत्र के द्वार से निकलने वाला हड्डियों से गठित चमड़े से मढ़ा मल, मूत्र, पित, कफ से भरा अन्य भी कई मलों से युक्त मानो सब खराब अथवा त्याज्य वस्तुओं का खज़ाना हो—जैसे क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, बुढ़ापा, भूख, प्यास, दीनता, नास्तिकता, राग, द्वेष, चंचलता, हिंसा, विषभरी दृष्टि, निर्लज्जता, विषमता आदि का कारण रूप भी तो यही है। यह शरीर ही तो आत्मा को रोग-शोक से पीड़ित करने वाला है, तथा अनेक प्रकार के विष्टा युक्त दुर्गन्ध से भरा पड़ा है। इससे मोह करना तो बहुत बड़ा निखिद्ध काम है। इससे तो दूर रहना ही बहुत बड़ी सड़ान्ध से बचना है। इस बुरे गड्ढे में जान बूझकर गिरना तो किसी अन्धेरे कुएँ में गिरने के समान ही है। वास्तव में इससे बचना ही तो मानव की चतुराई है और इसमें गिर जाना तो उसकी नादानी अथवा कायरता ही सिद्ध होती है। कारण कि इस स्थिति में उसका मुँह काला अर्थात् उसकी काली करतूतें ही उसके लिए काला कुआँ बन जाती हैं। यानी वह धर्म और कर्म की मर्यादाओं को लाँघकर मानवता से गिरता हुआ पशुओं से भी बदतर बन जाता है। यही कारण है, कि वह विवेक को खो बैठता है।

"ब्रह्मचर्य का अर्थ"

वास्तव में शास्त्रों में जिसे श्रेष्ठतम यज्ञ कहा है वह ब्रह्मचर्य ही है। कारण कि इसके पालन से ही आत्मिक बोध होता है। अतः जो मनुष्य ब्रह्मचर्य रूपी यज्ञ करता है, वह ब्रह्म लोक को प्राप्त होता है। इसे ही सत्रायण भी कहते हैं, क्योंकि सत्य की रक्षा केवल ब्रह्मचर्य द्वारा ही हो सकती है। इसी को मौन भी कहा जा सकता है कारण कि ब्रह्मचर्य के द्वारा ही आत्मा और परमात्मा के विषय में मनन करना सम्भव है। इसको अनशन (व्रत) भी कहते हैं। व्रत महीने में दो विशेष महत्वपूर्ण माने जाते हैं। एक वह

जो दो महीने के बीच का दिन जिसे संक्रान्ति कहते हैं, को तथा दूसरा कृष्ण पक्ष और शुक्लपक्ष के संधि-काल की रात्रि जिसे पूर्णमासी कहते हैं, को इन दोनों ही दिनों में कथावाचक-गण सत्यनारायण की कथा सुनाते हैं और श्रोतागण बड़ी ही उत्सुक्ता-पूर्वक सुनते हैं। तदन्तर ही व्रत को सफल माना जाता हैं, वास्तव में अब पुनः वह पुनीत पर्व भी आ पहुँचा जिसकी यादगार आज तक भी पूर्वोक्त विधि से मनाई जा रही है। स्मृति रहे कि अब जो समय चल रहा है वह भी एक विशेष ही पुनीत पर्व के रूप में चल रहा है। कारण कि एक कलियुग और सतयुग का सन्धिकाल अथवा पूरे कल्प की संक्रान्ति तथा पूर्णमासी भी इसी अवधि विशेष को कहा जाता है। जहां पर स्वयं ज्ञानसिन्धु परमात्मा सच्ची-सच्ची सत्यनारायण की कथा सुना रहे हैं। अतः ईश्वरीय निर्देशानुकूल यही समय वास्तविक अनशन अर्थात ब्रह्मचर्य रूप व्रत रखने का समय है, तथा आरण्य गमन भी इसी को कहते हैं। छांदोग्य उ० २८०पं०३,४ स्वर्ग में अरण्य नामक दो समुद्र कहे गये हैं। जो अन-रस से भरे अर्थात् अमृतरस से परि-पूर्ण जहां अपराजित नामक पुरी तथा प्रभुनिर्मित स्वर्ण मण्डल हैं, को ब्रह्मचर्य द्वारा ही प्राप्त किया जाता है। अर्थात् ब्रह्मचर्य को अपनाना माना सम्पूर्ण सुख-शान्ति, आनन्दमय रूप अर और ण्य नामक समुद्र यानि आरण्य में गमन करने की तैय्यारी करना। वास्तव में इसी का सही अर्थ न समझने के कारण वह लोग जंगलों में भागते हैं। तथा अन्य लोगों के मन में भी यह गलत धारणायें बन गईं कि ब्रह्मचर्य तो जंगलों में भागने के बाद का ही विषय है। इसी प्रकार जो मनुष्य माया से अपराजित हो या जहां माया पराजित न कर सके वही अपराजितपुरी अथवा स्वयं परमात्मा द्वारा निर्मित स्वर्ण मण्डल रूप स्वर्ग है। और इसे ही तत्व ज्ञान भी कहते हैं। क्योंकि ब्रह्मचर्य द्वारा ही तत्व (ब्रह्म) यानी ब्रह्मलोक का यर्थात् ज्ञान होना सम्भव है। वास्तव में ब्रह्मचारी ही तत्व दर्शी है तथा इसे इष्टदेव कहना भी अनुचित नहीं। कारण कि यही मानव का इष्टरूप अभिन्न मित्र है जोकि पग-पग पर मानव की रक्षा करने में समर्थ है।

नेष्टिक ब्रह्मचारी

ऋषि मुनियों ने मानव के जीवन को चार भागों में विभक्त किया है, जिन्हें चार प्रकार के आश्रमों की संज्ञा दी है। गृहस्थ, वानप्रस्त, सन्यास और ब्रह्म-चर्य। इनमें ब्रह्मचर्य को प्रमुख माना गया है, क्योंकि इन अन्य तीनों ही आश्रमों में किसी भी स्थिति में ब्रह्मचर्य में रहना अनिवार्य है। जैसे कि विद्याध्ययन में ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन जोकि गृहस्थ आश्रम के अन्तरर्गत ही है। क्योंकि एक वेद पढ़ने में १२ वर्ष और चारों वेदों के पठन-पाठन में ४८ वर्ष लगते हैं। तथा बाल्यकाल में १२ वर्ष के बाद ही वेद पढ़ने की आज्ञा है। अतः चारों वेदों का अध्ययन समाप्त होने पर विद्यार्थी की आयु ६० वर्ष की होती है।और ६० वर्ष के तुरन्त ही बाद वान-प्रस्थ करने की आज्ञा है। जो इस प्रकार शास्त्रोक्त विधि से ब्रह्मचर्य का पालन अथवा मृत्यु पर्यन्त ही ब्रह्मचारी रहता है, वास्तव में वही नेष्टिक ब्रह्म-चारी आचार्य कहलाने का अधिकारी है। अन्यथा तो कोरी पण्डिताई ही होगी।

(इसी प्रकार शास्त्रों में चार प्रकार के ब्रह्मचारी माने गये हैं। जिनमें मुख्य है, वृहन ब्रह्मचारी--तथा मैथुन आठ प्रकार के बतलाये हैं। किन्तु वास्तव में वह सब गौण ही हैं। कारण कि ब्रह्मचर्य से हमारा तात्पर्य न केवल नर नारी के संयोग समागम या अन्य किसी शास्त्र निहित मैथुन से दूर रहने तक ही सीमित है। हमारी अवस्था ऐसी हो जोकि संकल्प मात्र में भी अपवित्रता हमें स्पर्श न करने का नाम ही वास्तविक अर्थ में ब्रह्मचर्य का पालन करना है। तथा कुछ लोग स्वप्न में अपवित्र होने को दोष मानते हैं। किन्तु वास्तव में यह केवल दोष ही नहीं अपितु बहुत बड़ा हानिकारक भी है। यद्यपि सपने में किसी अन्य आत्मा का आत्मघात अथवा उसे पतित

(शेष पृष्ठ ४९ पर)

नये वर्ष प्रति बाप-दादा की शिक्षायें

ब्र० कु० विश्वकर्मा, झाँसी

शिव भगवानुवाच—

नये वर्ष की नई बधाई बाबा बच्चों को देते हैं।
जो बीता सो बीता अब परिवर्तन करने को कहते हैं॥
परिवर्तन करने को कहते हैं देवी गुण ग्रहण कराते हैं।
अमृत वेले से उठते ही आत्मा का पाठ पढ़ाते हैं॥
देह नहीं तुम हो चेतन आत्मा की याद दिलाते हैं।
विद्यार्थी बन करो पढ़ाई ऐसा बाबा समझाते हैं॥

दिन भर फिर तुम कहीं रहो ट्रस्टी बन पार्ट बजाना।
बाप मिला भगवान तुम्हें इसको मत कभी भुलाना॥
इसको मत कभी भुलाना हरदम साथ में रखना।
बाबा के संग में ही रहकर सभी कार्य तुम करना॥
बेहद के नाटक का चक्कर बुद्धि में सदा चलाना।
पार्टधारी बन करके तुम अपना पार्ट बजाना॥

शरीर निर्वाह के साथ-साथ, आत्मनिर्वाह को नहीं भूलना।
याद की विधि के साथ-साथ ही धन की वृद्धि करना॥
धन की वृद्धि करना, कर्म योगी बन करके रहना।
व्यवहार और परमार्थ का बैलेन्स बनाकर चलना॥
व्यक्ति और वैभव में बच्चे बुद्धि नहीं फंसाना।
अल्प काल के साधन देख साधना नहीं भुलाना॥

इस शरीर को मंदिर खुद को मूर्तिरूप बनाना।
स्वयं मूर्ति के इस मंदिर को ट्रस्टी बन सदा सजाना॥
ट्रस्टीबन सदा सजाना देह सम्बन्धों में बुद्धि न फँसना।
एक बाप के सिवा किसी को दिल में नहीं बिठाना॥
लौकिक सम्बन्ध खत्म हुए मरजीवा सम्बन्ध निभाना।
लौकिक दुनिया में रहते भी कमल सम बन जाना॥

कैसी भी माया आये पर कभी नहीं तुम सर झुकाना।
ज्ञान गदा से मार-मार माया को दूर भगाना॥
माया को दूर भगाना उसका मुँह चूर-चूर कर देना।
अगर कहीं बच जाये तो भट्ठी में डाल जलाना॥
भट्ठी में खूब तपाना आत्मा को प्योर बनाना।
दैवी गुण धारण करके अपना शृंगार कराना॥

कर्म इन्द्रियाँ धोखा देंगी पर धोखा कभी न खाना।
मनसा तूफान के साथ-साथ कर्मों से सदा बचाना॥
कर्म से सदा बचाना संकल्प श्रेष्ठ चलाना।
याद की यात्रा में रहकर, इन्द्रियों को शान्त कराना॥
व्यर्थ संकल्प अगर आयें, बाबा से बातें करना।
बाबा की बातों के द्वारा मन का मार्ग बदलना॥

ब्राह्मण हूं मैं शूद्र नहीं बुद्धि में ख्याल ये रखना।
तन, मन, धन, जो कुछ भी है बाबा का सदा समझना॥
बाबा का सदा समझना, मिसयूज कभी मत करना।
श्रीमत के प्रमाण ही बच्चे सदा यूज तुम करना॥
संगम का यह समय अमूल्य है कौड़ी प्रति नहीं गंवाना।
२१ जन्म की यहाँ कमाई बच्चे तुम खूब कमाना॥

वक्त बचा है कम बच्चे पुरुषार्थ तेज चलाना।
सम्पूर्ण बनने में देखो तुम पीछे मत रह जाना॥
पीछे मत रह जाना, जल्दी-जल्दी दौड़ लगाना।
मंजिल लम्बी है बाकी, धीरे धीरे मत चलना॥
समय से पहले बता रहे हैं दोष न मुझ पर लगाना।
ध्यान नहीं रखा अब भी तो पड़ेगा फिर पछताना॥

(अव्यक्त बाप दादा की मुरली से उदधृत)

गडिंगलजा (कर्नाटक) में जनता बड़े ध्यानपूर्वक आध्यात्मिक प्रवचन सुनते हुए

सेवा समाचार (चित्रों में)

लखनऊ में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता रमाकान्त मिश्रा जी मोमबत्ती जलाकर कर रहें हैं। ब्र० कु० भगवती जी, लक्ष्मी जी, रूपी जी तथा अन्य भाई-बहन खड़े हैं

चित्र सतना सेवा केन्द्र द्वारा मैहर नगर में आयोजित विश्व नव-निर्माण "आध्यात्मिक प्रदर्शनी" के अवसर पर निकाली गई शोभा यात्रा का है जिस का मार्ग प्रदर्शन कर रही हैं ब्र० कु० निर्मला तथा ब्र० कु० सत्यवती

पूना सेवा केन्द्र की इन्चार्ज ब्र० कु० सुन्दरी जी राहुरी में शिव शक्ति दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी उद्घाटन समारोह में प्रवचन करते हुए

आध्यात्मिक सेवा-समाचार

मुजफ्फर नगर में चरित्र-निर्माण आध्यात्मिक मेला

मुजफ्फर नगर—सेवा केन्द्र की ओर से शहर में १३ दिसम्बर से २२ दिसम्बर तक चरित्र निर्माण आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया । १३ दिसम्बर को सायं २ बजे से ४ बजे तक शांति यात्रा निकाली गई जो कि मेले के स्थान से शुरू होकर सारे शहर में से परिक्रमा करती हुई पुनः मेले के ही स्थान पर आकर समाप्त हुई । इस शांति यात्रा में एक तो "सर्व आत्माओं का पिता" तथा दूसरी "लक्ष्मी नारायण सहित स्वर्ग" की दो चेतन झाँकियां बनाई गई थीं । सारे शहर में कई हजार आत्माओं ने शांति यात्रा तथा झांकियों को बड़ी उत्सुकता से देखा । तत्पश्चात् सायं ५-३० बजे मेले का उद्घाटन समारोह ब्र० कु० दीदी मनमोहनीजी द्वारा सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर बहन गायत्री मोदी जी भी उपस्थित थीं । मेले को देखने की लालसा लिए हजारों की संख्या में भाई-बहिन उपस्थित थे । उद्घाटन के बाद जैसे ही प्रवेश द्वार खोला गया, आत्माएं इस प्रकार टूट पड़ीं जैसे कई दिन के भूखे व्यक्ति को बड़ी मुश्किल से भोजन मिला हो । प्रतिदिन हजारों आत्माएं आकर जीवन लाभ लेतीं । साथ-साथ राजयोग शिविरों का भी आयोजन किया गया, जिनसे प्रभु मिलन की प्यासी आत्माओं ने योग का प्रैक्टिकल अभ्यास व अनुभव प्राप्त करके अपने आपको कृत-कृत्य समझा । इस प्रकार यह मेला बहुत ही सफल रहा, जिसने लाखों की तादाद में आत्माओं का उमंग-उल्लास तथा जीवन का सही मार्ग-प्रदर्शन किया ।

इलाहाबाद—सेवा केन्द्र की ओर से २२-११-८१ को सायंकाल ४.३० बजे महिला विद्यापीठ के हाल—"साउथ मलाका" में नारी जागृति सम्मेलन बड़े उत्साहपूर्वक तथा मार्मिक ढंग से आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता उत्तर प्रदेश की संचालिका ब्र० कु० आत्म इन्द्रा जी ने की । इस अवसर पर उपस्थित अतिथि महोदया रामादेवी गुप्ता ने कहा कि 'नारी को हर क्षेत्र में सामने आकर समाज को एक प्रज्वलित प्रतिमा का रूप प्रदान करने में अपना पूर्ण योगदान देना चाहिए ।" इस सम्मेलन के समाचार का प्रसारण अमृत प्रभात (दैनिक) जागरण पत्रिका तथा इलाहाबाद आकाशवाणी द्वारा भी किया ।

ग्रीन पार्क (देहली)—सेवा केन्द्र की ओर से हौजखास के निकट शाहपुर गाँव में एक दिन की शिवदर्शन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे १००० आत्माओं को बाप दादा का संदेश दिया गया । इसके साथ ही त्रिदिवसीय राजयोग शिविर का आयोजन किया गया जिससे कई आत्माओं ने लाभ उठाया ।

निशातगंज (लखनऊ)—सेवा केन्द्र से सुमित्रा बहिन लिखती हैं कि भड़ूपुर बाराबंकी में प्रवचन और प्रदर्शनी द्वारा लगभग ४००० आत्माओं को ईश्वरीय संदेश दिया गया । इसके अतिरिक्त कार्तिक स्नान के मेले में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गयी जिससे अनेक आत्माओं ने लाभ उठाया ।

राजा पार्क (जयपुर)—सेवा केन्द्र की ओर से सेन्ट्रल कोर्ट आफ वर्कर्स एजुकेशन सेंटर पर "औद्योगिक शान्ति" विषय पर प्रवचन व प्रदर्शनी दिखाने का कार्यक्रम रखा गया जिसमें लगभग ४० परिक्षणार्थी

तथा स्टाफ मैम्बर्स ने भाग लिया। इसके बाद ३५ प्रशिक्षणार्थी तथा स्टाफ सदस्य सेवा केन्द्र पर भी आए, जहाँ पर उन्हें राजयोग का महत्व बतलाया गया तथा राजयोग फिल्म भी दिखाई गयी। इसके अतिरिक्त मालवीय नगर में भी औद्योगिक क्षेत्र में एक दिन "औद्योगिक शान्ति" प्रदर्शनी रखी गई जिससे ४०० आत्माओं ने ईश्वरीय संदेश प्राप्त किया।

सतना (म० प्र०)—सेवा केन्द्र द्वारा मेहर नगर की अग्रवाल धर्मशाला में विश्व-नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। "चरित्र निर्माण में राजयोग का महत्व" विषय पर प्रवचन हुआ तथा बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। लगभग १०० आत्माओं ने योग-शिविर भी किया। कई हजार आत्माओं ने प्रदर्शनी से लाभ उठाया। जिनमें से ४०-४५ आत्मायें नियमित रूप से क्लास में आ रही हैं। इसका समाचार स्थानीय समाचार पत्र "गुहार" तथा जबलपुर से प्रकाशित "नवभारत टाइम्स" में भी प्रकाशित किया गया।

अलीगढ़—सेवा केन्द्र से ब्र० कु० सुदेश लिखती हैं कि १६ सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत शहर में ४ आध्यात्मिक प्रदर्शनियों तथा योगशिविरों का आयोजन किया गया, जिनके फलस्वरूप अनेक आत्माओं ने शिव बाबा का सन्देश प्राप्त किया।

पटना—सेवा केन्द्र की ओर से बोरिंग-कैनाल रोड में नए सेवा केन्द्र के उद्घाटन के अवसर पर ७ दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन जिला एवं सत्र न्यायाधीश भ्राता मदन-मोहन प्रसाद जी ने किया। इसके अतिरिक्त बिहार के मुख्यमन्त्री, भ्राताजगन्नाथ मिश्र जी भी संग्राहलय देखने के लिए पधारे तथा संस्था के प्रति अपनी शुभकामनायें प्रकट की।

पुरी—सेवाकेन्द्र से ब्र० कु० निरुपमा लिखती हैं कि बाल दिवस के अवसर पर राजभवन में ३०'×१२' के स्टाल में "शिशु कल्याण महोत्सव" का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन वहाँ के कलैक्टर भ्राता अशोक मिश्रा जी ने किया। समाप्ति समारोह के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उड़ीसा के गवर्नर भ्राता गंगाधर महापात्रा जी उड़ीसा के शिक्षामन्त्री, सोशाल वैलफेयर बोर्ड की चेयरमैन भी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम के द्वारा ८००० भाई-बहिनों ने लाभ उठाया।

होशियारपुर—सेवा केन्द्र की ओर से महावीर स्पीनिंग मिल की कालोनी में आध्यात्मिक प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिससे मिल के आफिसर्स तथा मजदूरों सहित लगभग २००० आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त, रेड-क्रास के मेले में भी एक स्टाल लगाया गया, जिसमें एक ओर चरित्र-निर्माण प्रदर्शनी और दूसरी तरफ सरस्वती, दुर्गा, लक्ष्मी की चेतन झांकियाँ सजाई गई थीं, जिसका उद्घाटन वहां के डी० सी०, भ्राता एच० एल० सिक्का जी ने किया इससे भी अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया। जिनमें से कुछ भाई-बहिन नियमित रूप से क्लास में आते हैं।

हिसार—सेवाकेन्द्र की ओर से शहर के मुख्य स्थानों—"गुरुद्वारा बाबा सुन्दरदास जी "दुर्गाना मंदिर", "हरियाणा डेरी विकास केन्द्र" सब्जी मंडी आदि पर आध्यामिक प्रदर्शनी द्वारा लगभग ६००० आत्माओं का परमपिता शिव को संदेश दिया गया।

अजमेर—सेवा केन्द्र की ओर से पुष्कर मेले में आने वाले यात्रियों की आत्मा को पावन बनाने का साधन ज्ञान स्नान का महत्व बताने के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। अमेरिका, जापान, फ्रांस इटली आदि देशों तथा भारत के कई स्थानों से आए हुए लगभग डेढ़ लाख मनुष्यात्माओं ने इस प्रदर्शनी द्वारा लाभ उठाया।

बम्बई—के गाम देवी सेवा केन्द्र पर महाराष्ट्र विधान सभा के स्पीकर भ्राता शरद धिगे जी विद्यालय की गतिविधियाँ जानने हेतु पधारे जहाँ

पर आप सेवा केन्द्र के भाई-बहिनों से मिले और आध्यात्मिक चित्रों का भी अवलोकन किया। तत्पश्चात् उन्होंने अपने प्रवचन में बताया कि "भारत की ऊंच आध्यात्मिक संस्कृति को हम सब भूल चुके हैं। इस विद्यालय के भाई-बहिनें उस संस्कृति के पुनः निर्माण के लिए जो आध्यात्मिक कार्य कर रहे हैं उनसे मैं बहुत ही प्रभावित हूं।" इसी प्रकार डायरेक्टर आफ योगा टेलीथिरोपी, मगनेटो थिरोपी तथा कासमिक रेंज संस्था, नई दिल्ली के योगाचार्य डा० एच० एल बडोत्रा जी ने आध्यात्मिक चित्रों का अवलोकन करने के पश्चात् बताया कि मुझे यहाँ की दो बातें बहुत अच्छी लगीं—(i) कि आप परमपिता का यथार्थ परिचय दे रहे हैं। (ii) मैं इस बात से सहमत हूं कि कोई मनुष्य दूसरे मनुष्य की सद्गति नहीं कर सकता। गुजराती के लोकप्रिय कवि, लेखक तथा जन्मभूमि प्रवासी बम्बई से प्रकाशित दैनिक समाचार पत्र के एडिटर भ्राता हरेन्द्र देव जी भी बम्बई सेवा केन्द्र पर पधारे।

राजकोट—सेवा केन्द्र की ओर से १६ सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत एक प्रैस कान्फ्रेंस का आयोजन किया गया, जिसमें वहाँ के दैनिक समाचार पत्रों के १५ सम्पादकों ने प्रैस कान्फ्रेंस में भाग लिया, उन्हें विश्व शांति महायज्ञ के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई।

करनाल—सेवाकेन्द्र की ओर से वहाँ के स्थानीय सनातन धर्म मंदिर में दो दिन के लिए राजयोग शांति प्रदायक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। स्थानीय राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के आचार्य ने पूरे स्टाफ सहित प्रदर्शनी देखी।

भावनगर—सेवा केन्द्र की ओर से "उमराला" स्थान पर विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी व योग शिविर के सुन्दर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी रखा गया। विद्यालय की पवित्र प्रवृति की सराहना करते हुए विजय सिंह जी ने कहा कि "आज प्रत्येक व्यक्ति को जो भ्रष्टाचार का व्यसन लगा हुआ है उसे मिटाने में यह संस्था समर्थ है। कार्यकर्त्ता सभी निष्ठावान हैं।" इस प्रदर्शनी को २०० आत्माओं ने देखा तथा १२५ भाई-बहिनों ने योगशिविर तथा ज्ञानशिविर भी किया। इसके अतिरिक्त ब्र० कु० रमेश जी के आगमन पर भावनगर की विभिन्न संस्थाओं—साईंस कालेज, आयुर्वेद कालेज, बी० एड कालेज, तथा पोलिटैक्निक कालेज में कुल ५०० विद्यार्थियों तथा ५० प्रोफेसर्स के समक्ष "शिक्षण और अध्यात्म", "आधुनिक भारत और अध्यात्म", "योग और आयुर्वेद" आदि विषयों पर प्रवचन चले। सणोसरा की "लोक भारती" संस्था तथा जींथरी के टी० बी० हास्पीटल के डाक्टर्स प्रति भी प्रवचन कार्यक्रम हुए जिनसे शिक्षित वर्ग को बहुत अच्छी सर्विस हुई।

हाथरस—सेवा केन्द्र से ब्र० कु० वीना लिखती हैं कि पास के गाँव नगला अणु में प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें आस-पास के ८-९ गाँव से भाई-बहिनों ने आकर काफी संख्या में लाभ उठाया। परिणामस्वरूप यहाँ पर गीता पाठशाला स्थापित हो चुकी है।

भरूच—सेवाकेन्द्र से ब्रह्माकुमारी प्रभा लिखती हैं कि सोलह सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत सरकारी कर्मचारियों के निवास स्थान 'गायत्री नगर' में एक प्रदर्शनी लगायी गई, जिससे लगभग ६०० आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके बाद 'दी नर्मदा स्पीनिंग मिल' में भी इस प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन मिल के सेक्रेटरी ने किया। इससे भी ९०० आत्माओं ने लाभ उठाया।

बड़ौदा—सेवा केन्द्र से राज बहिन तथा निरंजना बहिन लिखती हैं कि २९ नवम्बर को "आनंद का आधार निर्मल व्यक्तित्व" नामक स्नेह मिलन का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि पुलिस कमिश्नर भ्राता आर० सिम्बल जी ने अपने प्रवचन में बताया कि—"योग एक ऐसी चीज है जिसमें चरित्र का उत्थान होता है, यदि कैदियों को जेल में भेजने के बजाये उनको योग सिखाया जाए तो वह

मंगलोर में पुलिस लाईन में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर वहां के एस० पी० भ्राता राजू जी भाषण करते हुए। मंच पर ब्र० कु० बहन मंजू तथा अन्य मुख्य अधिकारी बैठे हैं

मजलिस पार्क (देहली) में ब्र० कु० मनमोहिनी जी द्वारा आध्यात्मिक संग्रहालय का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। चित्र में दीदी जी (नारियल तोड़ती हुई) ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी, ब्र० कु० कमलमणि जी, अमृता बहन, ब्र० कु० राज जी तथा अन्य भाई बहन दिखाई दे रहे हैं

विकासपुरी (नई दिल्ली) में नए सेवा केन्द्र तथा संग्रहालय का उद्घाटन दीदी मनमोहिनी जी द्वारा सम्पन्न हुआ, चित्र में ब्र० कु० सतीश प्रवचन करते हुए

समाज में रहने लायक बन सकेंगे।" इस कार्यक्रम के द्वारा ७५ अधिकारी वर्ग के लोगों ने लाभ उठाया।

नारायणपुरा—(अहमदाबाद)से ब्र. कु. चंद्रिका लिखती हैं एक "राजयोग फिल्म शो उद्घाटन" का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें आध्यात्मिक शिक्षण गृह की छात्राओं ने बहुत सहयोग दिया तथा आध्यामिक रास से एवं कव्वाली प्रस्तुत की।

९ से १५ नवम्बर, १९८१ तक आध्यामिक विषयों पर एक कैम्प आयोजित किया गया जिसमें १४ वर्ष से लेकर २१ वर्ष तक की आयु वाली १५ कुमारियों ने भाग लिया। प्रात: ३-३० बजे से रात्रि १० बजे तक अलौकिक तथा व्यस्त दिनचर्या रखी गई। इस कैम्प का कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा, क्योंकि सभी की रुचि व उमंग-उल्लास बहुत ही सराहनीय था।

विरगंज (नेपाल)—स्थानीय सेवा केन्द्र की ओर से १६ सूत्रीय कार्यक्रम अंतर्गत किए गये। "प्रोजेक्टर शो" द्वारा विभिन्न धार्मिक मन्दिरों जिसमें प्रसिद्ध अहारवीया मठ, याइस्थान मन्दिर और हनुमान मन्दिर आदि-आदि हैं। साथ में विशेष निमंत्रण पर लगभग २००० आत्माओं ने बाप दादा का परिचय प्राप्त किया। विशेष रूप से साधु, सन्त, महात्मा तथा विशिष्ट व्यक्तियों में उद्योग वाणिज्य संघ के डाइरेक्टर, नेपाल यातायात संस्थान के मैनेजर तथा ज्योति क्लब के अध्यक्ष के नाम उल्लेखनीय हैं।

राँची—सेवा केन्द्र की ओर से उपसेवा केन्द्र 'सिमडेगा' के आस-पास आध्यात्मिक प्रदर्शनियों एवं विभिन्न स्थानों पर प्रोजेक्टर द्वारा 'चरित्र-निर्माण' के स्लाईड शो आदि प्रोग्राम बहुत ही धूमधाम से आयोजित किये गये। एक प्रदर्शनी 'बीरू' नामक ग्राम में हुई, जिसका उद्घाटन वहाँ के राजा श्री टिकैत धर्नुजय सिंह देव ने किया। वहाँ दो हजार आत्माओं ने इस प्रदर्शनी को देखा और लाभ उठाया। दूसरी प्रदर्शनी 'कोलेबिरा नामक ग्राम में की गई। वहाँ के मुखिया 'श्री विश्वनाथ साहू' जी ने प्रदर्शनी का उदघाटन किया।

महाराष्ट्र राज्य विधान सभा के अध्यक्ष भ्राता शरद दिघे जी के गामदेवी (बम्बई) सेवा केन्द्र पर पधारने पर ब्र० कु० हंसा जी "गीता में वर्णित युद्ध हिंसक या अहिंसक" चित्र की व्याख्या कर रही हैं

जगदीश चन्द्र हसीजा, सम्पादक एवं आत्म प्रकाश, प्रकाशक, बी ९/१९ कृष्णा नगर, दिल्ली ने चोपड़ा प्रिंटर्स मोहन पार्क, शाहदरा-३२ से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D (DN) 178